Resource: Open Hindi Contemporary Version

License Information

Open Hindi Contemporary Version (Hindi) is based on: Hindi Contemporary Version Bible, Biblica, Inc, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Open Hindi Contemporary Version

2 Chronicles 1:1

1 दावीद के पुत्र शलोमोन ने अपने राज्य पर अपने आपको
सुरक्षा के साथ मजबूत कर लिया. याहवेह उनके परमेश्वर
उनके साथ थे. परमेश्वर ने उन्हें बहुत ही उन्नत किया.

2 शलोमोन ने सारे इस्राएल, सहस्रपतियों और शतपतियों,
न्यायाध्यक्षों, सारे इस्राएल में हर एक अगुओं और पितरों के
प्रधानों को बुलाकर उनसे बातचीत की.

3 शलोमोन और उनके साथ यह सभा उठकर गिबयोन के
ऊंचे स्थान पर गई, क्योंकि याहवेह के सेवक मोशेह द्वारा
बंजर भूमि में बनाया गया परमेश्वर का मिलापवाला तंबू वहीं
था.

4 हां, दावीद किरयथ-यआरीम से परमेश्वर का संदूक उस
विशेष स्थान पर ले आए थे, जो उन्होंने इसी के लिए तैयार
किया था, क्योंकि इसके लिए दावीद ने येरूशलेम में खास तंबू
खड़ा किया था.

5 इस समय वह कांसे की वेदी, जिसको उरी के पुत्र, हूर के
पोते बसलेल ने बनाया था, याहवेह के मिलनवाले तंबू के
सामने ही थी. शलोमोन और सभा ने इससे याहवेह की इच्छा
मालूम की.

6 शलोमोन कांसे की वेदी के पास याहवेह के सामने आए, जो
मिलनवाले तंबू में थी. वहां उस पर उन्होंने एक हज़ार
होमबलियां चढ़ाईं.

7 उस रात परमेश्वर शलोमोन पर प्रकट हुए और उनसे कहा,
“मुझसे जो चाहो, मांग लो.”

8 शलोमोन ने परमेश्वर से कहा, “मेरे पिता दावीद के साथ
आपका व्यवहार बहुत ही करुणा भरा रहा है. अब आपने मुझे
उनके स्थान पर राजा बनाया है.

9 अब, याहवेह परमेश्वर, मेरे पिता दावीद से की गई आपकी
प्रतिज्ञा पूरी हो गई है, क्योंकि आपने मुझे ऐसे अनगिनत लोगों
पर राजा बनाया है, जो भूमि की धूल के समान अनगिनत हैं.

10 अब मुझे बुद्धि और ज्ञान दीजिए कि मैं इस प्रजा के सामने
आना-जाना कर सकूं, क्योंकि किसमें आपकी इतनी बड़ी
प्रजा पर शासन करने की क्षमता है?”

11 परमेश्वर ने शलोमोन को उत्तर दिया, “इसलिये कि यही
तुम्हारे मन इच्छा रही है और तुमने मुझसे न तो धन-संपत्ति, न
वैभव, न कीर्ति न अपने शत्रुओं के प्राण और न अपने लिए लंबी
उम्र की विनती की है, मगर तुमने अपने लिए बुद्धि और ज्ञान
की विनती की है कि तुम मेरी प्रजा का शासन कर सको, जिस
पर मैंने तुम्हें राजा बनाया है.

12 बुद्धि और ज्ञान तुम्हें दिए जा चुके हैं. मैं तुम्हें समृद्धि, धन
संपदा और सम्मान भी दूंगा, इतना, जितना तुम्हारे पहले किसी
भी राजा ने नहीं पाया और न ही तुम्हारे बाद किसी को
मिलेगा.”

13 शलोमोन गिबयोन में याहवेह की उपस्थिति के मिलनवाले
तंबू से येरूशलेम लौट गए. वहां उन्होंने इस्राएल पर शासन
करना शुरू किया.

14 शलोमोन ने अब तक एक हज़ार चार सौ रथ, बारह हज़ार
घुड़सवार इकट्ठा कर लिए थे. इन सबको उसने रथों के लिए
बनाए नगरों और येरूशलेम में राजा के लिए ठहराए गए
स्थानों पर रखवा दिया था.

15 राजा द्वारा येरूशलेम में चांदी और सोना का मूल्य वैसा ही
कर दिया गया था, जैसा पत्थरों का होता है और देवदार की
लकड़ी का ऐसा जैसे तराई के गूलर के पेड़ों का.

16 शलोमोन घोड़ों का आयात मिस्र और कवे से करते थे. राजा
के व्यापारी इन्हें दाम देकर कवे से लाया करते थे.

17 मिस्र से लाए गए एक रथ की कीमत होती थी चांदी के छः
सौ सिक्के. इसी प्रकार राजा के व्यापारी इनका निर्यात सभी
हित्ती और अरामी राजाओं को कर देते थे.

2 Chronicles 2:1

1 अब शलोमोन ने याहवेह की महिमा में मंदिर और अपने
लिए राजमहल बनाने का निश्चय किया.

2 इसके लिए शलोमोन ने सत्तर हज़ार व्यक्ति बोझ उठाने के
लिए और अस्सी हज़ार पर्वतों से पत्थर काटने के लिए चुने. इन
सबके लिए छत्तीस सौ मुखिया चुने गए थे.

3 फिर शलोमोन ने सोर के राजा हीराम को यह संदेश भेजा:
"जब मेरे पिता दावीद अपने लिए भवन बनवा रहे थे, आपने
उनके लिए देवदार के लट्ठे भेजे थे, आपका ऐसा ही व्यवहार
मेरे साथ भी हो.

4 देखिए, याहवेह, अपने परमेश्वर के लिए मैं एक भवन बनवाने
पर हूं. यह उन्हें ही समर्पित होगा, कि इसमें उनके सामने
सुगंधित धूप जलाई जाए, नियमित रूप से भेंट की रोटी रखी
जाए और शब्बाथों, नए चांद के उत्सवों और याहवेह हमारे
परमेश्वर के लिए उत्सवों पर सुबह और शाम को होमबलि
चढ़ाई जाए. इस्राएल देश की ये हमेशा के लिए रीतियां हैं.

5 "जिस भवन को मैं बनवाने पर हूं वह बहुत ही भव्य होगा,
क्योंकि हमारे परमेश्वर सभी देवताओं से महान हैं.

6 ऐसा कौन है, जो उनके लिए भवन बनवा सके, क्योंकि वह
आकाश और ऊंचे स्वर्ग में भी नहीं समाते हैं? सो मैं कौन हूं,
कि उनके सामने धूप जलाने के अलावा किसी और काम के
लिए मैं उनका भवन बनवाऊं?

7 "अब आप कृपा कर मेरे लिए एक ऐसा व्यक्ति भेज दें, जो
सोने, चांदी, कांसे और लोहे का सामान बनाने में और साथ ही
जो बैंगनी लाल और नीले वस्त्रों पर कसीदा काढ़ने में निपुण
हो, और जो नक्काशी के काम में भी निपुण हो, जो मेरे निपुण
शिल्पियों के साथ काम कर सके, जो यहां यहूदिया और
येरूशलेम में हैं, जिन्हें मेरे पिता दावीद ने चुना है.

8 "कृपया मेरे लिए लबानोन से देवदार, सनोवर और चन्दन के
लट्ठे भी भेजने का इंतजाम करें. क्योंकि मुझे मालूम है कि
आपके सेवक लबानोन की लकड़ी काटने में निपुण हैं. मैं यह
विश्वास दिलाना चाहता हूं कि इसके लिए मेरे सेवक आपके
सेवकों के साथ मिलकर काम करेंगे,

9 जिससे कि मेरे लिए भारी मात्रा में लकड़ी तैयार हो जाए, उस
भवन के लिए, जिसको मैं बनवाने पर हूं, जो भव्य और अद्भुत
होगा.

10 अब यह याद रखिए: मैं आपके सेवकों के लिए, जो लकड़ी
को काटेंगे, मैं उनके लिए 3,200 मेट्रिक टन गेहूं, 2,700
मेट्रिक टन जौ, 4,40,000 लीटर अंगूर का रस और
4,40,000 लीटर तेल दूंगा."

11 सोर के राजा हीराम ने शलोमोन को एक पत्र के द्वारा उत्तर
दिया, "याहवेह ने तुम्हें अपनी प्रजा पर राजा इसलिये बनाया
है कि उन्हें अपनी प्रजा से प्रेम है."

12 हीराम ने आगे यह भी कहा: "याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर
महान हैं, उन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया है! उन्हीं ने राजा
दावीद को एक बुद्धिमान पुत्र दिया है, उन्होंने उसे विवेक और
समझ से भर दिया है. वही है जो याहवेह के लिए भवन और
अपने लिए एक राजमहल को बनवाएगा.

13 "अब मैं हुराम-आबी नामक एक निपुण व्यक्ति को भेज रहा
हूं,

14 वह दान की वंशज स्त्री और सोर देश के व्यक्ति का पुत्र है.
उसे सोना, चांदी, कांसे, लोहे, पत्थरों, लकड़ी और नीले, लाल
और बैंगनी वस्त्रों के काम का उत्तम अनुभव है. वह नक्काशी
का काम भी जानता है. वह किसी भी नक्शे को देखकर काम
करने में माहिर है. इसलिये वह आपके कुशल शिल्पियों के
साथ अच्छे से काम कर सकेगा और इसके अलावा उनके
साथ भी, जो मेरे स्वामी, आपके पिता दावीद के साथ काम कर
चुके हैं.

15 "इसलिये अब मेरे स्वामी, अपने ही कहने के अनुसार अपने सेवकों के लिए गेहूं, जौ तेल और अंगूरों का रस भेज दीजिए.

16 हम लबानोन से आप जैसी चाहें वैसी लकड़ी आपके लिए काट देंगे और हम इन्हें लट्ठों के बेड़े पर समुद्र के रास्ते से योप्पा को भेज देंगे, कि आप वहां से इन्हें येरूशलेम ले जा सकें."

17 शलोमोन ने इस्राएल राष्ट्र में बसे सभी विदेशियों की गिनती की, जैसी गिनती उनके पिता दावीद ने की थी. तब राज्य में 1,53,600 विदेशी पाए गए.

18 शलोमोन ने उनमें से सत्तर हज़ार को बोझा ढोने और अस्सी हज़ार को पहाड़ों से पत्थर काटने और छत्तीस सौ को सारे कामों पर मुखिया बना दिया, कि काम बिना रुके चलता रहे.

2 Chronicles 3:1

1 यह सब होने पर शलोमोन ने येरूशलेम में मोरियाह पर्वत पर याहवेह के भवन को बनवाना शुरू किया. यह वही जगह थी जहां याहवेह उनके पिता दावीद पर यबूसी औरनन के खलिहान में प्रकट हुए थे, जो दावीद ने इस भवन के लिए ठहराई थी.

2 शलोमोन ने अपने शासन के चौथे साल के दूसरे महीने के दूसरे दिन भवन का काम शुरू किया.

3 शलोमोन द्वारा बनवाए गए परमेश्वर के भवन के माप इस प्रकार है: पुरानी माप के अनुसार भवन की लंबाई सत्ताईस मीटर और चौड़ाई नौ मीटर.

4 भवन के सामने का ओसारा उतना ही लंबा था जितनी उसकी चौड़ाई थी और उसकी ऊंचाई चौवन मीटर थी. शलोमोन ने इसके अंदर के भाग को शुद्ध सोने से मढ़ दिया.

5 फिर शलोमोन ने मुख्य कमरे को देवदार लकड़ी से मढ़ कर उस पर शुद्ध सोने की परत मढ़ दी और इस पर खजूर वृक्ष और बेड़ियों की आकृति उकेर दी.

6 उन्होंने पूरे भवन को कीमती पत्थर जड़ कर सजाया. यहां इस्तेमाल किया गया सोना परवाइम नामक स्थान से लाया गया सोना था.

7 शलोमोन ने भवन को सोने से मढ़ दिया—छत के धरनियों, डेवढ़ियों, दीवारों और द्वारों को. दीवारों पर उन्होंने करूब उकेर दिए.

8 इसके बाद उन्होंने परम पवित्र स्थान के लिए एक कमरा बनाया. इस कमरे की लंबाई इसकी चौड़ाई के बराबर, नौ मीटर थी. उन्होंने इस कमरे को चोखे सोने से मढ़ दिया, जिसका माप था बीस हज़ार किलो.

9 कीलों का माप था आधा किलो सोना. उन्होंने ऊपरी कमरों को भी सोने से मढ़ दिया.

10 तब शलोमोन ने परम पवित्र स्थान के कमरे में दो करूब गढ़े और उन्हें सोने से मढ़ दिया.

11 करूबों के फैले हुए पंखों का फैलाव कुल नौ मीटर था. पहले करूब का एक पंख सवा दो मीटर का था, जो कमरे की दीवार को छू रहा था. उसका दूसरा पंख, जो सवा दो मीटर फैला था, दूसरे करूब के पंख को छू रहा था.

12 दूसरे करूब का एक पंख सवा दो मीटर का था, जो कमरे की दीवार को छू रहा था और उसका दूसरा पंख, जो सवा दो मीटर फैला था, पहले करूब के पंख को छू रहा था,

13 इन दोनों करूबों के पंखों का फैलाव नौ मीटर था, वे अपने पांवों पर खड़े हुए मुख्य कमरे की ओर मुख किए हुए थे.

14 शलोमोन ने महीन सन के कपड़े से नीले, बैंगनी और लाल रंग का पर्दा बनाया और उस पर उन्होंने करूबों की आकृति काढ़ दी.

15 शलोमोन ने भवन के दरवाजे पर दो खंभों को बनवाया, हर एक की ऊंचाई पन्द्रह मीटर, पचहत्तर सेंटीमीटर थी. हर एक के ऊपर जो सिर बनाए गए थे, उनमें से हर एक का विस्तार सवा दो मीटर था.

16 उन्होंने गले के हार के समान सांकलें बनाकर मीनारों के
ऊपरी छोर पर लगा दी फिर सौ अनार बनाकर इन सांकलों
में लगा दिया.

17 उन्होंने मंदिर के सामने खंभे बनाए, एक दक्षिण दिशा में,
दूसरा उत्तर दिशा में. दक्षिण खंभे को उन्होंने याकिन नाम
दिया और उत्तरी खंभे को बोअज़.

2 Chronicles 4:1

1 इसके बाद शलोमोन ने एक कांसे की वेदी बनवाई, इसकी
लंबाई और चैड़ाई एक समान, नौ मीटर थी और इसकी
ऊंचाई थी साढ़े चार मीटर.

2 शलोमोन ने ढली हुई धातु का एक पानी का हौद बनाया, जो
गोल था और उसका व्यास साढ़े चार मीटर और उसकी
ऊंचाई थी सवा दो मीटर इसका कुल घेर था साढ़े तेरह मीटर

3 इसके जल में और इसके चारों ओर बछड़ों की आकृति
बनाई गई थी—पूरे साढ़े चार मीटर में. ये आकृतियां पूरे हौद
को घेरे हुए थी. बछड़ों की आकृतियां दो पंक्तियों में ढाली गई
थी जिससे पूरा हौद एक ही था, बिना जोड़ के.

4 यह हौद बारह बछड़ों पर रखा, गया था; तीन उत्तर दिशा की
ओर मुख किए हुए थे, तीन पश्चिम दिशा की ओर. यह हौद
इन्हीं पर रखा गया था और इन सभी के पिछले पैर अंदर की
ओर थे.

5 हौद की मोटाई लगभग आठ सेंटीमीटर थी, इसकी किनारी
कटोरे की किनारी के समान सोसन फूल के आकार में ढाली
गई थी. इसकी क्षमता थी एक लाख पैंतीस हज़ार लीटर.

6 धोने की प्रक्रिया के लिए उन्होंने दस चिलमचियों को बनाया.
उन्होंने पांच चिलमचियां दायीं ओर और पांच बायीं ओर.
इनका इस्तेमाल होमबलि के लिए प्रयोग की जानेवाली
वस्तुओं को धोना, मगर हौद का प्रयोग पुरोहितों के नहाने के
लिए किया जाता था.

7 तब शलोमोन ने निर्देश के अनुसार दस सोने की दीवटों का
निर्माण किया और उन्हें मंदिर में प्रतिष्ठित कर दिया; पांच
दायीं ओर और पांच बायीं ओर.

8 उन्होंने दस मेजों को बनाकर उन्हें मंदिर में प्रतिष्ठित किया,
पांच दायीं ओर और पांच बायीं ओर. तब उन्होंने सौ सोने के
कटोरों का निर्माण किया.

9 इसके बाद शलोमोन ने पुरोहितों के लिए आंगन बनवाया.
उन्होंने साथ ही एक बहुत बड़ा आंगन और उसके लिए
दरवाजों को भी बनवाया. इन दरवाजों को उन्होंने कांसे से मढ़
दिया.

10 शलोमोन ने हौद को भवन के दक्षिण पूर्व कोने में स्थापित
कर दिया.

11 हूराम-आबी ने चिमचियां, बेलचे और कटोरियां भी बनाईं.
हीराम ने राजा शलोमोन के लिए परमेश्वर के भवन से संबंधित
सारा काम खत्म कर दिया.

12 दो मीनार, इन मीनारों के ऊपर लगाए गए दो गोलाकार
कंगनियां; खंभे के सिरों के गोलाकार भागों के ऊपर लटकाई
गई जाली;

13 दोनों मीनारों के सिरों पर लगाए गए चार सौ अनार (हर
एक के लिए दो-दो सौ अनार; जो खंभों के सिरों पर लगाए गए
थे);

14 उसने कुर्सियां बनवाई और उन पर रखने के लिए
चिलमचियां भी;

15 और वह एक हौद और उसके नीचे स्थापित किए गए वे
बारह बछड़े भी;

16 वे कलश, फावड़े, कांटे और इन सबके साथ इनसे संबंधित
सारी चीज़ें. सारे बर्तन हुराम-आबी ने राजा शलोमोन के
आदेश से याहवेह के भवन के लिए चमकाए गए कांसे के
बनाए थे.

17 राजा ने इनकी ढलाई यरदन घाटी में, जो सुक्कोथ और
ज़ेरेदाह में है, मिट्टी के सांचों में ढाल कर की थी.

18 इस प्रकार शलोमोन ने ये सभी बर्तन बहुत अधिक मात्रा में
बनवाए थे. मात्रा इतनी ज्यादा थी कि कांसे का भार मापना
संभव न रहा.

19 शलोमोन ने परमेश्वर के भवन के लिए ये सभी वस्तुएं भी
बनवाई थी: सोने की वेदी; मेल की रोटी के लिए ज़रूरी मेज़;

20 शुद्ध सोने की दीवटें और उनके ऊपर रखे जाने के दीप,
जिन्हें ठहराई गई रीति से अंदर के मंदिर के सामने जलाया
जाना था;

21 सोने के, हां, विशुद्ध स्वर्ण के फूल दीप और चिमटियां;

22 दीप की बाती काटने की कैंचियां, चिलमचियां, धूप के पात्र,
अग्नि रखने के पात्र शुद्ध सोने के थे. मंदिर के द्वारों के कब्जे,
परम पवित्र स्थान के आन्तरिक द्वारों के कब्जे और मंदिर के
बीच के भाग के दरवाजे भी सोने के ही थे.

2 Chronicles 5:1

1 इस प्रकार याहवेह के भवन का सारा काम, जो शलोमोन ने
शुरू किया था, पूरा हुआ. तब शलोमोन अपने पिता दावीद
द्वारा भेंट की हुई वस्तुएं मंदिर में ले आए. उन्होंने चांदी, सोना
और सारे बर्तन परमेश्वर के भवन के खजाने में इकट्ठा कर
दिए.

2 शलोमोन ने येरूशलेम में इस्राएल के सभी पुरनियों को, गोत्र
प्रमुखों और पूर्वजों के परिवारों के प्रधानों को आमंत्रित किया.
ये सभी राजा शलोमोन के सामने येरूशलेम में इकट्ठे हो गए,
कि याहवेह की वाचा के संदूक को दावीद के नगर अर्थात्
ज़ियोन से लाया जा सके.

3 इस अवसर पर इस्राएल की सारी प्रजा राजा द्वारा दिए गए
न्योते पर उत्सव के लिए इकट्ठा हो गई. यह साल का सातवां
महीना था.

4 इसके लिए इस्राएल के सभी पुरनिए आए और लेवियों ने
संदूक को उठा लिया.

5 वे अपने साथ तंबू में से संदूक, मिलापवाला तंबू और सारे
पवित्र बर्तन लाए थे. ये सब लेवी पुरोहितों द्वारा लाए गए.

6 राजा शलोमोन और इस्राएल की सारी सभा, जो उस समय
उनके साथ वहां संदूक के सामने इकट्ठा हुए थे, इतनी बड़ी
संख्या में भेड़ें और बछड़े बलि कर रहे थे, कि उनकी गिनती
असंभव हो गई.

7 इसके बाद पुरोहितों ने याहवेह की वाचा के संदूक को
लाकर उसके लिए निर्धारित स्थान पर, भवन के भीतरी कमरे
में, परम पवित्र स्थान पर करूबों के नीचे रख दिया.

8 जिस स्थान पर संदूक रखा हुआ था उस स्थान पर करूब
अपने पंख फैलाए हुए थे, इस प्रकार, कि करूबों ने संदूक
और उसके डंडों पर फैला रखा था.

9 ये डंडे इतने लंबे थे, कि संदूक के इन डंडों को भीतरी कमरे
से देखा जा सकता था मगर इसके बाहर से नहीं. आज तक वे
इसी स्थिति में हैं.

10 संदूक में उन दो पटलों के अलावा कुछ न था, जिन्हें होरेब
पर्वत पर मोशेह ने वहां रख दिया था, जहां याहवेह ने इस्राएल
से वाचा बांधी थी, जब वे मिस्र देश से बाहर आए थे.

11 पवित्र स्थल से पुरोहित बाहर आ गए. हर एक दल के
पुरोहित ने अपने आपको शुद्ध किया हुआ था.

12 संपूर्ण लेवी गायकों ने अर्थात् आसफ, हेमान, यदूथून और
उनके पुत्र और संबंधी महीन मलमल के कपड़े पहने हुए झांझ
और तन्तु वाद्यों को लिए हुए वेदी के पूर्व की ओर खड़े हुए थे.
उनके साथ एक सौ बीस पुरोहित तुरही फूंक रहे थे.

13 तुरहीवादकों और गायकों से यह अपेक्षित था कि जब वे
याहवेह की स्तुति और धन्यवाद के गीत गाएं, तब यह गायन
ऊंची आवाज में हो रहा हो और याहवेह की स्तुति में तुरहियां,
झांझ और अन्य वाद्य यंत्र भी शामिल हो गए हों: “वे भले हैं;
उनकी करुणा सदा की है.” तब याहवेह का वह भवन एक
बादल से भर गया,

14 इसके कारण अपनी सेवा पूरी करने के लिए पुरोहित वहां
ठहरे न रह सके, क्योंकि याहवेह के तेज से परमेश्वर का भवन
भर गया था.

2 Chronicles 6:1

2 Chronicles 6:1

1 तब शलोमोन ने यह कहा: “याहवेह ने यह प्रकट किया है कि
वह घने बादल में रहना सही समझते हैं.

2 आपके लिए मैंने एक ऐसा भव्य भवन बनवाया है कि आप
उसमें हमेशा रहें.”

3 यह कहकर राजा ने सारी इस्राएली प्रजा की ओर होकर
उनको आशीर्वाद दिया, इस अवसर पर सारी इस्राएली सभा
खड़ी हुई थी.

4 राजा ने यह कहा: “धन्य हैं याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर!
उन्होंने मेरे पिता दावीद से अपने मुख से कहे गए इस वचन
को अपने हाथों से पूरा कर दिया है

5 ‘जिस दिन मैं अपनी प्रजा इस्राएल को मिस्र देश से बाहर
लाया हूं, उसी दिन से मैंने इस्राएल के सभी गोत्रों में से ऐसे
किसी भी नगर को नहीं चुना, जहां एक ऐसा भवन बनाया जाए
जहां मेरी महिमा का वास हो; वैसे ही मैंने अपनी प्रजा इस्राएल
का प्रधान होने के लिए किसी व्यक्ति को भी नहीं चुना;

6 हां, मैंने येरूशलेम को चुना कि वहां मेरी महिमा ठहरे और
मैंने दावीद को चुना कि वह मेरी प्रजा इस्राएल का राजा हो.’

7 “मेरे पिता दावीद की इच्छा थी कि वह याहवेह, इस्राएल के
परमेश्वर की महिमा के लिए भवन बनवाएं.

8 किंतु याहवेह ने मेरे पिता दावीद से कहा, ‘तुम्हारे मन में मेरे
लिए भवन के निर्माण का आना एक उत्तम विचार है,

9 फिर भी, इस भवन को तुम नहीं, बल्कि वह पुत्र, जो तुमसे
पैदा होगा, मेरी महिमा के लिए भवन बनाएगा.’

10 “आज याहवेह ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की है. क्योंकि अब,
जैसी याहवेह ने प्रतिज्ञा की थी, मैं दावीद मेरे पिता का
उत्तराधिकारी बनकर इस्राएल के राज सिंहासन पर बैठा हूं,
और मैंने याहवेह इस्राएल के परमेश्वर की महिमा के लिए इस
भवन को बनवाया है.

11 मैंने इस भवन में वह संदूक स्थापित कर दिया है, जिसमें
याहवेह की वह वाचा है, जो उन्होंने इस्राएल के वंश से स्थापित
की थी.”

12 इसके बाद शलोमोन सारी इस्राएल की सभा के देखते हाथों
को फैलाकर याहवेह की वेदी के सामने खड़े हो गए.

13 शलोमोन ने सवा दो मीटर लंबा, सवा दो मीटर चौड़ा और
एक मीटर पैंतीस सेंटीमीटर ऊंचा कांसे का एक मंच बनाया
था, जिसे उन्होंने आंगन के बीच में स्थापित कर रखा था. वह
इसी पर जा खड़े हुए, उन्होंने इस्राएल की सारी प्रजा के सामने
इस पर घुटने टेक अपने हाथ स्वर्ग की दिशा में फैला दिए.

14 तब शलोमोन ने विनती की: “याहवेह इस्राएल के परमेश्वर,
आपके तुल्य परमेश्वर न तो कोई ऊपर स्वर्ग में है और न यहां
नीचे धरती पर, जो अपने उन सेवकों पर अपना अपार प्रेम
दिखाते हुए अपनी वाचा को पूर्ण करता है, जिनका जीवन
आपके प्रति पूरी तरह समर्पित है.

15 आपने अपने सेवक, मेरे पिता दावीद को जो वचन दिया था,
उसे पूरा किया है. वस्तुतः आज आपने अपने शब्द को सच्चाई
में बदल दिया है. आपके सेवक दावीद से की गई अपनी वह
प्रतिज्ञा पूरी करें, जो आपने उनसे इन शब्दों में की थी.

16 “तब अब इस्राएल के परमेश्वर, याहवेह, आपके सेवक मेरे
पिता दावीद के लिए अपनी यह प्रतिज्ञा पूरी कीजिए. ‘मेरे
सामने इस्राएल के सिंहासन पर तुम्हारे उत्तराधिकारी की
कोई कमी न होगी, सिर्फ यदि तुम्हारे पुत्र सावधानीपूर्वक मेरे
सामने अपने आचरण के विषय में सच्चे रहें—ठीक जिस
प्रकार तुम्हारा आचरण मेरे सामने सच्चा रहा है.’

17 इसलिये अब, याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर आपकी प्रतिज्ञा
पूरी हो जाए, जो आपने अपने सेवक दावीद से की है.

18 “मगर क्या यह संभव है कि परमेश्वर पृथ्वी पर मनुष्यों के
बीच निवास करें? देखिए, आकाश और ऊंचे स्वर्ग तक
आपको अपने में समा नहीं सकते; तो फिर यह भवन क्या है,
जिसको मैंने बनवाया है?

19 फिर भी अपने सेवक की विनती और प्रार्थना का ध्यान
रखिए. याहवेह, मेरे परमेश्वर, इस दोहाई को, इस

2 Chronicles 6:1

गिड़गिड़ाहट को सुन लीजिए जो आज आपका सेवक आपके सामने प्रस्तुत कर रहा है.

20 कि यह भवन दिन-रात हमेशा आपकी दृष्टि में बना रहे, उस
स्थान पर, जिसके बारे में आपने कहा था कि आप वहां अपनी
महिमा की स्थापना करेंगे, कि आप उस प्रार्थना पर ध्यान दें,
जो आपका सेवक इसकी ओर फिरकर करेगा.

21 अपने सेवक और अपनी प्रजा इस्राएल की विनतियों को
सुन लीजिए जब वे इस स्थान की ओर मुंह कर आपसे करते
हैं, और स्वर्ग, अपने घर से इसे सुनें और जब आप यह सुनें,
आप उन्हें क्षमा प्रदान करें.

22 "यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी के विरुद्ध पाप करता है,
और उसे शपथ लेने के लिए विवश किया जाता है और वह
आकर इस भवन में आपकी वेदी के सामने शपथ लेता है,

23 तब आप स्वर्ग से सुनें, और अपने सेवकों का न्याय करें,
दुराचारी का दंड उसके दुराचार को उसी पर प्रभावी करने के
द्वारा दें और सदाचारी को उसके सदाचार का प्रतिफल देने
के द्वारा.

24 "यदि आपकी प्रजा इस्राएल शत्रुओं द्वारा इसलिये हार जाए,
कि उन्होंने आपके विरुद्ध पाप किया है और तब वे लौटकर
आपकी ओर फिरते हैं, आपके प्रति दोबारा सच्चे होकर इस
भवन में आपके सामने आकर विनती और प्रार्थना करते हैं,

25 तब स्वर्ग से यह सुनकर अपनी प्रजा इस्राएल का पाप क्षमा
कर दीजिए और उन्हें उस देश में लौटा ले आइए, जो आपने
उन्हें और उनके पूर्वजों को दिया है.

26 "जब आप बारिश इसलिये रोक दें कि आपकी प्रजा ने
आपके विरुद्ध पाप किया है और फिर, जब वे इस स्थान की
ओर फिरकर प्रार्थना करें और आपके प्रति सच्चे हो, जब आप
उन्हें सताएं, और वे पाप से फिर जाएं;

27 तब स्वर्ग में अपने सेवकों और अपनी प्रजा इस्राएल की
दोहाई सुनकर उनका पाप क्षमा कर दें. वस्तुतः आप उन्हें उन
अच्छे मार्ग पर चलने की शिक्षा दें. फिर अपनी भूमि पर बारिश
भेजें—उस भूमि पर जिसे आपने उत्तराधिकार के रूप में
अपनी प्रजा को प्रदान किया है.

28 "यदि देश में अकाल आता है, यदि यहां महामारी फैली हुई
हो, यदि यहां उपज में गेरुआ अथवा फफूंदी लगे, यदि यहां
टिड्डियों अथवा टिड्डों का हमला हो जाए, यदि उनके शत्रु उन्हें
उन्हीं के देश में उन्हीं के नगरों में घेर लें, यहां कोई भी
महामारी या रोग का हमला हो,

29 किसी व्यक्ति या आपकी प्रजा इस्राएल के द्वारा उनके दुःख
और पीड़ा की स्थिति में इस भवन की ओर हाथ फैलाकर
कैसी भी प्रार्थना या विनती की जाए,

30 आप अपने घर, स्वर्ग से इसे सुनिए और क्षमा दीजिए और
हर एक को, जिसके मन को आप भली-भांति जानते हैं,
क्योंकि सिर्फ आपके ही सामने मानव का मन उघाड़ा रहता
है, उसके आचरण के अनुसार प्रतिफल दीजिए,

31 कि वे आपके प्रति इस देश में रहते हुए जो आपने उनके
पूर्वजों को प्रदान किया है, आजीवन श्रद्धा बनाए रखें, और
अपने जीवन भर आपकी नीतियों का पालन करते रहें.

32 "इसी प्रकार जब कोई परदेशी, जो आपकी प्रजा इस्राएल
में से नहीं है, आपकी महिमा आपके महाकार्य और आपकी
महाशक्ति के विषय में सुनकर वे यहां ज़रूर आएंगे; तब, जब
वह विदेशी यहां आकर इस भवन की ओर होकर प्रार्थना करे,

33 तब अपने आवास स्वर्ग में सुनकर उन सभी विनतियों को
पूरा करें, जिसकी याचना उस परदेशी ने की है, कि पृथ्वी के
सभी मनुष्यों को आपकी महिमा का ज्ञान हो जाए, उनमें
आपके प्रति भय जाग जाए—जैसा आपकी प्रजा इस्राएल में है
और उन्हें यह अहसास हो जाए कि यह आपकी महिमा में मेरे
द्वारा बनाया गया भवन है.

34 "जब आपकी प्रजा उनके शत्रुओं से युद्ध के लिए आपके
द्वारा भेजी जाए-आप उन्हें चाहे कहीं भी भेजें-वे आपके ही
द्वारा चुने इस नगर और इस भवन की ओर, जिसको मैंने
बनवाया है, मुख करके प्रार्थना करें,

35 तब स्वर्ग में उनकी प्रार्थना और अनुरोध सुनकर उनके पक्ष
में निर्णय करें.

36 "जब वे आपके विरुद्ध पाप करें-वास्तव में तो कोई भी
मनुष्य ऐसा नहीं जिसने पाप किया ही न हो और आप उन पर

क्रोधित हो जाएं और उन्हें किसी शत्रु के अधीन कर दें, कि शत्रु उन्हें बंदी बनाकर किसी दूर या पास के देश में ले जाए;

37 फिर भी यदि वे उस बंदिता के देश में चेत कर पश्चाताप
करें, और अपने बंधुआई के देश में यह कहते हुए दोहाई दें,
'हमने पाप किया है, हमने कुटिलता और दुष्टता भरे काम किए
हैं';

38 यदि वे बंधुआई के उस देश में, जहां उन्हें ले जाया गया है,
सच्चे हृदय और संपूर्ण प्राणों से इस देश की ओर, जिसे आपने
उनके पूर्वजों को दिया है, उस नगर की ओर जिसे आपने चुना
है और इस भवन की ओर, जिसको मैंने आपके लिए बनवाया
है, मुंह करके प्रार्थना करें;

39 तब अपने घर स्वर्ग से उनकी प्रार्थना और विनती सुनिए
और वही होने दीजिए, जो सही है और अपनी प्रजा को, जिसने
आपके विरुद्ध पाप किया है, क्षमा कर दीजिए.

40 "अब, मेरे परमेश्वर, मेरी विनती है कि इस स्थान में की गई
प्रार्थना के प्रति आपकी आंखें खुली और आपके कान सचेत
बने रहें.

41 "इसलिये अब, याहवेह परमेश्वर, खुद आप और आपकी
शक्ति संदूक, अपने विश्राम स्थल में आएं. याहवेह परमेश्वर,
आपके पुरोहित उद्धार को कपड़ों के समान धारण करें.
आपके श्रद्धालु उसी में आनंद लें, जो सही है.

42 याहवेह परमेश्वर अपने अभिषिक्त की प्रार्थना अनसुनी न
कीजिए. अपने सेवक दावीद के प्रति अपने अपार प्रेम को याद
रखिए."

2 Chronicles 7:1

1 शलोमोन की प्रार्थना खत्म होते ही स्वर्ग से आग बरसी और
उसने होमबलि और बलियों को भस्म कर दिया और याहवेह
के तेज से भवन भर गया.

2 याहवेह के तेज से याहवेह के भवन के भरने के कारण
याहवेह के भवन में पुरोहितों का रहना मुश्किल हो गया.

3 आग गिरने और भवन पर याहवेह के तेज को देख इस्राएल
वंशज भूमि की ओर मुख कर ज़मीन पर ही झुक गए और यह
कहते हुए याहवेह की वंदना की, उनकी स्तुति की, "याहवेह
भले हैं; उनकी करुणा सदा की है."

4 तब राजा और सारी इस्राएली प्रजा ने उनके साथ याहवेह के
सामने बलि चढ़ाई.

5 राजा शलोमोन ने 22,000 बछड़े और 1,20,000 भेड़ें
चढ़ाईं. इस प्रकार राजा और सारी प्रजा ने परमेश्वर के भवन
को समर्पित किया.

6 पुरोहित अपनी-अपनी चौकियों पर खड़े थे, लेवी भी याहवेह
की स्तुति के लिए ठहराए गए वाद्य यंत्र लिए हुए खड़े थे, जो
राजा दावीद ने याहवेह की स्तुति के उद्देश्य से बनाए थे, कि
वह इन वाद्य-यंत्रों की धुन पर, "उनकी करुणा सदा की है."
गाएं, जब दूसरी ओर इस्राएल खड़ा हुआ होता था.

7 तब शलोमोन ने याहवेह के भवन के सामने के आंगन के
बीचवाले स्थान को समर्पित किया, क्योंकि उन्होंने होमबलि
और मेल बलि की चर्बी चढ़ाई थी, क्योंकि शलोमोन द्वारा
बनाई कांसे की वेदी होमबलि, अन्नबलि और वसा के लिए
कम पड़ गई थी.

8 इस अवसर पर शलोमोन ने सारे इस्राएल के साथ सात दिन
उत्सव मनाया. यह एक बहुत ही बड़ी सभा थी, जिसमें सदस्य
हामाथ की घाटी से लेकर मिस्र की नदी तक से आए हुए थे.

9 आठवें दिन उन्होंने समापन समारोह मनाया. उन्होंने वेदी के
समर्पण के लिए सात दिन दिए थे और उत्सव समारोह के लिए
और सात दिन.

10 सातवें महीने के तेईसवें दिन शलोमोन ने लोगों को उनके
घर के लिए विदा किया. वे सभी दावीद, शलोमोन और याहवेह
की प्रजा इस्राएल पर उनकी भलाई के लिए आनंद मनाते हुए
हर्षित मन लिए लौट गए.

11 इस प्रकार शलोमोन ने याहवेह के भवन और राजमहल का
काम पूरा किया. याहवेह के भवन और राजमहल के विषय में
जैसा सोचा गया था, वह सफलतापूर्वक पूरा हो गया,

12 यह सब होने के बाद याहवेह रात में शलोमोन पर प्रकट
हुए. शलोमोन को उन्होंने संबोधित करते हुए कहा: “तुम्हारी
प्रार्थना मैंने सुन ली है. मैंने इस स्थान को अपने लिए बलि के
भवन के रूप में रखा है.

13 “जब कभी मैं आकाश को ऐसा रोक दूं, कि बारिश रुक
जाए, या मैं टिड्डियों को आदेश दूं कि वे देश को चट कर जाएं,
या मैं अपनी प्रजा पर महामारी भेज दूं

14 और मेरी प्रजा, जो मेरे नाम से जानी जाती है, अपने आपको
विनम्र बना ले, प्रार्थना करने लगे, मेरी खुशी चाहे और अपने
पाप के स्वभाव से दूर हो जाए, तब मैं स्वर्ग से उनकी सुनूंगा,
उनका पाप क्षमा करूंगा और उनके देश के घाव भर दूंगा.

15 अब से इस स्थान में की गई प्रार्थना के प्रति मेरी आंखें खुली
और कान सचेत रहेंगे.

16 क्योंकि अब मैंने इस भवन को चुनकर इसे पवित्र बना लिया
है कि इस स्थान पर मेरी महिमा हमेशा बनी रहे और मेरी दृष्टि
और मेरा हृदय हमेशा यही लगे रहें.

17 “तुमसे मुझे यह कहना है यदि तुम्हारा व्यवहार तुम्हारे पिता
दावीद के समान रहेगा, हां, यदि तुम वह सब करोगे, जिसका
मैंने तुम्हें आदेश दिया है और यदि तुम मेरी व्यवस्था और
विधियों का पालन करते रहोगे,

18 तब मैं तुम्हारे राज सिंहासन को स्थिर करूंगा; जैसा कि मैंने
तुम्हारे पिता दावीद के साथ यह वाचा भी बांधी थी, ‘इस्राएल
पर शासन के लिए तुम्हें कभी किसी उत्तराधिकारी का अभाव
न होगा.’

19 “मगर यदि तुम मुझसे दूर होकर मेरे उन नियमों और
आदेशों को त्याग दोगे, जो मैंने तुम्हारे सामने रखे हैं और दूसरे
देवताओं की सेवा और आराधना करने लगो,

20 तब मैं तुम्हें अपने उस देश से, जो मैंने तुम्हें दिया है, निकाल
दूंगा और इस भवन को जिसे मैंने अपनी महिमा के लिए पवित्र
किया है, अपनी दृष्टि से दूर कर दूंगा और इसे सभी लोगों के
सामने उपमा देने और मज़ाक का विषय बना छोड़ूंगा.

21 यह भवन खंडहरों का ढेर होकर रह जाएगा. तब हर एक
व्यक्ति, जो उनके पास से होकर जाएगा चकित हो सांस ऊपर
खींच यह कह उठेगा, ‘क्यों उन्होंने याहवेह अपने परमेश्वर को
भुला दिया था?’

22 तब उन्हें बताया जाएगा, ‘याहवेह ने उनके पूर्वजों को मिस्र
देश से बाहर निकाल लाया था. अब उन्होंने अन्य देवताओं का
अनुसरण करने का निश्चय किया. उन्होंने उन देवताओं की
सेवा और पूजा करनी आरंभ की. यही कारण है याहवेह ने उन
पर यह सारी घोर विपत्ति डाल दी है.’ ”

2 Chronicles 8:1

1 इस घटना के बाद बीस साल खत्म होते-होते, जब शलोमोन
याहवेह का भवन और खुद अपने लिए राजमहल बनवा चुके,

2 उन्होंने हीराम से मिले नगरों को भी बनवाया और वहां
उन्होंने इस्राएल के वंशजों को बसा दिया.

3 तब शलोमोन ने जाकर हामाथ-ज़ोबाह को अपने अधीन कर
लिया.

4 शलोमोन ने बंजर भूमि में तादमोर का और हामाथ क्षेत्र में
भंडार नगरों को बनवाया.

5 इनके अलावा उन्होंने ऊंचे बेथ-होरोन और निचले बेथ-
होरोन, को बनवाया. ये गढ़नगर थे, जिनमें शहरपनाह, फाटक
और छड़ें बनाई गई थी.

6 शलोमोन ने बालाथ और दूसरे भण्ड़ार नगरों को भी बनवाया
जहां उनके रथ, घोड़े और घुड़सवार रखे गए थे. इनके अलावा
उन्होंने येरूशलेम, लबानोन और सारे देश में अपनी इच्छा के
अनुसार भवन बनवाए.

7 देश में अब भी कुछ ऐसे लोग रह रहे थे, जो इस्राएल के
वंशज नहीं थे. ये हित्ती, अमोरी परिज्ज़ी, हिव्वी और यबूसी वंश
के लोग थे.

8 वास्तव में ये उन राष्ट्रों के वंशज थे, जिन्हें इस्राएलियों ने नाश
नहीं किया था. तब शलोमोन ने इन सबको बेगार में रख लिया.
ये सब आज तक इसी पद पर काम करते हैं.

9 मगर शलोमोन ने किसी भी इस्राएली को अपने काम के लिए
दास नहीं बनाया. वे सैनिक बनाए जाते थे, उन्हें सैन्य
अधिकारी बनाया जाता था: योद्धा, कप्तान, रथ, हाकिम और
घुड़सवार.

10 राजा शलोमोन ने दो सौ पचास व्यक्तियों को इन सबके
ऊपर हाकिमों के पद पर चुन लिया था.

11 इसके बाद शलोमोन दावीद के नगर से फ़रोह की पुत्री को
उसी के लिए बनाए गए भवन में ले आए. उनका विचार था,
“मेरी पत्नी का घर इस्राएल के राजा दावीद के भवन में नहीं
होगा, क्योंकि जहां-जहां याहवेह के संदूक का प्रवेश हुआ है,
वह स्थान पवित्र स्थान है.”

12 इसके बाद शलोमोन ने याहवेह की वेदी, जो उन्होंने ओसारे
में बनवाई थी, उस पर याहवेह को होमबलि चढ़ाई,

13 जैसा कि व्यवस्था में मोशेह द्वारा शब्बाथों, नए चांद के
उत्सवों और तीन वार्षिक उत्सवों-खमीररहित रोटी का उत्सव,
सप्ताहों के उत्सव और कुटीरों के उत्सव के लिए आदेश दिया
गया है.

14 जैसा उनके पिता दावीद ने आज्ञा दी थी, शलोमोन ने
पुरोहितों के दलों को उनके लिए ठहराए गए रोज़ के काम
करने के लिए, लेवियों को आराधना करने और पुरोहितों की
सहायता करने के लिए और द्वारपालों के दलों को उनके लिए
ठहराए गए द्वारों पर सेवा करने के लिए चुन लिया. परमेश्वर
के जन दावीद ने यही आदेश दिया था.

15 वे राजा द्वारा पुरोहितों और लेवियों को दिए गए किसी भी
विषय के या भंडार घरों से संबंधित आदेश से ज़रा भी अलग
न हुए.

16 इस प्रकार शलोमोन द्वारा शुरू किया गया सारा काम पूरा
हुआ. उस दिन से शुरू हुआ काम, जब याहवेह के भवन की
नींव रखी गई थी और जिस दिन बनाने का काम पूरा हो गया,
तब याहवेह के भवन का काम पूरा हुआ.

17 तब शलोमोन एदोम देश में सागर तट पर बसे नगर
एज़िओन-गेबेर और एलाथ को गए.

18 राजा हीराम ने बेड़े के साथ अपने सेवक भेज दिए. इनमें
ऐसे सेवक थे, जिन्हें समुद्र का ज्ञान था. इनके साथ शलोमोन
के सेवक भी थे ये सभी ओफीर नगर को गए और वहां से वे
लगभग पन्द्रह हज़ार किलो सोना लाए. उन्होंने यह शलोमोन
को भेंट कर दिया.

2 Chronicles 9:1

1 जब शीबा देश की रानी ने शलोमोन की कीर्ति के विषय में
सुना, वह मुश्किल प्रश्नों के साथ येरूशलेम आई कि शलोमोन
को परखे. वह अपने साथ सेवकों का विशाल दल लेकर आई
थी. उसके साथ के ऊंटों पर मसाले, बहुत मात्रा में सोना और
रत्न थे. जब उसकी भेंट शलोमोन से हुई, उसने शलोमोन के
सामने अपने हृदय के सारे विचार प्रकट कर दिए.

2 शलोमोन ने उनके सभी सवालों के जवाब दिए; ऐसा कोई
भी विषय न था, जो शलोमोन के लिए रहस्य साबित हुआ हो,
जिसकी व्याख्या वह न कर सके.

3 जब शीबा की रानी शलोमोन की बुद्धिमानी को परख
चुकीं—उनके द्वारा बनाया भवन,

4 उनकी मेज़ का भोजन, अधिकारियों की बैठने की व्यवस्था,
उनके सेवकों द्वारा की जा रही सेवा, उनके कपड़े, उनके
दाखमधु परोसने वाले और उनकी वेशभूषा, और वह
सीढ़ीनुमा रास्ता, जिसे वह याहवेह के भवन को जाया करते
थे; देखा, वह हैरान रह गई.

5 उसने राजा से कहा, “आपके विषय में और आपकी बुद्धि के
बारे में अपने देश में मैंने जो कुछ सुन रखा था, वह सच है.

6 मैंने उस सुनी हुई सूचना का विश्वास ही नहीं किया था, जब
तक मैंने यहां आकर यह सब खुद अपनी आंखों से न देख
लिया. सच तो यह है कि जो ख़बर मुझे वहां दी गई थी, वह
आपकी बुद्धिमानी के सामने आधी भी नहीं थी. आप उस
ख़बर से कहीं ज्यादा हैं.

7 कैसे सुखी हैं आपके लोग और कैसे सुखी हैं आपके ये
सेवक, जो सदा आपके सामने रहते हैं और आपकी बुद्धिमानी
की बातें सुनते रहते हैं!

2 Chronicles 9:1

8 धन्य हैं याहवेह, आपके परमेश्वर जिनकी आप में खुशी है
और जिन्होंने आपको अपने सिंहासन पर याहवेह आपके
परमेश्वर के राजा के रूप में बैठाया है. यह इसलिये कि
इस्राएल पर आपके परमेश्वर का प्रेम बना है और उनकी इच्छा
यह है कि उन्हें हमेशा के लिए स्थिर करें. इसी इच्छा से उन्होंने
आपको उनका राजा बनाया है कि आप न्याय और धर्म से
शासन कर सकें.”

9 शीबा की रानी ने राजा को लगभग चार हज़ार किलो सोना,
बहुत मात्रा में मसाले और कीमती रत्न भेंट में दिए. जो मसाले
शीबा की रानी ने राजा शलोमोन को भेंट में दिए थे, वैसे मसाले
इसके पहले कभी देखे नहीं गए थे.

10 (इसके अलावा हीराम के सेवक और शलोमोन के सेवक,
जो ओफीर से लाए थे, अपने साथ इसके अलावा चन्दन की
लकड़ी और कीमती रत्न भी लाए थे.

11 चन्दन की लकड़ी से राजा ने याहवेह के भवन और
राजमहल के चबूतरे बनवाए और इन्हीं से राजा ने गायकों के
गाने के लिए वीणाएं और सारंगी नामक वाद्य-यंत्रों को भी
बनवाया. यहूदिया राज्य में इसके पहले ऐसा कभी देखा न
गया था.)

12 इसी समय राजा शलोमोन ने शीबा की रानी द्वारा बताई गई
उसकी हर एक इच्छा पूरी की, वह सब, जिसकी उसने विनती
की. यह सब उस भेंट से बढ़कर था, जो उसने राजा शलोमोन
को दी थी. तब वह अपने सेवकों के साथ अपने देश को लौट
गई.

13 शलोमोन को हर साल लगभग बाईस हज़ार किलो सोना
मिलता था.

14 वह सब उस सोने और चांदी से अलग था, जो शलोमोन को
व्यवसायियों और व्यापारियों, अरेबिया के राजाओं और देश
के राज्यपालों द्वारा दिया जाता था.

15 राजा शलोमोन ने पीटे हुए सोने की 200 विशाल ढालों को
बनवाया. हर एक ढाल में लगभग सात किलो सोना लगाया
गया था.

16 शलोमोन ने पीटे हुए सोने से 300 ढालों को भी बनवाया.
हर एक ढाल में लगभग साढ़े तीन किलो सोना लगाया गया था.
इन सभी को राजा ने लबानोन के बंजर भूमि के भवन में रखाव
दिया.

17 राजा ने हाथी-दांत का एक सिंहासन भी बनवाया और उसे
शुद्ध सोने से मढ़ दिया.

18 इस सिंहासन की छः सीढ़ियां थी और सोने की बनी पैर
रखने की चौकी, जो सिंहासन ही से जुड़ी थी. सिंहासन के दोनों
ओर दो हत्थे थे और उन्हीं से लगकर दोनों ओर खड़े हुए शेर
गढ़े गए थे.

19 हर एक सीढ़ी के दोनों ओर खड़े हुए शेर गढ़े गए थे, कुल
मिलाकर बारह शेर थे. इसके समान सिंहासन और किसी
राज्य में नहीं बनवाया गया था.

20 राजा शलोमोन के पीने के सारे बर्तन सोने के थे. लबानोन
वन भवन में इस्तेमाल किए जानेवाले बर्तन शुद्ध सोने के थे.
चांदी कहीं भी इस्तेमाल नहीं हुई थी क्योंकि शलोमोन के
शासनकाल में चांदी की कोई कीमत ही न थी.

21 राजा शलोमोन का तरशीश के सागर में राजा हीराम के
साथ जहाजों का एक समूह था. हर तीन साल में तरशीश के
जहाज़ वहां सोना, चांदी, हाथी-दांत, बन्दर और मोर लेकर
आते थे.

22 इस प्रकार राजा शलोमोन पृथ्वी के सभी राजाओं से धन
और बुद्धि में बहुत बढ़कर थे.

23 पृथ्वी के सभी राजा परमेश्वर द्वारा शलोमोन के मन में दिए
गए बुद्धि के वचनों को सुनने के लिए उनके सामने आने के
इच्छुक रहते थे.

24 हर साल सभी देखनेवाले अपने साथ चांदी और सोने की
वस्तुएं, कपड़े, हथियार, मसाले, घोड़े और खच्चर भेंट देने के
लिए लाया करते थे.

25 घोड़ों और रथों के लिए शलोमोन की चार हज़ार घुड़शालाएं
थी. उनके बारह हज़ार घुड़सवार थे, जिन्हें उन्होंने रथों के लिए
बनाए गए नगरों में रखा हुआ था. इनमें से कुछ को उन्होंने
अपने पास येरूशलेम में रखा था.

2 Chronicles 10:1

26 शलोमोन का अधिकार फरात नदी से लेकर फिलिस्तीनियों
के देश और मिस्र देश की सीमा तक के सभी राजाओं के
ऊपर था.

27 राजा द्वारा येरूशलेम में चांदी का मूल्य वैसा ही कर दिया
गया था, जैसा पत्थरों का होता है और देवदार की लकड़ी का
ऐसा जैसे तराई के गूलर के पेड़ों का.

28 शलोमोन घोड़ों का आयात मिस्र देश के अलावा दूसरे देशों
से भी करते थे.

29 शलोमोन द्वारा बाकी कामों का ब्यौरा पहले से आखिरी
तक, भविष्यद्वक्ता नाथान की किताब में, शीलोनवासी
अहीयाह की भविष्यवाणी में और दर्शी इद्दो के दर्शनों में, जो
नेबाथ के पुत्र यरोबोअम के संबंध में हैं, दिया गया है.

30 सारे इस्राएल पर शलोमोन ने येरूशलेम में चालीस साल
राज किया.

31 शलोमोन अपने पूर्वजों के साथ हमेशा के लिए सो गए.
उनका अंतिम संस्कार उनके पिता दावीद के नगर में किया
गया. उनके स्थान पर उनका पुत्र रिहोबोयाम राजा बना.

2 Chronicles 10:1

1 रिहोबोयाम शेकेम नगर गया, क्योंकि उसके राजाभिषेक के
उद्देश्य से सारा इस्राएल वहां इकट्ठा हुआ था.

2 जब नेबाथ के पुत्र यरोबोअम ने यह सुना, जो मिस्र देश में रह
रहा था—वह राजा शलोमोन से भागकर यहीं ठहरा हुआ था.

3 इस्राएलियों ने संदेश भेज उसे वहां से बुलवा लिया. जब
यरोबोअम और सारा इस्राएल वहां इकट्ठा हुआ, उन्होंने
रिहोबोयाम से यह विनती की:

4 “आपके पिता ने हमारा जूआ बहुत ही भारी कर दिया था;
अब तो आपके पिता द्वारा कराई गई मेहनत और इस भारी
जूए को हल्का कर दीजिए. हम आपकी सेवा हमेशा करते
रहेंगे.”

5 उसने उन्हें उत्तर दिया, “आप लोग तीन दिन बाद दोबारा मेरे
पास आइए.” तब वे लौट गए.

6 इसी समय राजा रिहोबोयाम ने उन पुरनियों से सलाह ली,
जो उसके पिता शलोमोन के जीवन भर उनके सेवक रहे थे.
उसने पूछा, “मेरे लिए आपकी क्या राय है? मैं इन लोगों को
क्या उत्तर दूं?”

7 उन्होंने उसे उत्तर दिया, “यदि आप इन लोगों के प्रति दयालु
रहेंगे, उन्हें खुश रखते हुए उनसे प्रोत्साहन के शब्द कहेंगे, वे
हमेशा आपकी सेवा करते रहेंगे.”

8 मगर रिहोबोयाम ने पुरनियों की इस सलाह को छोड़ दिया
और जाकर उन युवाओं से सलाह ली, जो उसी के साथ बड़े
हुए थे और जो उसके सेवक थे.

9 उसने उनसे पूछा “इन लोगों के लिए तुम्हारी राय क्या है, जो
लोग मुझसे विनती करने आए थे, ‘आपके पिता द्वारा हम पर
रखा गया जूआ हल्का कर दीजिए’?”

10 उसके साथ साथ पले बढ़े युवाओं ने उसे उत्तर दिया, “जिन
लोगों ने आपसे यह विनती की है, ‘आपके पिता द्वारा हम पर
रखे गए भारी जूए को हल्का कर दीजिए,’ उन्हें यह उत्तर
दीजिए, ‘मेरे हाथ की छोटी उंगली ही मेरे पिता की कमर से
मोटी है!

11 यदि मेरे पिता ने तुम पर भारी जूआ लादा था, तो मैं उसे
और भी अधिक भारी बना दूंगा. मेरे पिता ने तो तुम्हें नियंत्रण
में रखने के लिए कोड़े इस्तेमाल किए थे, मगर मैं इसके लिए
बिच्छू का इस्तेमाल करूंगा.’ ”

12 जब यरोबोअम और सारी भीड़ तीन दिन बाद रिहोबोयाम
के सामने आई, जैसा राजा द्वारा बताया गया था, “मेरे पास तीन
दिन के बाद आना.”

13 पुरनियों की सलाह को ठुकराते हुए राजा ने उनसे बहुत
कड़ी बातें की.

14 राजा ने उन्हें युवाओं के द्वारा दी गई सलाह के अनुसार
उत्तर दिया, “मेरे पिता ने तुम्हारा जूआ भारी किया था, तो मैं
इसे और ज्यादा भारी कर दूंगा. मेरे पिता ने अगर तुम पर कोड़े

2 Chronicles 11:1

चलाए थे, तो अब मैं तुम पर बिच्छू ड़ंक के समान कोड़े बरसाऊंगा."

15 राजा ने लोगों की एक न सुनी क्योंकि यह सारी बातें याहवेह परमेश्वर द्वारा तय की जा चुकी थी, कि वह अपनी कही हुई बात को महिमा दें, जो उन्होंने नेबाथ के पुत्र यरोबोअम से शीलो के भविष्यद्वक्ता अहीयाह द्वारा की थी.

16 जब सारे इस्राएल के सामने यह बात आ गई कि राजा ने उनकी विनती की ओर ध्यान ही नहीं दिया है, उन्होंने राजा से यह कह दिया: "क्या भाग है दावीद में हमारा? क्या मीरास है यिशै पुत्र में हमारी? लौट जाओ अपने-अपने तंबुओं में, इस्राएल! दावीद, तुम अपने ही वंश को संभालते रहो!" तब सारे इस्राएली अपने-अपने घर लौट गए.

17 मगर यहूदिया प्रदेशवासी इस्राएलियों पर रिहोबोयाम का शासन हो गया.

18 राजा रिहोबोयाम ने हदोराम को, जो बेगार श्रमिकों का मुखिया था, इस्राएलियों के पास भेजा. इस्राएलियों ने उसका पथराव किया कि उसकी हत्या हो गई. यह देख राजा रिहोबोयाम ने बिना देर किए रथ जुतवाया और वह येरूशलेम को भाग गया.

19 इस प्रकार इस्राएल राज्य आज तक दावीद के वंश के विरुद्ध विद्रोह की स्थिति में है.

2 Chronicles 11:1

1 येरूशलेम पहुंचते ही रिहोबोयाम ने यहूदाह और बिन्यामिन गोत्र को इकट्ठा किया. ये एक लाख अस्सी हज़ार अच्छे योद्धा इस उद्देश्य से इकट्ठा किए गए थे कि ये इस्राएल से युद्ध करें, कि रिहोबोयाम का राज्य उसके हाथ में दोबारा आ जाए.

2 मगर परमेश्वर के जन शेमायाह को याहवेह का यह संदेश भेजा गया:

3 "शलोमोन के पुत्र, यहूदिया के शासक रिहोबोयाम से और यहूदिया और बिन्यामिन प्रदेश के सभी इस्राएलियों में यह घोषणा कर दो,

4 'यह याहवेह का वचन है तुम अपने ही संबंधियों पर हमला नहीं करोगे. सभी अपने-अपने घर को लौट जाएं; क्योंकि इस स्थिति को मैं ही लाया हूं.' " उन्होंने याहवेह के संदेश के ही अनुसार किया और उन्होंने यरोबोअम पर हमला करने का विचार छोड़ दिया.

5 रिहोबोयाम येरूशलेम में रहता रहा. वह यहूदिया की सुरक्षा के हित में नगरों को बनाता गया.

6 वे ये थे: बेथलेहेम, एथाम, तकोआ,

7 बेथ-त्सूर, सोकोह, अदुल्लाम,

8 गाथ, मारेशाह, ज़ीफ़,

9 अदोराईम, लाकीश, अज़ेका,

10 ज़ोराह, अय्जालोन और हेब्रोन. ये सभी यहूदिया और बिन्यामिन प्रदेश के गढ़नगर थे.

11 उसने गढ़ों को मजबूत बनाया, उनमें अधिकारी ठहराए और इनमें भोजन सामग्री, तेल और अंगूर के रस के भंडार रखवा दिए.

12 उसने हर एक नगर में ढालें और बर्छियां रख दीं और इन नगरों को बहुत ही मजबूत सुरक्षा के नगर बना दिए. इस प्रकार यहूदिया और बिन्यामिन प्रदेश ही उसके अधिकार में रह गए.

13 पूरे इस्राएल के पुरोहित और लेवी वंशज रिहोबोयाम से सहमत थे और वे उसके साथ हो गए.

14 यरोबोअम और उसके पुत्रों द्वारा याहवेह के लिए लेवियों की पौरोहितिक सेवा पर रोक लगाने के कारण वे अपनी चरागाह और संपत्ति को त्याग कर यहूदिया और येरूशलेम आ गए.

15 यरोबोअम ने पूजा स्थलों पर बकरे देवता और बछड़े देवताओं की मूर्तियां प्रतिष्ठित कर दीं और इनके लिए खुद अपने ही चुने हुए व्यक्तियों को पुरोहित बना दिया.

16 इस्राएल के सारे गोत्रों में से वे लोग, जो हृदय से इस्राएल के
परमेश्वर याहवेह के खोजी थे, इन पुरोहितों और लेवियों का
अनुसरण करते हुए अपने पूर्वजों के याहवेह परमेश्वर के लिए
बलि चढ़ाने येरूशलेम चले जाते थे.

17 ये लोग तीन साल तक शलोमोन के पुत्र रिहोबोयाम का
समर्थन करने के द्वारा यहूदिया राज्य को मजबूत बना रहे थे,
क्योंकि वे दावीद और शलोमोन की नीतियों का पालन तीन
साल तक करते रहे.

18 रिहोबोयाम ने दावीद की पोती, येरीमोथ की पुत्री माहलाथ
से विवाह कर लिया. येरीमोथ की माता का नाम अबीहाइल
था, वह यिशै के पुत्र एलियाब की पुत्री थी.

19 माहलाथ से उत्पन्न रिहोबाम के पुत्रों के नाम ये: है येऊश,
शेमारियाह और त्सेहाम.

20 इसके बाद उसने अबशालोम की पुत्री माकाह से विवाह
किया, जिससे पैदा उसके पुत्रों के नाम है अबीयाह, अत्तई,
ज़िज़ा और शेलोमीथ.

21 रिहोबोयाम को अबशालोम की पुत्री माकाह बहुत प्रिय थी-
अपनी दूसरी पत्नियों और उपपत्नियों से अधिक. उसकी
अठारह पत्नियां और साठ उपपत्नियां थी. इनसे उसके
अट्ठाईस पुत्र और साठ पुत्रियां पैदा हुई.

22 रिहोबोयाम ने माकाह के पुत्र अबीयाह को उसके भाइयों
के ऊपर प्रधान और उनका अगुआ बनाया; क्योंकि उसकी
इच्छा थी कि वह उसे राजा बनाए.

23 बड़ी ही बुद्धिमानी से उसने अपने कुछ पुत्रों को यहूदिया
और बिन्यामिन राज्य की सीमा में सारे गढ़ नगरों में अलग-
अलग ज़िम्मेदारियां सौंप दीं और उनके लिए बहुत मात्रा में
भोजन की व्यवस्था भी कर दी. इसके अलावा उसने इन
सबके लिए अनेक पत्नियों का प्रबंध भी कर दिया.

2 Chronicles 12:1

1 जब रिहोबोयाम का शासन मजबूत और स्थिर हो गया, उसने
और उसके साथ सारे इस्राएल ने याहवेह की व्यवस्था को
छोड़ दिया.

2 याहवेह से उनके विश्वासघात के कारण, रिहोबोयाम के
शासनकाल के पांचवें साल में मिस्र के राजा शिशाक ने बारह
सौ रथों और साठ हजार घुड़सवारों को लेकर येरूशलेम पर
हमला किया. उसके साथ आए लिबिया के, सुक्किईम के और
कूश देशवासी मिस्री सैनिक अनगिनत थे.

4 शिशाक ने यहूदिया के गढ़ नगरों को अपने अधीन कर लिया
और वह येरूशलेम आ पहुंचा.

5 तब भविष्यद्वक्ता शेमायाह रिहोबोयाम और यहूदिया के
राजाओं के पास आए, जो इस समय शिशाक के हमले के
कारण येरूशलेम में ही इकट्ठा थे. भविष्यद्वक्ता शेमायाह ने
उनसे कहा, “यह याहवेह का संदेश है ‘तुमने मुझे छोड़ दिया
है इसलिये मैंने भी तुम्हें छोड़कर शिशाक के हाथों में सौंप
दिया है.’ ”

6 यह सुन इस्राएल के शासकों और राजा ने खुद को नम्र बनाते
हुए यह स्वीकार किया, “महान हैं याहवेह.”

7 जब याहवेह ने देखा कि वे सब नम्र हो गए हैं, शेमायाह को
याहवेह का यह संदेश मिला: “उन्होंने अपने आपको नम्र बना
लिया है, इसलिये अब मैं उन्हें नाश होने न दूंगा; मैं उन्हें एक
हद्द तक छुड़ौती दूंगा. अब शिशाक द्वारा मेरा क्रोध येरूशलेम
पर उंडेला न जाएगा.

8 मगर वे शिशाक के दास हो जाएंगे कि वे यह समझ सकें कि
मेरी सेवा और अन्य देशों के राज्यों की सेवा में कितना अंतर
होता है.”

9 तब मिस्र के राजा ने येरूशलेम पर हमला किया और
याहवेह के भवन के और राजमहल के खजाने को अपने साथ
ले गया. वस्तुतः वह अपने साथ सभी कुछ ले गया. यहां तक
कि वे सोने की ढालें भी जिनको शलोमोन ने बनवाया था.

10 तब राजा रिहोबोयाम ने उनकी जगह पर कांसे में गढ़ी गई
ढालें वहां रख दीं. इनकी जवाबदारी रिहोबोयाम ने राजघराने
के पहरेदारों के प्रधान को सौंप दी.

11 तब रीति यह बन गई कि जब-जब राजा याहवेह के भवन
को जाता था, पहरेदार ये ढालें लेकर चलते थे और राजा के

वहां से लौटने पर इन्हें पहरेदारों के कमरों में दोबारा रख दिया जाता था.

12 जब रिहोबोयाम ने अपने आपको विनम्र बना लिया, याहवेह का क्रोध शांत हो गया और उसका सर्वनाश नहीं किया गया. इसी समय यहूदिया की कुछ दशा अच्छी भी थी.

13 रिहोबोयाम ने राजधानी येरूशलेम में स्वयं को पुनः सुदृढ़ किया, और यहूदिया प्रदेश पर शासन करने लगा. जब रिहोबोयाम ने शासन शुरू किया, उसकी उम्र एकतालीस साल की थी. येरूशलेम में उसने सत्रह साल शासन किया. येरूशलेम वह नगर है, जिसे याहवेह ने सारे इस्राएल में से इसलिये चुना, कि वह इसमें अपनी महिमा करें. उसकी माता का नाम था नामाह जो अम्मोनी थी.

14 जीवन में वह वही सब करता रहा, जो गलत है, क्योंकि उसने अपना हृदय याहवेह की इच्छा पता करने की ओर लगाया ही नहीं.

15 शुरू से अंत तक रिहोबोयाम के कामों का ब्यौरा भविष्यद्वक्ता शेमायाह और दर्शी इद्दो की पुस्तकों में उपलब्ध है, जो वंशावली का हिसाब भी रखते थे. रिहोबोयाम और यरोबोअम हमेशा आपस में युद्ध में ही लगे रहें.

16 रिहोबोयाम अपने पूर्वजों के साथ हमेशा के लिए सो गया. उसका अंतिम संस्कार दावीद के नगर में किया गया; उनका पुत्र अबीयाह उसके स्थान पर राजा हो गया.

2 Chronicles 13:1

1 यरोबोअम के शासनकाल के अठारहवें साल में अबीयाह ने यहूदिया के शासन की बागडोर अपने हाथों में ली.

2 उसने येरूशलेम में तीन साल शासन किया. उसकी माता का नाम मीकायाह था. वह गिबियाह के उरीएल की पुत्री थी. अबीयाह और यरोबोअम के बीच युद्ध छिड़ गया.

3 अबीयाह ने चार लाख सबसे अच्छे वीर योद्धाओं को लेकर युद्ध शुरू किया, जबकि यरोबोअम आठ लाख वीर सैनिक लेकर युद्ध-भूमि में उतरा.

4 तब अबीयाह ने एफ्राईम प्रदेश के सेमाराइम पहाड़ पर मोर्चा बांधा और यरोबोअम से कहा, "यरोबोअम और सारे इस्राएल ध्यान से मेरी बातें सुनो!

5 क्या तुम्हें यह मालूम नहीं कि याहवेह इस्राएल के परमेश्वर ने नमक की वाचा के द्वारा दावीद और उनके पुत्रों को इस्राएल पर हमेशा के लिए शासन दिया है?

6 यह होने पर भी नेबाथ के पुत्र यरोबोअम ने अपने स्वामी दावीद के पुत्र शलोमोन के विरुद्ध उठकर विद्रोह किया.

7 उसने अपने पास निकम्मे लोग इकट्ठा कर लिए, ऐसे नीच लोग, जो शलोमोन के पुत्र रिहोबोयाम पर प्रबल हो गए, जो कि बहुत बालक और अल्हड़ मन का था, बुरा बोलते थे. वह इनके सामने ठहर न सका.

8 "अब तुम लोग दावीद के पुत्रों के हाथों में सौंपे गए याहवेह के शासन का विरोध करने पर उतारू हो, सिर्फ इसलिये कि तुम गिनती में अधिक हो और तुम्हारे पास देवताओं के नाम पर सोने के ढाले हुए वे बछड़े हैं जिनको यरोबोअम ने तुम्हारे लिए इसलिये बनाया है कि तुम इन्हें देवता मान लो.

9 क्या यह सच नहीं कि तुम लोगों ने अहरोन के पुत्रों को जो याहवेह के पुरोहित हैं और लेवियों को हटाकर दूसरे राष्ट्रों के समान अपने लिए पुरोहित चुनकर रखे हैं? तुम तो किसी भी ऐसे व्यक्ति को पुरोहित बना देते हो, जो अपने साथ बछड़े और सात मेढ़े लेकर तुमसे उन देवताओं के पुरोहित बनने की विनती करता है, जो हकीकत में देवता ही नहीं हैं.

10 "मगर हमारे लिए तो याहवेह ही हमारे परमेश्वर हैं. हमने उनका त्याग नहीं किया है. अहरोन के वंशज ही याहवेह की सेवा पुरोहितों के रूप में कर रहे हैं. लेवी भी अपना ठहराया हुआ काम करने में लगे हैं.

11 हर सुबह और शाम वे याहवेह को होमबलि और सुगंधधूप चढ़ाते हैं, स्वच्छ की गई मेज़ पर भेंट की रोटी रखी जाती है और हर शाम सोने के दीवट और उनके दीप शाम को जलाए जाने के लिए तैयार रखे जाते हैं, क्योंकि हम याहवेह, हमारे परमेश्वर के आदेश का पालन करते हैं. मगर तुम लोगों ने याहवेह का त्याग कर दिया है.

2 Chronicles 14:1

12 अब यह देख लो, हमारे अगुए होकर याहवेह हमारे साथ हैं. यहां उनके पुरोहित संकेत तुरहियों के साथ तुम्हारे विरुद्ध फूंकने के लिए तैयार हैं. इस्राएल के वंशजों ने कहा कि अपने पूर्वजों के परमेश्वर याहवेह से युद्ध मत करो क्योंकि तुम इसमें सफलता नहीं पा सकोगे."

13 मगर यरोबोअम ने यहूदिया की सेना के पीछे एक घात करनेवाली टुकड़ी लगा रखी थी कि वे पीछे से हमला करें. फलस्वरूप यहूदिया की सेना के सामने इस्राएली सेना थी और पीछे घात करनेवाली टुकड़ी.

14 जब यहूदिया ने मुड़कर देखा तो पाया कि उन पर दोनों ही ओर से हमला किया जा रहा था, सामने से भी और पीछे से भी. तब उन्होंने याहवेह की दोहाई दी. पुरोहितों ने तुरही फूंकी.

15 जब यहूदिया के सैनिकों ने जय जयकार किया, परमेश्वर ने यरोबोअम और पूरी इस्राएली सेना को अबीयाह और यहूदिया के सामने हरा दिया.

16 जब इस्राएली सेना यहूदिया की सेना को पीठ दिखाकर भागने लगी, परमेश्वर ने उन्हें यहूदिया के अधीन कर दिया.

17 अबीयाह और उसकी सेना ने घोर नरसंहार के साथ उन्हें हरा दिया. फलस्वरूप इस्राएल के पांच लाख वीर योद्धा मारे गए.

18 इस प्रकार उस दिन इस्राएल के वंशज हार गए. यहूदाह के वंशज इसलिये जीते, कि उन्होंने अपने पूर्वजों के परमेश्वर, याहवेह पर भरोसा किया था.

19 अबीयाह ने यरोबोअम का पीछा किया और उससे अनेक नगर लेकर अपने अधिकार में कर लिए, बेथेल और उसके गांव, येशानाह और उसके गांव और एफ्रोन और उसके गांव.

20 अबीयाह के जीवनकाल में यरोबोअम दोबारा अपनी शक्ति इकट्ठी न कर सका. याहवेह ने उस पर वार किया और उसकी मृत्यु हो गई.

21 मगर अबीयाह मजबूत होता गया. उसने चौदह स्त्रियों से विवाह कर लिया जिनसे बाईस पुत्र और सोलह पुत्रियां पैदा हुईं.

22 अबीयाह के शासनकाल का घटनाक्रम और उसके कामों और बातों का ब्यौरा भविष्यद्वक्ता इद्दो की पुस्तक में दिया गया है.

2 Chronicles 14:1

1 अबीयाह अपने पूर्वजों के साथ हमेशा के लिए सो गया और उसे उसके पूर्वजों के साथ दावीद के नगर की कब्र में रखा गया. उसके स्थान पर आसा राजा बना. उसके शासनकाल के दस सालों में देश में शांति बनी रही.

2 आसा ने वह किया जो याहवेह उसके परमेश्वर की दृष्टि में सही और उचित है.

3 उसने अन्य जातीय वेदियों और पूजा स्थलों को हटा दिया, पूजा के खंभों को नाश कर दिया, अशेराह के मीनारों को काट गिराया.

4 उसने यहूदिया को आदेश दिया कि वे अपने पूर्वजों के परमेश्वर याहवेह की खोज करें और व्यवस्था और नियमों का पालन करते रहें.

5 यहूदिया के सभी नगरों में से उसके शासनकाल में राज्य में कोई अव्यवस्था देखी न गई.

6 यहूदिया में उसने गढ़ नगरों को बनाया क्योंकि राज्य में शांति थी. इन सालों में किसी ने भी उससे युद्ध नहीं किया, क्योंकि उसे मिली यह शांति याहवेह ने दी थी.

7 यहूदिया से उसने कहा था, "चलो, हम इन नगरों को बनाएं. हम इन्हें दीवारों से घेर देंगे, हम इन पर पहरेदारों की ऊंची चौकियां बनाएं और इनमें द्वार और शालाएं लगा दें. हम याहवेह अपने परमेश्वर की इच्छा के खोजी रहे हैं इसलिये यह देश अब तक हमारा है और याहवेह ने हमें सभी ओर से शांति दी है." इसलिये वे नगर बनाते गए और उन्नति करते गए.

8 यहूदिया राज्य से आसा की सेना में तीन लाख सैनिक थे, ये विशाल ढालों और बर्छियों से लैस थे. दो लाख अस्सी हज़ार सैनिक बिन्यामिन प्रदेश के थे, ये भी ढालों से लैस धनुर्धारी थे. सारे सैनिक वीर योद्धा थे.

9 कूश देशवासी ज़ेराह ने दस लाख सैनिकों और 300 रथों की
सेना लेकर यहूदिया पर हमला कर दिया. वह मारेशाह नामक
स्थान तक आ पहुंचा.

10 तब आसा उसका सामना करने आगे बढ़ा. उसकी सेना
मारेशाह के निकट सापथा घाटी में युद्ध के लिये तैयार हुई.

11 आसा ने याहवेह, अपने परमेश्वर की दोहाई दी और यह
याचना की, "याहवेह, शक्तिशाली और कमजोर के बीच युद्ध
की स्थिति में आपके अलावा और कोई भी नहीं है, जो सहायता
के लिए उपलब्ध हो. इसलिये याहवेह, हमारे परमेश्वर, हमारी
सहायता कीजिए, क्योंकि हमारा भरोसा आप पर है. हम
आपकी महिमा के कारण इस विशाल सेना के विरुद्ध खड़े हैं.
याहवेह, हमारे परमेश्वर आप हैं. ऐसा कभी न हो कि कोई
मनुष्य आप पर प्रबल हो."

12 तब याहवेह ने आसा और यहूदिया की सेना के सामने कूश
देशवासियों को हरा दिया और कूश देशवासी उनके सामने से
भाग गए.

13 आसा और उसकी सेना ने गेरार तक उनका पीछा किया;
इतने अधिक कूश देशवासी मारे गए कि उनका दोबारा
इकट्ठा हो पाना असंभव हो गया. कारण यह था कि वे याहवेह
और उनकी सेना के सामने चूर-चूर हो चुके थे. यहूदी सैनिकों
ने बहुत बड़ी मात्रा में लूट की सामग्री इकट्ठा कर ली.

14 गेरार के निकटवर्ती नगरों को उन्होंने नाश कर दिया. सभी
पर याहवेह का घोर आतंक छा चुका था. यहूदी सेना ने सभी
नगरों को लूट लिया. उनमें लूट का सामान बहुत सारा था.

15 उन्होंने उनके शिविर भी नाश कर दिए, जो पशु पालक थे.
इनसे सेना ने बड़ी संख्या में भेड़ें और ऊंट ले लिए. इसके बाद
वे येरूशलेम लौट गए.

2 Chronicles 15:1

1 परमेश्वर के आत्मा ओदेद के पुत्र अज़रियाह पर उतरे.

2 वह आसा से भेंट करने गए और उससे कहा, "आसा, मेरी
सुनो और यहूदिया और बिन्यामिन भी सुनें: याहवेह उस समय
तक तुम्हारे साथ है, जब तक तुम उनके साथ सच्चे हो. तुम
यदि याहवेह की खोज करोगे, तुम उन्हें पा लोगे. यदि तुम
उनको छोड़ दोगे, वह भी तुम्हें छोड़ देंगे.

3 लंबे समय से इस्राएल बिना किसी सच्चे परमेश्वर, बिना किसी
शिक्षा देनेवाले पुरोहित और बिना किसी व्यवस्था के रहता
आया है.

4 मगर जब उन पर विपत्ति आई वे इस्राएल के परमेश्वर,
याहवेह की ओर मुड़ गए. उन्होंने उनकी खोज की और
याहवेह ने ऐसा होने दिया कि उन्होंने याहवेह को पा भी लिया.

5 ये वे दिन थे, जब न तो जानेवाले सुरक्षित थे, न वे जो नगर में
आ रहे होते थे, क्योंकि सभी राष्ट्रों के निवासियों को बहुत
कोलाहल ने आ घेरा था.

6 एक राष्ट्र दूसरे को कुचल रहा था और एक नगर दूसरे को,
क्योंकि परमेश्वर ही उन्हें अलग-अलग तरह की मुसीबतें देकर
उन्हें घबरा रहे थे.

7 मगर तुम्हारे लिए मेरी सलाह है, स्थिर रहो, साहस न छोड़ो
क्योंकि तुम्हारे द्वारा किए जा रहे काम के लिए उत्तम प्रतिफल
तय है."

8 जब आसा ने ओदेद के पुत्र अज़रियाह की यह बातें और यह
भविष्यवाणी सुनी, उसमें साहस का संचार आया. उसने सारे
यहूदिया और बिन्यामिन एफ्राईम के पहाड़ी इलाके के कई
नगरों में से घृणित मूर्तियां हटा दी. इसके बाद उसने याहवेह
के ओसारे के सामने की याहवेह की वेदी को दोबारा बनाया.

9 तब उसने सारे यहूदिया, बिन्यामिन और इनके अलावा
एफ्राईम, मनश्शेह और शिमओन के रहनेवालों को इकट्ठा
होने को कहा. इस्राएल राज्य से अनेक यहां आकर बस गए
थे, क्योंकि उन्होंने यह देखा, कि याहवेह, उनके परमेश्वर
उनके साथ थे.

10 ये सभी आसा के शासन के पन्द्रहवें साल के तीसरे महीने
में येरूशलेम में इकट्ठा हुए.

11 उस दिन उन्होंने याहवेह के लिए सात सौ बैलों और सात
हज़ार भेड़ों की बलि चढ़ाई. ये सभी पशु वे युद्ध में लूटकर लाए
थे.

12 उन्होंने पूरे हृदय और पूरे प्राणों से अपने पूर्वजों के परमेश्वर
याहवेह को खोजने की वाचा बांधी.

13 वहां यह निर्णय भी लिया गया कि जो कोई याहवेह इस्राएल
के परमेश्वर की खोज न करे, चाहे साधारण हो या विशेष, स्त्री
हो या पुरुष, उसका वध कर दिया जाए.

14 इसके अलावा उन्होंने ऊंची आवाज में तुरहियों और
नरसिंगों के शब्द के साथ यह चिल्लाते हुए याहवेह से यह
शपथ ली थी.

15 यह शपथ सारे यहूदिया के लिए उल्लास का विषय थी,
क्योंकि उन्होंने यह शपथ पूरे हृदय से ली थी और उन्होंने
याहवेह की खोज पूरी सच्चाई में की थी. फलस्वरूप याहवेह
ने खुद को उन्हें प्राप्त होने दिया था. यह होने पर याहवेह ने
उन्हें हर एक ओर से शांति दी.

16 राजा आसा ने अपनी दादी माकाह को राजमाता पद से हटा
दिया, क्योंकि उसने अशेरा की घृणित मूर्ति बनाकर रखी थी.
आसा ने इस मूर्ति को काटकर उसे किद्रोन नदी तट पर राख
बना डाला.

17 मगर पूजा की जगहों को इस्राएल से हटाया नहीं गया था.
फिर भी आसा का मन जीवन भर याहवेह के लिए पूरी तरह
सच्चा बना रहा.

18 उसने परमेश्वर के भवन में वे सारी पवित्र वस्तुएं लाकर रख
दीं, सोना, चांदी और बर्तन, जो उसके पिता और खुद उसके
पास थी.

19 आसा के शासनकाल के पैंतीसवें साल तक कोई युद्ध नहीं
हुआ.

2 Chronicles 16:1

1 आसा के शासनकाल के छत्तीसवें साल में बाशा ने यहूदिया
पर हमला कर दिया और रामाह नगर को बसाया, इसलिये कि
इस्राएल का कोई भी व्यक्ति इस्राएल की सीमा से बाहर न
जाने पाए और न कोई यहूदिया के राजा आसा के पास जा
सके.

2 इसलिये आसा ने याहवेह के भवन के खजाने से और
राजमहल से चांदी और सोना निकालकर दमेशेक में अराम
के राजा बेन-हदद को इस संदेश के साथ भेज दिया.

3 “आपके और मेरे बीच एक वाचा बांधी जाए—ठीक जैसी मेरे
और आपके पिता के बीच थी. मैं आपके लिए सोना और चांदी
भेज रहा हूं. आप इस्राएल के राजा बाशा से अपनी वाचा तोड़
दीजिए, कि वह यहां से अपनी सेनाएं हटा ले.”

4 बेन-हदद राजा आसा के प्रस्ताव से राज़ी हो गया. उसने
इस्राएल राज्य के नगरों के विरुद्ध अपने सैन्य अधिकारी भेज
दिए. इयोन, दान, आबेल-माइम और नफताली क्षेत्र के सभी
भंडार नगर अपने अधिकार में कर लिए.

5 जब बाशा को यह समाचार प्राप्त हुआ, उसने रामाह का गढ़
बनाना रोक कर सारा काम समाप्त कर दिया.

6 राजा आसा ने सारी यहूदी जनता को वहां ले जाकर रामाह
के निर्माण स्थल से सारे पत्थर और लकड़ियां इकट्ठा कर लीं,
जिनसे बाशा बनाने का काम कर रहा था. इस सामान को
लेकर उसने गेबा और मिज़पाह नगरों की गढ़बन्दी कर दी.

7 उसी समय दर्शी हनानी ने यहूदिया के राजा आसा से कहा,
“इसलिये कि आपने याहवेह, अपने परमेश्वर पर भरोसा करने
की बजाय अराम के राजा पर भरोसा किया है, इस्राएल के
राजा की सेना अब आपसे बचकर निकल गई है.

8 क्या कूश देश की और लिबिया की सेना बहुत ही बड़ी और
अनगिनत सेना न थी, जिसमें बड़ी संख्या में रथ और घुड़सवार
थे? फिर भी इसलिये कि उस स्थिति में आपने याहवेह पर
भरोसा किया था, याहवेह ने आपको उन पर विजय दी थी.

9 क्योंकि याहवेह की आंखें पूरी पृथ्वी पर हर जगह घूमती
रहती हैं, कि वह उन्हें मजबूत कर सकें, जिनके मन उनके
प्रति पूरी तरह से सच्चे है. इस स्थिति में आपने मूर्खता कर
डाली है. इसलिये अब से आप निश्चित ही युद्धों में ही लगे
रहेंगे.”

10 यह सुनना था कि आसा दर्शी पर इतना गुस्सा हो गया कि
उसने दर्शी को जेल में डाल दिया; क्योंकि वह दर्शी की इस

बात से बहुत ही गुस्सा हो गया था. इसी समय आसा ने कुछ लोगों को परेशान करना शुरू कर दिया था.

11 आसा द्वारा शुरू से अंत तक किए कामों का ब्यौरा यहूदिया और इस्राएल के राजा की पुस्तक में दिया गया है.

12 उसके शासनकाल के उनचालीसवें साल में आसा के पैरों में कोई रोग लग गया. यह बहुत गंभीर रोग था; फिर भी अपनी रोगी हालत में उसने याहवेह की खोज नहीं कि वह सिर्फ वैद्यों पर आश्रित रहा.

13 तब आसा हमेशा के लिए अपने पूर्वजों से जा मिला. यह उसके शासनकाल का एकतालीसवां साल था.

14 उन्होंने उसे दावीद के नगर में उसी की कब्र में रख दिया. यह कब्र उसने खुद अपने लिए बनवाई थी. उन्होंने आसा को इस शांति की जगह में रख दिया, जिसे उसने सुगंध के व्यापारियों के कौशल के द्वारा तरह-तरह के मसालों से मिलाकर भरकर रखा था. उन्होंने आसा के सम्मान में बड़ी आग जलाई.

2 Chronicles 17:1

1 आसा के स्थान पर उसका पुत्र यहोशाफ़ात शासक बना. उसने इस्राएल राज्य के विरुद्ध अपनी स्थिति मजबूत बना ली.

2 उसने यहूदिया के सभी गढ़ नगरों में सेना की टुकड़िया ठहरा दीं और यहूदिया और एफ्राईम में उसने सैनिकों की छावनियां बना दीं, जो उसके पिता आसा ने अधिकार में कर लिए थे.

3 याहवेह यहोशाफ़ात की ओर थे क्योंकि वह अपने पिता के शुरुआती समय की नीतियों का अनुसरण करता रहा. उसने बाल की पूजा कभी नहीं की,

4 बल्कि वह अपने पिता के परमेश्वर की ही खोज करता रहा, उन्हीं के आदेशों का पालन करता रहा. उसने वह सब कभी न किया, जो इस्राएल राज्य ने किया था.

5 फलस्वरूप याहवेह ने राज्य को उसके हाथ में स्थिर किया. पूरे यहूदिया राज्य की प्रजा राजा को भेंट दिया करती थी. राजा समृद्ध और सम्मान्य होता गया.

6 याहवेह की नीतियों के प्रति वह बहुत ही उत्साही था. उसने यहूदिया राज्य में से सारे ऊंचे स्थानों पर बनी वेदियां और अशेराह देवी के खंभे नाश कर दिए.

7 अपने शासन के तीसरे साल में उसने यहूदिया के नगरों में शिक्षा फैलाने के उद्देश्य से अपने ये अधिकारी भेज दिए: बेन-हाइल, ओबदिया, ज़करयाह, नेथानेल और मीकायाह.

8 इनके साथ लेवी शेमायाह, नेथनियाह, ज़ेबादिया, आसाहेल, शेमिरामोथ, योनातन, अदोनियाह, तोबियाह और तोबादोनियाह. ये सभी लेवी थे. इनके साथ पुरोहित एलीशामा और यहोराम भी भेजे गए थे.

9 इनके साथ याहवेह की व्यवस्था की पुस्तक थी. यहूदिया में उन्होंने इससे शिक्षा दी; उन्होंने सारे यहूदिया राज्य में घूमते हुए प्रजा को शिक्षा प्रदान की.

10 यहूदिया के पास के सभी राष्ट्रों में याहवेह का आतंक फैल चुका था. फलस्वरूप उन्होंने कभी यहोशाफ़ात पर हमला नहीं किया.

11 कुछ फिलिस्तीनी तक यहोशाफ़ात को भेंट और चांदी चढ़ाया करते थे. अरब देश के लोगों ने उसके लिए सात हज़ार, सात सौ मेढ़े और सात हज़ार, सात सौ बकरे भेंट में दिए.

12 तब यहोशाफ़ात दिन पर दिन उन्नत होता चला गया. उसने यहूदिया राज्य में गढ़ और भंडार नगर बनाए.

13 यहूदिया में उसने बड़े भंडार घर बनवाकर रखे थे, साथ ही उसने येरूशलेम में योद्धा और वीर व्यक्ति चुनकर रखे थे.

14 उनके पूर्वजों के परिवारों के अनुसार उनकी गिनती इस प्रकार थी: यहूदिया से एक हज़ार अधिकारी प्रधान: अदनाह तीन हज़ार कुशल सैनिकों का सेनापति था;

15 येहोहानन दो लाख अस्सी हज़ार का सेनापति था;

16 ज़ीकरी का पुत्र अमासियाह अपनी इच्छा से याहवेह की
सेवा कर रहा था. उसने दो लाख कुशल सैनिकों का नेतृत्व
किया.

17 बिन्यामिन क्षेत्र से: एक वीर योद्धा था एलियादा और उसके
साथ थे दो लाख सैनिक, जो धनुष और ढाल से लैस थे;

18 उसके बाद था योज़ाबाद उसके साथ एक लाख अस्सी
हज़ार युद्ध के लिए तैयार सैनिक थे.

19 ये सभी सारे यहूदिया में बने गढ़ नगरों में राजा द्वारा नियुक्त
सैनिकों के अलावा राजा की सेवा में लगे थे.

2 Chronicles 18:1

1 यहोशाफ़ात अब समृद्ध और सम्मान्य हो चुका था. उसने
विवाह के द्वारा अहाब से संबंध बना लिए.

2 इसके कुछ साल बाद यहोशाफ़ात अहाब से भेंट करने
शमरिया गया. यहोशाफ़ात और उसके संगियों के सम्मान में
भोज के लिए अहाब ने अनेक भेड़ों और बछड़ों का वध किया.
इसके द्वारा अहाब ने उन्हें रामोथ-गिलआद पर हमला करने
के लिए उकसाया.

3 इस्राएल के राजा अहाब ने यहूदिया के राजा यहोशाफ़ात से
कहा, “क्या आप मेरे साथ रामोथ-गिलआद पर हमला करने
चलेंगे?” यहोशाफ़ात ने उसे उत्तर दिया, “मैं आपके साथ हूं,
मेरी प्रजा आपकी प्रजा है हम युद्ध में आपका साथ देंगे.”

4 यहोशाफ़ात ने इस्राएल के राजा से कहा, “सबसे पहले
याहवेह की इच्छा मालूम कर लें.”

5 तब इस्राएल के राजा ने भविष्यवक्ताओं को इकट्ठा किया. ये
चार सौ व्यक्ति थे. उसने भविष्यवक्ताओं से प्रश्न किया, “मैं
रामोथ-गिलआद से युद्ध करने जाऊं, या यह विचार छोड़ दूं?”
उन्होंने उत्तर दिया, “आप जाइए, क्योंकि परमेश्वर उसे राजा
के अधीन कर देंगे.”

6 मगर यहोशाफ़ात ने प्रश्न किया, “क्या यहां याहवेह का कोई
भविष्यद्वक्ता नहीं, जिससे हम यह मालूम कर सकें?”

7 इस्राएल के राजा ने यहोशाफ़ात को उत्तर दिया, “एक
व्यक्ति है. ज़रूर, जिससे हम याहवेह की इच्छा मालूम कर
सकते है, मगर मुझे उससे घृणा है, क्योंकि वह मेरे लिए भली
तो नहीं बल्कि बुरी ही भविष्यवाणी करता है, मीकायाह,
इमलाह का पुत्र.” यहोशाफ़ात ने इस पर कहा, “राजा का ऐसा
कहना सही नहीं है.”

8 तब इस्राएल के राजा ने अपने एक अधिकारी को बुलाकर
आदेश दिया, “जल्दी ही इमलाह के पुत्र मीकायाह को ले
आओ.”

9 इस्राएल का राजा और यहूदिया के राजा यहोशाफ़ात
शमरिया के फाटक के सामने खुले खलिहान में राजसी वस्त्रों
में अपने-अपने सिंहासनों पर बैठे थे. उनके सामने सारे
भविष्यद्वक्ता भविष्यवाणी कर रहे थे.

10 तभी केनानाह का पुत्र सीदकियाहू, जिसने अपने लिए लोहे
के सींग बनाए थे, कहने लगा, “यह संदेश याहवेह की ओर से
है: ‘इन सींगों के द्वारा आप अरामियों पर इस रीति से वार
करेंगे, कि वे खत्म हो जाएंगे.’ ”

11 सारे भविष्यद्वक्ता यही भविष्यवाणी कर रहे थे. “रामोथ-
गिलआद पर हमला कीजिए और विजयी हो जाइए. याहवेह
इसे राजा के अधीन कर देंगे.”

12 जो दूत मीकायाह को लेने गया हुआ था, उसने मीकायाह
को आदेश दिया, “सुनो एक साथ सभी भविष्यवक्ताओं का
संदेश राजा के लिए अनुकूल है; ऐसा करो कि तुम्हारी
भविष्यवाणी भी उनमें से एक के समान ही हो. जो कहो, वह
ठीक ही हो.”

13 मगर मीकायाह ने कहा, “जीवित याहवेह की शपथ, मैं
सिर्फ वही कहूंगा, जो मेरे परमेश्वर मुझसे कहेंगे.”

14 जब वह राजा के सामने पहुंचा, राजा ने उससे कहा,
“बताओ, मीकायाह, क्या हम रामोथ-गिलआद से युद्ध करने
जाएं या नहीं?” मीकायाह ने उत्तर दिया, “जाकर जयवंत हो
जाइए! वे आपके अधीन कर दिए जाएंगे.”

2 Chronicles 18:1

15 राजा ने मीकायाह से कहा, “मीकायाह, मुझे तुम्हें कितनी
बार इसकी शपथ दिलानी होगी कि तुम्हें मुझसे याहवेह के
नाम में सच के सिवाय और कुछ भी नहीं कहना है?”

16 तब मीकायाह ने उत्तर दिया, “मैंने सारे इस्राएल को बिन
चरवाहे की भेड़ों के समान पहाड़ों पर तितर-बितर देखा. तभी
याहवेह ने कहा, ‘इनका तो कोई स्वामी ही नहीं है. हर एक को
शांतिपूर्वक अपने-अपने घर लौट जाने दो.’ ”

17 इस्राएल के राजा ने यहोशाफ़ात से कहा, “देखा? मैंने कहा
था न कि यह मेरे लिए भली नहीं बल्कि बुरी भविष्यवाणी ही
करेगा?”

18 यह सुन मीकायाह ने कहा, “बहुत बढ़िया! इसलिये अब
याहवेह का संदेश सुन लीजिए: मैंने याहवेह को सिंहासन पर
बैठे देखा. उनके दाएं और बाएं स्वर्गिक समुदाय खड़े हुए थे.

19 याहवेह ने वहां प्रश्न किया, ‘यहां कौन है, जो इस्राएल के
राजा अहाब को ऐसे लुभाएगा कि वह रामोथ-गिलआद जाए
और वहां जाकर मारा जाए?’ “किसी ने वहां कुछ उत्तर दिया
और किसी ने कुछ और.

20 तब वहां एक आत्मा आकर याहवेह के सामने खड़ी होकर
यह कहने लगी, ‘मैं उसे लुभाऊंगी.’ “याहवेह ने पूछा, ‘कैसे?’

21 “उसने उत्तर दिया, ‘मैं जाकर राजा के सभी
भविष्यवक्ताओं के मुख में झूठी आत्मा बन जाऊंगी.’ “ ‘इस
पर याहवेह ने कहा, तुम्हें इसमें सफल भी होना होगा. जाओ
और यही करो.’

22 “इसलिये देख लीजिए, याहवेह ने इन सारे भविष्यवक्ताओं
के मुंह में छल का एक आत्मा डाल रखा है. आपके लिए
याहवेह ने सर्वनाश की घोषणा कर दी है.”

23 यह सुन केनानाह का पुत्र सीदकियाहू सामने आया और
मीकायाह के गाल पर मारते हुए कहने लगा, “याहवेह का
आत्मा मुझमें से निकलकर तुमसे बातचीत करने किस प्रकार
जा पहुंचा?”

24 मीकायाह ने उसे उत्तर दिया, “तुम यह देख लेना, जब उस
दिन तुम छिपने के लिए भीतर के कमरे में शरण लोगे.”

25 इस्राएल के राजा ने कहा, “पकड़ लो, मीकायाह को! उसे
नगर के हाकिम अमोन और राजकुमार योआश के पास ले
जाओ.

26 उनसे कहना, ‘यह राजा का आदेश है: “इस व्यक्ति को जेल
में डाल दो और इसे उस समय तक ज़रा सा ही भोजन और
पानी देना, जब तक मैं सुरक्षित न लौट आऊं.” ’ ”

27 इस पर मीकायाह ने कहा, “यदि आप सच में सकुशल लौट
आएं, तो यह समझ लीजिए कि याहवेह ने मेरे द्वारा यह सब
प्रकट किया ही नहीं है.” और फिर भीड़ से उसने कहा, “आप
सब भी यह सुन लीजिए!”

28 फिर भी इस्राएल के राजा और यहूदिया के राजा
यहोशाफ़ात ने रामोथ-गिलआद पर हमला कर दिया.

29 इस्राएल के राजा ने यहोशाफ़ात से कहा, “मैं भेष बदलकर
युद्ध-भूमि में जाऊंगा, मगर आप अपनी राजसी वेशभूषा ही
पहने रहिए.” इस्राएल का राजा भेष बदलकर युद्ध-भूमि में
गया.

30 अराम के राजा ने अपनी रथ सेना के प्रधानों को आदेश दे
रखा था, “युद्ध न तो साधारण सैनिकों से करना और न मुख्य
अधिकारियों से सिर्फ इस्राएल के राजा को निशाना बनाना.”

31 जब रथों के सेनापतियों की नज़र यहोशाफ़ात पर पड़ी, वे
समझे वह इस्राएल का राजा है. वे उसी पर वार करने आगे
बढ़े. यहोशाफ़ात चिल्ला उठा. याहवेह ने उसकी सहायता की
और परमेश्वर उन्हें यहोशाफ़ात से दूर ले गए.

32 जब प्रधानों ने देखा कि वह इस्राएल का राजा नहीं था,
उन्होंने उसका पीछा करना छोड़ दिया.

33 किसी एक सैनिक ने बिना विचारे, बिना किसी लक्ष्य के एक
बाण छोड़ दिया. यह बाण वहां जा लगा, जहां इस्राएल के राजा
की कवच और कमरबंध का जोड़ था. तब राजा ने सारथी को
आदेश दिया, “रथ को मोड़कर युद्ध-भूमि से बाहर चलो,
क्योंकि मेरा घाव गहरा है.”

34 उस दिन युद्ध घमासान होता गया. इस्राएल का राजा अपने
रथ में अरामियों को दिखाने के उद्देश्य से शाम तक बाण से
टिका रहा. शाम को उसकी मृत्यु हो गई.

2 Chronicles 19:1

1 यहूदिया का राजा यहोशाफ़ात सुरक्षित येरूशलेम में अपने
घर को पहुंचा किंतु येहू, जो दर्शी हनानी का पुत्र था,

2 उससे भेंट करने गया और राजा यहोशाफ़ात से कहा: क्या
सही है कि आप दुष्टों की सहायता करें और याहवेह के शत्रुओं
से प्रेम करें और याहवेह की ओर से अपने आप पर परमेश्वर
का क्रोध ले आएं?

3 मगर आप में कुछ अच्छी बातें ज़रूर है आपने देश में से
अशेरा के खंभे हटा दिए है और आपने अपना हृदय परमेश्वर
की खोज करने की ओर लगाया है.

4 यहोशाफ़ात येरूशलेम में रहता रहा. उसने प्रजा में घूमना
शुरू कर दिया. बेअरशेबा से लेकर एफ्राईम के पहाड़ी
इलाके तक और उसकी कोशिशों से लोग अपने पूर्वजों के
परमेश्वर याहवेह की ओर हो गए.

5 यहूदिया देश के हर एक नगर में उसने न्यायाध्यक्ष ठहरा
दिए.

6 न्यायाध्यक्षों से उसने कहा था, सोचो की क्या जवाबदारी है
तुम्हारी. क्योंकि जब तुम न्याय करते हो, तुम किसी मनुष्य के
लिए नहीं, याहवेह के लिए न्याय करते हो, वो तुम्हारे साथ बने
रहते हैं.

7 तुममें याहवेह के प्रति श्रद्धा और भय की भावना बनी रहे.
अपने काम के विषय बहुत ही सावधान रहो, क्योंकि कुटिलता
में या पक्षपात में या घूस लेने में याहवेह हमारे परमेश्वर का
कोई काम नहीं हुआ करता.

8 येरूशलेम में भी उसने कुछ लेवियों, पुरोहितों और इस्राएल
के पितरों के गोत्रों के कुछ प्रमुखों को याहवेह की ओर से
येरूशलेम में विवादों के न्याय देने के लिए चुना.

9 राजा ने उन्हें आदेश दिया, तुम्हारी जवाबदारी याहवेह के
प्रति श्रद्धा और भय की भावना में, सच्चाई और पूरे मन से हो.

10 जब कभी प्रजाजनों की ओर से तुम्हारे सामने खून खराबा,
नियम तोड़ने से संबंधित मुकद्दमा लाया जाए, तब तुम उन्हें
निर्देश देना. उन्हें चेतावनी देना है कि वे याहवेह के सामने
दोषी साबित न हों और तुम पर और तुम्हारे भाइयों पर
परमेश्वर का क्रोध न उतरे. इस तरह की प्रक्रिया से तुम दोषी
नहीं पाए जाओगे.

11 “देखो, याहवेह से संबंधित हर एक विषय में प्रमुख पुरोहित
अमरियाह ज़िम्मेदार होगा और राजा से संबंधित विषयों के
लिए इशमाएल का पुत्र ज़ेबादिया, जो यहूदाह गोत्र का
प्रशासक है. लेवी तुम्हारे लिए निर्णयों के लेने का काम पूरा
करेंगे. हिम्मत बांधकर काम में जुट जाओ. भले लोगों के लिए
याहवेह का साथ हमेशा रहेगा.”

2 Chronicles 20:1

1 इसके बाद मोआबी, अम्मोनी और मिऊनी यहोशाफ़ात से
युद्ध के लिए तैयार हुए.

2 यहोशाफ़ात को बताया गया सागर पार एदोम से बड़ी भारी
भीड़ आप पर हमला करने आ रही है. इस समय वे हज़ज़ोन-
तामार जो एन-गेदी में है,

3 यहोशाफ़ात डर गया. उसने अपना ध्यान याहवेह की इच्छा
जानने की ओर लगा दिया. उसने सारे यहूदिया में उपवास की
घोषणा करवा दी.

4 सारे यहूदिया ने इकट्ठा होकर याहवेह से सहायता की विनती
की; यहूदिया के हर एक नगर से लोग याहवेह से सहायता की
कामना करने आ गए.

5 यहोशाफ़ात प्रार्थना करने याहवेह के भवन के नए आंगन में
यहूदिया और येरूशलेम की सभा के सामने खड़े हुए

6 यहोशाफ़ात ने विनती की, “हे याहवेह, हमारे पूर्वजों के
परमेश्वर, आप वह परमेश्वर हैं, जो स्वर्ग में रहते हैं. आपका ही
शासन सारे राष्ट्रों के राज्यों पर भी है. अधिकार और सामर्थ्य
आपके ही हाथों में है. इसके कारण कोई भी आपके सामने
ठहर नहीं सकता.

2 Chronicles 20:1

7 आपने ही इस भूमि के मूल निवासियों को अपनी प्रजा
इस्राएल के सामने से दूर कर दिया और यह भूमि अपने मित्र
अब्राहाम के वंशजों को दे दी.

8 वे इसमें रह रहे हैं. आपकी महिमा में यह कहते हुए एक
पवित्र स्थान को बनाया,

9 'यदि हम पर बुराई, तलवार या न्याय-दंड का वार हो या
महामारी या अकाल आ पड़े, हम इस भवन के सामने, सच में
आपके सामने आ खड़े होंगे; क्योंकि इस भवन में आपकी
महिमा का वास है और अपनी विपत्ति में आपके सामने रोएंगे,
आप हमारी सुनकर हमें छुटकारा प्रदान करेंगे.'

10 "अब देख लीजिए, अम्मोन, मोआब के वंशज और सेईर
पहाड़ के रहनेवाले, जिन पर मिस्र देश से आ रहे इस्राएलियों
को आपने हमला करने से रोक दिया था, वे जिनके पास से
होकर निकल गए मगर उन्हें नाश नहीं किया गया था.

11 देख लीजिए, वे हमें इसका प्रतिफल यह दे रहे हैं, कि वे हमें
आपकी संपत्ति से निकाल रहे हैं, जो आपने हमें मीरास के
रूप में दिया है.

12 हमारे परमेश्वर, क्या आप इसका फैसला न करेंगे? क्योंकि
इस बड़ी भीड़ के सामने, जो हम पर हमला करने आ रही है,
हम तो पूरी तरह शक्तिहीन हैं. हम नहीं जानते इस स्थिति में
हमारा क्या करना सही होगा. हां, हमारी दृष्टि बस आप पर ही
टिकी हुई है."

13 इस समय सारे यहूदिया राज्य, उनकी पत्नियां, शिशु और
बालक भी याहवेह के सामने ठहरे हुए थे.

14 तब इसी सभा में याहवेह के पवित्र आत्मा याहाज़िएल पर
उतरे. याहाज़िएल ज़करयाह का, ज़करयाह बेनाइयाह का,
बेनाइयाह येइएल का और येइएल आसफ के पुत्र लेवी
मत्तनियाह का पुत्र था.

15 याहाज़िएल ने सभा को संबोधित करते हुए कहा: "यहूदिया,
येरूशलेम के सभी निवासियों और महाराज यहोशाफ़ात,
कृपया सुनिए: 'आपके लिए याहवेह का संदेश यह है इस बड़ी
भीड़ को देखकर तुम न तो डरना और न घबराना, क्योंकि यह
युद्ध तुम्हारा नहीं, परमेश्वर का है!

16 कल हम उन पर हमला करेंगे. यह देखना कि वे लोग ज़िज़
के चढ़ाव से हमारी ओर बढ़ेंगे. उनसे तुम्हारा सामना येरुएल
के बंजर भूमि के सामने की ओर की घाटी के अंत में होगा.

17 यह ज़रूरी ही नहीं कि तुम इस युद्ध में जाओ. तुम वहां
सिर्फ स्थिर खड़े हो जाना. तब यहूदिया और येरूशलेम, तुम्हें
वहां खड़े हुए अपने लिए याहवेह द्वारा की गई छुड़ौती के
गवाह होना. आप न तो भयभीत हों न घबराएं. कल आप
उनका सामना करने आगे बढ़िए, क्योंकि याहवेह आपके
साथ हैं.' "

18 यहोशाफ़ात ने यह सुनकर अपना सिर भूमि की ओर झुका
लिया और सारा यहूदिया और येरूशलेमवासी याहवेह के
सामने याहवेह की स्तुति में दंडवत हो गए.

19 कोहाथ और कोराह के वंशज लेवियों ने खड़े होकर बड़ी
ही ऊंची आवाज में याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति
की.

20 बड़े तड़के उठकर वे तकोआ के बंजर भूमि को चले गए.
वहां पहुंचकर यहोशाफ़ात ने खड़े हो उनसे कहा, यहूदिया
और येरूशलेम के वासियों, सुनो! याहवेह, अपने परमेश्वर में
विश्वास रखो तो, तुम बने रहोगे. याहवेह के भविष्यवक्ताओं का
भरोसा करो तो तुम सफल हो जाओगे.

21 जब राजा लोगों से सलाह-मशवरा कर चुका, उसने याहवेह
के स्तुति के लिए गायक चुने. इनका काम था पवित्र वस्त्र
पहनकर सेना के आगे-आगे चलते हुए इन शब्दों में याहवेह
की स्तुति करना, "याहवेह का धन्यवाद करो-वे भले हैं; उनकी
करुणा सदा की है."

22 जब उन्होंने याहवेह की स्तुति में गाना शुरू किया, याहवेह
ने यहूदिया के विरुद्ध उठे अम्मोनिया, मोआबियों और सेईर
पर्वत के वासियों पर वार करने के लिए सैनिक घात लगाकर
बैठा दिए. इस प्रकार शत्रुओं के पैर उखड़ गए.

23 तब अम्मोन और मोआब के वंशज सेईर पर्वत वासियों के
विरुद्ध उठ खड़े हुए. और उनको पूरी तरह से मार दिया. जब
वे सेईरवासियों को मार चुके, वे एक दूसरे ही को मारने लगे.

2 Chronicles 21:1

24 जब यहूदियावासी बंजर भूमि की चौकी पर पहुंचे, जब उन्होंने भीड़ की दिशा में नज़रें की, वहां हर जगह शव ही शव पड़े हुए थे-कोई भी जीवित न बचा था.

25 जब यहोशाफ़ात और उसकी सेना लूट का सामान इकट्ठा करने आई, उन्हें वहां भारी मात्रा में वस्तुएं, वस्त्र और कीमती वस्तुएं मिलीं. ये सभी उन्होंने अपने लिए रख लिया. यह सब मात्रा में इतना ज्यादा था, कि यह सब ले जाना उनके लिए संभव न हुआ. लूट की सामग्री इकट्ठा करते-करते उन्हें तीन दिन लग गए—इतनी ज्यादा थी लूट की सामग्री.

26 चौथे दिन वे बेराकाह की घाटी में इकट्ठा हुए. वहां उन्होंने याहवेह की वंदना की इसलिये उन्होंने उस घाटी का नाम ही बेराकाह की घाटी रख दिया, जो आज तक प्रचलित है.

27 यहूदिया और येरूशलेम का हर एक व्यक्ति यहोशाफ़ात के साथ, जो उनके आगे-आगे चल रहा था, बड़ी ही खुशी के साथ येरूशलेम लौटा, क्योंकि याहवेह ने उन्हें शत्रुओं पर विजय दी थी.

28 किन्नोर, नेबेल और नरसिंगों के साथ येरूशलेम में प्रवेश कर याहवेह के भवन को गए.

29 जब सभी राष्ट्रों ने यह सुना कि इस्राएल के शत्रुओं से युद्ध याहवेह ने किया था, उनमें परमेश्वर का भय छा गया.

30 यहोशाफ़ात के शासन में हर जगह शांति थी, क्योंकि उसके परमेश्वर ने उसे हर तरफ से शांति दी थी.

31 यहोशाफ़ात यहूदिया राज्य पर शासन करता रहा. जब उसने शासन शुरू किया, उसकी उम्र पैंतीस साल की थी. येरूशलेम पर वह पच्चीस साल राज्य करता रहा. उसकी माता का नाम अत्सूबा था, जो शिल्ही की पुत्री थी.

32 वह अपने पिता आसा की नीतियों का पालन करता रहा, इनसे वह कभी दूर न हुआ. वह वही करता रहा, जो याहवेह की दृष्टि में सही था.

33 यह सब होने पर भी ऊंचे स्थानों की वेदियां ढाई नहीं गईं; लोगों के मन उनके पूर्वजों के परमेश्वर पर स्थिर नहीं हुए थे.

34 यहोशाफ़ात के अन्य कामों का ब्यौरा, पहले से लेकर अंतिम तक का, हनानी के पुत्र येहू की पुस्तक इस्राएल के राजा में दिया गया है.

35 इसके कुछ समय बाद यहूदिया के राजा यहोशाफ़ात ने इस्राएल के राजा अहज़्याह से मित्रता कर ली. अहज़्याह दुष्ट व्यक्ति था.

36 इस मैत्री के कारण दोनों में तरशीश से व्यापार के लिए जहाज़ बनाने की सहमति हो गई. जहाज़ एज़िओन-गेबेर में बनता था.

37 इस पर मारेशाहवासी दोदावाहू के पुत्र एलिएज़र ने यहोशाफ़ात के विरोध में यह भविष्यवाणी की, “अहज़्याह से तुम्हारी मित्रता के कारण याहवेह ने तुम्हारे कामों को नाश कर दिया है.” फलस्वरूप जहाज़ टूट गए और तरशीश यात्रा रुक गई.

2 Chronicles 21:1

1 यहोशाफ़ात हमेशा के लिए अपने पूर्वजों में मिल गया. उसे दावीद के नगर में उसके पूर्वजों के साथ गाड़ा गया. उसके स्थान पर उसका पुत्र यहोराम राजा हुआ.

2 उसके भाई थे, यहोशाफ़ात ही के पुत्र अज़रियाह, येहिएल, ज़करयाह, अज़रियाह, मिखाएल और शेपाथियाह. ये सभी यहूदिया के राजा यहोशाफ़ात के पुत्र थे.

3 इनके पिता ने इन्हें अनेक उपहार दिए थे, चांदी, सोना और कीमती वस्तुएं. इनके अलावा उसने उन्हें यहूदिया में गढ़नगर भी दे दिए थे, मगर यहोराम को उसने राज्य सौंप दिया था; क्योंकि वह पहलौठा था.

4 जैसे ही यहोराम अपने पिता के सिंहासन पर बैठा और राज्य स्थिर हुआ, उसने अपने सभी भाइयों को घात कर दिया और इनके अलावा इस्राएल के कुछ अधिकारियों को भी.

5 जब यहोराम राजा बना, उसकी उम्र बत्तीस साल थी और उसने येरूशलेम में आठ साल शासन किया.

2 Chronicles 22:1

6 उसका आचरण इस्राएल के राजाओं के समान था. उसने
वही किया, जो अहाब के वंश ने किया था; क्योंकि उसने
अहाब की पुत्री से विवाह किया था. वह वही करता था जो
याहवेह की दृष्टि में गलत था.

7 फिर भी दावीद से बांधी गई अपनी वाचा के कारण याहवेह
ने दावीद के वंश को नाश करना न चाहा और इसलिये भी कि
उन्होंने यह प्रतिज्ञा की थी कि वह दावीद को और उनके पुत्रों
के दीपक को कभी न बुझाएंगे.

8 यहोराम का शासनकाल में एक मौका ऐसा आया, जब
एदोम ने यहूदिया के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और अपने लिए
स्वयं एक राजा चुन लिया.

9 तब यहोराम अपने सेनापतियों और सारे रथों को लेकर
एदोम की ओर निकला. वह रात में उठा और उन एदोमियों
को मार डाला जिन्होंने उसे, सेनापतियों और रथों को घेर रखा
था.

10 फलस्वरूप एदोम आज तक इस्राएल के विरुद्ध विद्रोह की
स्थिति में है. इसी समय लिबनाह ने भी विद्रोह कर दिया था.
क्योंकि यहोराम ने अपने पूर्वजों के परमेश्वर याहवेह को त्याग
दिया था.

11 इसके अलावा उसने यहूदिया के पर्वतों पर वेदियां बना
रखी थी, जिसका परिणाम यह हुआ कि येरूशलेम के निवासी
याहवेह परमेश्वर के प्रति सच्चे न रह गए और यहूदिया के
निवासी मार्ग से भटक गए.

12 तब यहोराम को भविष्यद्वक्ता एलियाह द्वारा भेजा एक पत्र
मिला, जिसमें एलियाह ने लिखा था, “तुम्हारे पूर्वज दावीद के
परमेश्वर याहवेह का संदेश यह है, ‘इसलिये, कि तुमने न तो
अपने पिता यहोशाफ़ात की नीतियों का पालन किया और न
यहूदिया के राजा आसा की नीतियों का.

13 बल्कि तुमने इस्राएल के राजाओं की नीतियों का अनुसरण
किया है और यहूदिया और येरूशलेम के निवासियों को
अहाब के परिवार के समान विश्वासघात के लिए उकसाया है
और तुमने अपने ही परिवार के भाइयों की हत्या कर दी है, जो
तुमसे अच्छे थे.

14 यह देख लेना, तुम्हारे लोगों, तुम्हारे पुत्रों तुम्हारी पत्नियों और
तुम्हारी सारी संपत्ति पर याहवेह बड़ी भारी विपत्ति डालेंगे.

15 खुद तुम एक भयंकर रोग से बीमार हो जाओगे. यह आंतों
का रोग होगा, फलस्वरूप इस रोग के कारण हर रोज़ तुम्हारी
आंतें बाहर आती जाएंगी.’ ”

16 तब याहवेह ने फिलिस्तीनियों और उन अरबों के मनों को,
जो कूश देश की सीमा के पास रहते थे, यहोराम के विरुद्ध
उकसाया.

17 उन्होंने यहूदिया पर हमला कर दिया, वे सीमा में घुस आए.
उन्होंने राजमहल में जो कुछ था सभी ले लिया और साथ ही
उसके पुत्रों और पत्नियों को भी अपने साथ ले गए. तब उसके
छोटे पुत्र यहोआहाज़ के अलावा वहां कोई भी बचा न रह गया.

18 यह सब होने पर याहवेह ने उसकी आंतों पर एक भयंकर
रोग से वार किया.

19 रोग दिनोंदिन बढ़ता ही गया और दो साल पूरे होने पर
उसकी आंतें बाहर निकल आईं और भीषण दर्द में उसकी
मृत्यु हो गई. लोगों ने उसके सम्मान में आग नहीं जलाई जैसा
वे उसके पूर्वजों के संबंध में करते आए थे.

20 जब उसने शासन करना शुरू किया उसकी उम्र बत्तीस
साल की थी. येरूशलेम में उसने आठ साल शासन किया.
किसी को भी उसकी मृत्यु पर दुःख न हुआ. उन्होंने उसे
दावीद के नगर में गाड़ दिया, मगर राजाओं के लिए ठहराई
गई कब्र में नहीं.

2 Chronicles 22:1

1 येरूशलेम वासियों ने यहोराम के छोटे पुत्र अहज़्याह को
उसके स्थान पर राजा अभिषिक्त किया; क्योंकि वह दल, जो
अरब शिविर में ठहरा हुआ था, उसने उसके सभी बड़े पुत्रों
की हत्या कर दी थी. तब राजा यहोराम का पुत्र अहज़्याह ने
शासन शुरू किया.

2 जब अहज़्याह ने शासन शुरू किया, उसकी उम्र बाईस साल
थी. उसने येरूशलेम में एक साल राज्य किया. उसकी माता
का नाम अथालियाह था. वह इस्राएल के राजा ओमरी की
पोती थी.

2 Chronicles 23:1

3 अहज़्याह भी अहाब की नीतियों का अनुसरण करता रहा,
क्योंकि बुराई में उसकी सलाहकार थी उसकी माता.

4 उसने वह किया, जो याहवेह की दृष्टि में बुरा था, अहाब के
परिवार के समान, क्योंकि उसके पिता की मृत्यु के बाद ऐसी
उसकी सलाह थी, जिसका परिणाम था सर्वनाश.

5 अहज़्याह भी इस्राएल की सलाह का अनुसरण करता रहा.
वह इस्राएल के राजा अहाब के पुत्र योराम के साथ मिलकर
अराम के राजा हाज़ाएल के विरुद्ध युद्ध के लिए रामोथ-
गिलआद में युद्ध-भूमि में उतर पड़े. मगर अरामियों ने योराम
को घायल कर दिया.

6 रामाह में अराम के राजा हाज़ाएल से युद्ध करते हुए राजा
योराम को जो घाव लगे थे, उनसे स्वस्थ होने के लिए वह येज़्रील
को लौट गया. यहूदिया के राजा यहोराम का पुत्र अहज़्याह
अहाब के पुत्र योराम की स्थिति को देखने येज़्रील गया क्योंकि
योराम बीमार था.

7 अहज़्याह का विनाश परमेश्वर ही के द्वारा पहले से ही तय
किया गया था, इसलिये वह यहोराम से भेंट करने गया, फिर
वहां पहुंचने पर वह योराम के साथ निमशी के पुत्र येहू से भेंट
करने चला गया. येहू, जिसे याहवेह ने अहाब के वंश का
विनाश करने के लिए ठहराया था.

8 जब येहू राजा अहाब के वंश पर परमेश्वर द्वारा ठहराए गए
दंड दे रहा था, उसकी भेंट उन यहूदी अधिकारियों से हो गई.
इनमें अहज़्याह के भाइयों के वे पुत्र भी थे, जो अहज़्याह के
सेवक भी थे. येहू ने इन सभी की हत्या कर दी.

9 उसने अहज़्याह की खोज की और उसे शमरिया में जा
पकड़ा, जहां वह जा छिपा था. वे उसे येहू के सामने लाए. वहीं
उन्होंने उसका वध किया और उसे गाड़ दिया. क्योंकि वे याद
कर रहे थे कि वह यहोशाफ़ात का पोता है, जिसने पूरे हृदय
से याहवेह की इच्छा जानने की खोज की थी. अब कोई भी बचा
न रहा, जो यहूदिया राज्य के अधिकार को स्थिर रख सके.

10 जब अहज़्याह की माता को मालूम हुआ कि उसके पुत्र की
मृत्यु हो चुकी है, उसने जाकर सारे यहूदिया राजपरिवार को
नाश कर दिया.

11 जब राजा के पुत्रों का संहार किया जा रहा था, राजा की पुत्री
येहोशाबेअथ ने अहज़्याह के पुत्र योआश को उसकी धाय के
साथ शयनागार में छिपा दिया था. इस प्रकार राजा यहोराम
की पुत्री येहोशाबेअथ ने, जो पुरोहित यहोयादा की पत्नी थी, जो
अहज़्याह की बहन भी थी, योआश की अथालियाह द्वारा हत्या
किए जाने से बचा लिया.

12 जब देश पर अथालियाह शासन कर रही थी, छः साल तक
योआश को परमेश्वर के भवन में छिपाए रखा गया.

2 Chronicles 23:1

1 मगर सातवें साल में पुरोहित यहोयादा ने साहस किया और
सेना के इन शतपतियों से वाचा बांधी की येरोहाम के पुत्र
अज़रियाह, येहोहानन के पुत्र इशमाएल, ओबेद के पुत्र
अज़रियाह, अदाइयाह के पुत्र मआसेइयाह और ज़ीकरी के
पुत्र एलिषाफत से.

2 इन्होंने सारी यहूदिया में घूमकर यहूदिया के सारे नगरों से
लेवियों को और इस्राएल के पितरों के गोत्रों के प्रधानों को
इकट्ठा किया और वे सभी येरूशलेम आ गए.

3 तब परमेश्वर के भवन में इन सभी ने राजा के साथ वाचा बांधी.
पुरोहित यहोयादा ने इन सबको संबोधित करते हुए कहा, "यह
देख लीजिए कि शासन राजकुमार ही करेगा, क्योंकि यह
दावीद के वंशजों के बारे में की गई याहवेह की भविष्यवाणी
के अनुसार है.

4 आप लोगों को करना यह होगा: वे पुरोहित और लेवी, जो
शब्बाथ पर यहां आया करते हैं, उनमें से एक तिहाई द्वारपाल
का काम करेंगे,

5 बाकी एक तिहाई राजा के घर पर होंगे और बाकी एक
तिहाई नींव के द्वार पर रहेंगे. बाकी सभी याहवेह के भवन के
आंगन में रहेंगे.

6 यह ध्यान रखा जाए कि पुरोहितों और सेवा के लिए चुने गए
लेवियों के अलावा कोई भी याहवेह के भवन में प्रवेश न करे.
पुरोहित और लेवी भवन में इसलिये प्रवेश करेंगे, कि वे पवित्र
हैं. हर एक व्यक्ति याहवेह की विधि का पालन करेगा.

2 Chronicles 24:1

7 लेवी राजा को घेर लेंगे, हर एक के हाथ में उसके शस्त्र होंगे.
यदि कोई भी भवन में आने की कोशिश करे, उसका वध कर
दिया जाए. राजा के आने जाने में आप हमेशा राजा के साथ
साथ रहेंगे."

8 उन्हें जैसा आदेश पुरोहित यहोयादा द्वारा दिया गया था,
उन्होंने उसकी एक-एक बात पूरी की. पुरोहित यहोयादा ने
छुट्टी पर जा रहे किसी भी दल को शब्बाथ सेवा से अवकाश
लेने न दिया. इससे जो अवकाश पर जा रहे थे वे, और जो सेवा
के लिए आ रहे थे वे सभी वहां इकट्ठा हो गए.

9 तब यहोयादा ने परमेश्वर के भवन में जमा राजा दावीद की
छोटी और बड़ी ढालें और बर्छियां शतपतियों को दे दी.

10 अपने-अपने हाथों में हथियार लिए इन सभी व्यक्तियों को
यहोयादा ने राजा के आस-पास भवन में वेदी के पास और
भवन के दायीं ओर से बायीं ओर तक ठहरा दिया.

11 तब पुरोहित यहोयादा और उसके पुत्रों ने राजकुमार को
लेकर बाहर आए, उसके सिर पर मुकुट रखा और उसे साक्षी
पत्र दे दिया. उन्होंने उसे राजा घोषित कर उसका राजाभिषेक
किया और सबने जयघोष करते हुए कहा, "महाराज जीवित
रहें!"

12 जब अथालियाह ने उस भीड़ का हल्ला और राजा की
प्रशंसा में की जा रही जय जयकार सुनी, वह याहवेह के भवन
में लोगों के बीच में आ गई.

13 उसने दृष्टि की और देखा कि राजा अपने ठहराए हुए खंभे
के पास खड़ा हुआ था और शतपति और तुरही वादक राजा
के पास खड़े हुए थे. सभी देशवासी आनन्दमग्न हो तुरही फूंक
रहे थे, गायक लोग अपने वाद्य-यंत्रों के साथ स्तुति कर रहे थे.
यह देख अथालियाह अपने वस्त्र फाड़ चिल्ला उठी, "राजद्रोह!
राजद्रोह!"

14 पुरोहित यहोयादा ने शतपतियों को, जो सेना के अधिकारी
थे, आदेश दिया: "उसे बाहर पंक्तियों के बीच में लाया जाए"
और जो कोई उसके प्रति सच्चा व्यक्ति हो, उसको तलवार से
मार डाला जाए. पुरोहित यह आदेश दे चुका था, "याहवेह के
भवन में उसका वध न किया जाए."

15 तब उन्होंने उसे पकड़ लिया. जब वह राजघराने के घोड़ा
फाटक के पास पहुंची, उन्होंने उसका वध कर दिया.

16 यहोयादा ने खुद अपने, सारी प्रजा और राजा के साथ यह
वाचा बांधी, कि वे अब याहवेह के होकर रहेंगे.

17 सारी जनता बाल के भवन को गई ओर उसे नाश कर डाला.
उन्होंने वेदियों और मूर्तियों को चूर-चूर कर डाला. तब उन्होंने
वेदियों के बीच ही बाल के पुरोहित मत्तान का वध कर डाला.

18 इसके अलावा यहोयादा ने याहवेह के भवन की देखरेख की
जवाबदारी लेवी पुरोहितों को सौंप दी. इन्हें याहवेह के भवन
में दावीद द्वारा चुना गया था, कि वे मोशेह की व्यवस्था की
पुस्तक के अनुसार होमबलि चढ़ाया करें, यह सब दावीद द्वारा
चलाई गई विधि के अनुसार खुशी से गाते हुए किया जाना था.

19 उसने याहवेह के भवन के लिए द्वारपाल चुन दिए, कि किसी
भी रूप में सांस्कारिक रूप से अशुद्ध कोई भी व्यक्ति भवन
में आ न सके.

20 तब यहोयादा ने शतपतियों, समाज के सम्मान्य व्यक्तियों,
प्रजा के प्रशासकों और सारी प्रजा को इकट्ठा किया और
याहवेह के भवन में से इन सभी के सामने राजा को बाहर लाया
गया. उसे ऊपरी द्वार से लेकर वे राजघराने में आए. वहां
उन्होंने राजा को राज सिंहासन पर बैठाया.

21 इस पर सारी प्रजा में खुशी छा गई और नगर में शांति भर
गई, तलवार से अथालियाह की हत्या हुई थी यह इसका मुख्य
कारण था.

2 Chronicles 24:1

1 राजाभिषेक के मौके पर योआश की उम्र सात साल की थी.
येरूशलेम में उसने चालीस साल शासन किया. उसकी माता
का नाम ज़िबियाह था; वह बेअरशेबा वासी थी.

2 योआश ने पुरोहित यहोयादा के जीवनकाल में वही किया,
जो याहवेह की दृष्टि में सही था.

3 यहोयादा ने उसके दो विवाह करना सही समझा. इन दोनो
पत्नियों से उसके पुत्र-पुत्रियां पैदा हुई.

2 Chronicles 24:1

4 योआश याहवेह के भवन की मरम्मत करने के लिए मन में
दृढ़ था.

5 उसने पुरोहितों और लेवियों को इकट्ठा कर उन्हें कहा, "बिना
देर किए यहूदिया के सारे नगरों में जाकर सारे इस्राएल से
वार्षिक दान इकट्ठा कीजिए, कि परमेश्वर के भवन की मरम्मत
की जा सके." किंतु लेवी इसके लिए देर करते रहे.

6 तब राजा ने प्रमुख पुरोहित यहोयादा को बुलवाकर उससे
कहा, "आपने लेवियों को यहूदिया और येरूशलेम से याहवेह
के सेवक मोशेह द्वारा इस्राएल से मिलनवाले तंबू के लिए
ठहराया गया कर इकट्ठा करने क्यों नहीं भेजा है?"

7 उस दुष्ट स्त्री अथालियाह के पुत्रों ने परमेश्वर के भवन में
घुसकर याहवेह के भवन की पवित्र वस्तुओं तक को लेकर
बाल के लिए इस्तेमाल कर ली थी.

8 तब राजा ने एक कोष को बनाने का आदेश दिया, जिसे
याहवेह के भवन के द्वार के बाहर रख दिया गया.

9 यहूदिया और येरूशलेम में सार्वजनिक घोषणा की गई कि
प्रजा अब याहवेह के लिए कर देना शुरू करे जो परमेश्वर के
सेवक मोशेह द्वारा इस्राएल पर बंजर भूमि में लगाया गया था.

10 सभी अधिकारी और प्रजा के लोग इस पर बहुत ही खुश
हुए और हर एक ने उसे कोष में अपने लिए तय कर डाल
दिया, जिससे वह कोष भर गई.

11 तब उनकी रीति यह हो गई, कि जब कोष लेवियों द्वारा
राजकीय कोषाध्यक्ष के पास ले जाई जाती थी और यदि उसमें
काफ़ी मुद्राएं इकट्ठा हो चुकी होती थी तब उसे राजा के सचिव
और प्रमुख पुरोहित के अधिकारी आकर कोष से मुद्राएं
निकालकर उसे दोबारा उसी स्थान पर रख आते थे. वे ऐसा
प्रतिदिन करते थे और उन्होंने एक बड़ी राशि इकट्ठा कर ली.

12 राजा और यहोयादा ने यह राशि उनसे सेवकों को सौंप दी,
जिनकी जवाबदारी याहवेह के भवन में सेवा करने की थी.
उन्होंने याहवेह के भवन के मरम्मत के लिए वेतन पर रखा
गया राजमिस्त्री, और बढ़ई दिए. इनके अलावा याहवेह के
भवन के उद्धार के लिए उन्होंने लोहे और कांसे के शिल्पी भी
पारिश्रमिक के आधार पर नियुक्त किए.

13 ये समस्त शिल्पी काम पर लग गए और उनके परिश्रम का
प्रतिफल प्रगति के रूप में जाहिर हुआ. विशेष निर्देशों के
अनुसार परमेश्वर का भवन पहले की तरह मजबूत हो गया.

14 जब सारा काम खत्म हो गया, वे बाकी रह गई राशि राजा
और यहोयादा के सामने ले आए. इन बाकी की चांदी की
मुद्राओं से उन्होंने याहवेह के भवन के प्रयोग के लिए बर्तन
बना लिए; होमबलि के लिए इस्तेमाल, सोने और चांदी के
बर्तन. यहोइयादा के पौरोहित्यकाल में याहवेह के भवन में
नियमित रूप से होमबलि चढ़ाई जाती रही.

15 जब यहोयादा पूरे बुढ़ापे को पहुंचा, उसकी मृत्यु हो गई.
मृत्यु के समय उसकी अवस्था एक सौ तीस साल की थी.

16 उन्होंने उसे दावीद के नगर में राजाओं के मध्य में भूमिस्थ
किया, क्योंकि इस्राएल में, परमेश्वर के लिए और परमेश्वर के
भवन में उनका उत्तम योगदान रहा था.

17 यहोयादा की मृत्यु के बाद यहूदिया के अधिकारी आकर
राजा के प्रति अपना झूठा लगाव दिखाने लगे और राजा
उनकी सुनने भी लगा.

18 उन्होंने याहवेह अपने पूर्वजों के परमेश्वर के भवन को त्याग
दिया. वे अशेरा देवी और मूर्तियों की आराधना करने लगे.
उनके इस दोष का परिणाम यह हुआ कि यहूदिया और
येरूशलेम क्रोध के भागी बन गए.

19 फिर भी याहवेह ने उनके लिए भविष्यद्वक्ता भेजे कि वे
दोबारा याहवेह की ओर हो जाएं. ये भविष्यद्वक्ता उन्हें
धिक्कारते रहे, फिर भी वे भविष्यवक्ताओं के संदेश का
इनकार ही करते रहे.

20 तब परमेश्वर के आत्मा पुरोहित यहोयादा के पुत्र ज़करयाह
पर उतरे. उसने लोगों के सामने खड़े होकर यह घोषणा की,
"यह परमेश्वर ने कहा है: 'तुम लोग क्यों याहवेह के आदेशों को
ठुकरा रहे हो कि अब तुम्हारी समृद्धि में व्यवधान उत्पन्न हो
गया है? याहवेह ने तुम्हें त्याग दिया है क्योंकि तुमने उनका
त्याग किया है.' "

21 इसके कारण उन्होंने ज़करयाह के विरुद्ध षड्यंत्र गढ़ा और
राजा के आदेश पर उन्होंने याहवेह के भवन के परिसर में
पथराव के द्वारा उसे घात कर दिया.

22 राजा योआश ने उस कृपा को भुला दिया जो ज़करयाह के
पिता यहोयादा ने उस पर दिखाई थी, और उसने उसके पुत्र
की हत्या कर दी. मृत्यु के पहले ज़करयाह के ये शब्द थे
"याहवेह इस ओर ध्यान दें और इसका बदला लें."

23 साल समाप्त होते-होते अरामी सेना ने योआश पर हमला
कर दिया. वे यहूदिया में आ गए, येरूशलेम पहुंचे और लोगों
के बीच से प्रजा के सभी शासकों का वध कर दिया और
उनकी समस्त लूट की सामग्री दमेशेक के राजा के पास भेज
दी.

24 यद्यपि अरामी सेना में सैनिक कम संख्या में ही थे, याहवेह
ने बड़ी विशाल संख्या की सेना उनके अधीन कर दी, क्योंकि
यहूदिया ने याहवेह, अपने पूर्वजों के परमेश्वर का त्याग कर
दिया था. उनके द्वारा योआश पर याहवेह द्वारा दिया दंड था.

25 जब अरामी सैनिक योआश को बहुत ही घायल अवस्था में
छोड़कर चले गए, योआश ही के सेवकों ने उसके विरुद्ध
षड्यंत्र रचा और उसकी उसी के बिछौने पर हत्या कर दी. यह
पुरोहित यहोयादा के पुत्र की हत्या का प्रतिफल था. योआश
की मृत्यु हो गई और उसे दावीद के नगर में गाड़ा गया. उन्होंने
उसे राजाओं के लिए ठहराई गई कब्र में नहीं रखा.

26 जिन्होंने उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचा था, उनके नाम है
अम्मोनी शिमियथ का पुत्र ज़ाबाद और मोआबी शिमरिथ का
पुत्र योज़ाबाद.

27 उसके पुत्रों का ब्यौरा और उसके विरुद्ध की गई अनेक
भविष्यवाणियों का उल्लेख और परमेश्वर के भवन की मरम्मत
का उल्लेख राजाओं का जीवन वृत्तांत पुस्तक में वर्णित है.
उसके स्थान पर उसका पुत्र अमाज़्याह राजा हो गया.

2 Chronicles 25:1

1 यहूदिया पर अमाज़्याह का शासन: शासन शुरू करते समय
आमज़ियाह की उम्र पच्चीस साल की थी. येरूशलेम में उसने
उनतीस साल शासन किया. उसकी माता का नाम येहोआद्दीन
था वह येरूशलेम की वासी थी.

2 अमाज़्याह ने वह किया, जो याहवेह की दृष्टि में सही था फिर
भी पूरे मन से नहीं.

3 उसके हाथों में राज्य मजबूत होते ही उसने अपने सेवकों की
हत्या कर डाली, जिन्होंने उसके पिता की हत्या की थी.

4 मगर मोशेह द्वारा लिखी व्यवस्था की पुस्तक में याहवेह ने
आदेश दिया था, "पुत्र के पाप का दंड उसके पिता को न मिले
और न पिता के कारण पुत्र मार डाला जाए, जिसने पाप किया
हो वही उस पाप के कारण मार डाला जाए." उसके अनुसार,
उसने उनकी संतानों की हत्या नहीं की.

5 राजा अमाज़्याह ने यहूदाह और बिन्यामिन गोत्र के सभी
पुरुषों को अनेक कुलों के अनुसार सैन्य टुकड़ियों में इकट्ठा
कर दिया. तब उसने उन पर सहस्र पति और शतपति
अधिकारी नियुक्त कर दिए. इस प्रक्रिया में सभी बीस साल या
इससे अधिक आयु के पुरुष शामिल किए गए थे, इनकी कुल
गिनती तीन लाख पहुंची. ये सभी चुने हुए पुरुष थे, बर्छी और
ढाल से लैस, युद्ध के लिए पूरी तरह तैयार कुशल सैनिक.

6 उसने इस्राएल के राजा से साढ़े तीन हज़ार किलो चांदी का
दाम देकर एक लाख वीर सैनिक ले लिए.

7 परमेश्वर का एक दूत उसके पास यह संदेश लेकर आया,
"महाराज, इस्राएल की इस सेना को अपने साथ न ले जाइए;
क्योंकि याहवेह न तो इस्राएल की सेना की ओर हैं और न ही
एफ्राईम के वंशजों में से किसी के.

8 यदि आप जाते ही है तो आप अवश्य जाइए और युद्ध में जीत
कर आइए. नहीं तो परमेश्वर आपको शत्रु के सामने धूल चटा
देंगे. परमेश्वर में यह क्षमता है कि वे सहायता करें या गिरा दें."

9 यह सुन अमाज़्याह ने परमेश्वर के दूत से प्रश्न किया, "उस
साढ़े तीन हज़ार किलो चांदी का क्या होगा, जो इस्राएल को दी
जा चुकी है?" परमेश्वर के दूत ने उत्तर दिया, "याहवेह ने
आपको इससे कहीं अधिक देने की इच्छा की है."

10 तब अमाज़्याह ने उन सैनिकों को लौट जाने का आदेश
दिया. ये सैनिक एफ्राईम से आए थे. वे यहूदिया के प्रति बहुत
ज्यादा गुस्सा करते हुए लौटे.

2 Chronicles 25:1

11 तब अमाज़्याह ने साहस जुटाया और अपनी सेना का
संचालन करते हुए नमक की घाटी में जा पहुंचा और वहां
उसने सेईर के दस हज़ार वंशजों को मार गिराया.

12 यहूदाह के वंशजों ने जीवित दस हज़ार को बंदी बनाया और
उन्हें ऊंची चट्टान की चोटी पर ले जाकर वहां से नीचे फेंक
दिया. इस कारण उनके शरीर के चिथड़े उड़ गए.

13 मगर उन क्रोधित सैनिकों ने जिन्हें अमाज़्याह ने युद्ध-भूमि
न ले जाकर घर लौटा दिया था, यहूदिया के नगरों में जाकर
लूटमार की और शमरिया से लेकर बेथ-होरोन तक तीन
हज़ार व्यक्तियों को मार गिराया और बड़ी मात्रा में लूट लेकर
चले गए.

14 जब अमाज़्याह एदोमवासियों को मारकर लौटा, वह अपने
साथ सेईरवासियों के देवताओं की मूर्तियां भी ले आया. उसने
उन्हें अपने देवता बनाकर प्रतिष्ठित कर दिया, उनकी पूजा
करने लगा, उनके सामने धूप जलाने लगा.

15 याहवेह का क्रोध अमाज़्याह पर भड़क उठा. याहवेह ने
उसके लिए एक भविष्यद्वक्ता भेजा, जिसने उससे कहा, “तुम
इन विदेशी देवताओं की पूजा क्यों करने लगे हो, जो अपने ही
लोगों को तुम्हारे सामर्थ्य से न बचा सके हैं?”

16 जब वह यह कह ही रहा था, राजा ने उससे कहा, “बस करो!
क्या हमने तुम्हें अपना मंत्री बनाया है? क्यों अपनी मृत्यु को
बुला रहे हो?” भविष्यद्वक्ता रुक गया और फिर उसने कहना
शुरू किया, “आपने मेरी सलाह को ठुकराया और आपने यह
सब किया है. मैं समझ गया हूं कि परमेश्वर आपके विनाश का
निश्चय कर चुके है.” इस्राएल द्वारा यहूदिया की पराजय:

17 सलाह-मशवरा के बाद यहूदिया के राजा अमाज़्याह ने येहू
के पोते, यहोआहाज़ के पुत्र इस्राएल के राजा यहोआश को
यह संदेश भेजा: “आइए, हम एक दूसरे का सामना करें.”

18 इस्राएल के राजा यहोआश ने यहूदिया के राजा अमाज़्याह
को उत्तर भेजा: “लबानोन की एक कंटीली झाड़ी ने लबानोन
के केदार को यह संदेश भेजा, ‘अपनी पुत्री को मेरे पुत्र की पत्नी
होने के लिए दे दो.’ तब एक जंगली पशु वहां से निकलते हुए
कंटीली झाड़ी को कुचलते हुए निकल गया.

19 तुमने कहा कि, तुमने एदोम को हराया है! तुम घमण्ड में
चूर होकर ऐसा कह रहे हो. पर घर में शांति से बैठे रहो! क्यों
मुसीबत को बुला रहे हो? तुम्हारा तो पतन होगा ही, साथ ही
तुम्हारे साथ यहूदिया का भी पतन हो जाएगा.”

20 मगर अमाज़्याह ने उसकी एक न सुनी; इस प्रकार यह सब
याहवेह की ही योजना थी, कि वह उसे यहोआश के अधीन
कर दें, क्योंकि वह एदोम के देवताओं की पूजा करने लगा था.

21 तब इस्राएल के राजा यहोआश ने हमला कर दिया.
अमाज़्याह और यहोआश का सामना यहूदिया के बेथ-शेमेश
नामक स्थान पर हुआ.

22 इस्राएल ने यहूदिया को हरा दिया. सैनिक पीठ दिखाकर
अपने-अपने तंबुओं को लौट गए.

23 इस्राएल के राजा यहोआश ने यहूदिया के राजा योआश के
पुत्र और यहोआहाज़ के पौत्र अमाज़्याह को बेथ-शेमेश में ही
पकड़ लिया और उसे येरूशलेम ले गया. उसने एफ्राईम
फाटक से कोने के फाटक तक लगभग एक सौ अस्सी मीटर
शहरपनाह गिरा दी.

24 ओबेद-एदोम की देखरेख में रखे परमेश्वर के भवन के सभी
सोने और चांदी के बर्तन और राजघराने का सारा खजाना और
बंदियों को लेकर शमरिया लौट गया.

25 यहूदिया के राजा योआश का पुत्र अमाज़्याह इस्राएल के
राजा यहोआहाज़ के पुत्र यहोआश की मृत्यु के बाद पन्द्रह
साल जीवित रहा.

26 पहले से लेकर आखिरी तक के कामों का ब्यौरा यहूदिया
और इस्राएल के राजा की पुस्तक में दिया गया है.

27 जब से अमाज़्याह याहवेह का अनुसरण करने से दूर हो
गया, येरूशलेम में लोगों ने उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचा, तब वह
लाकीश को भाग गया; किंतु उन्होंने लाकीश में जाकर उसकी
खोज की और वहीं उसकी हत्या कर दी.

28 घोड़ों पर लादकर उसका शव लाया गया और उसके
पूर्वजों के साथ दावीद के नगर में उसे गाड़ दिया गया.

2 Chronicles 26:1

2 Chronicles 26:1

1 यहूदिया की सारी प्रजा ने सोलह साल के उज्जियाह को
उसके पिता अमाज़्याह के स्थान पर राजा होने के लिए चुन
लिया.

2 उसने अपने पिता की मृत्यु के बाद एलाथ को बनवाकर उसे
दोबारा यहूदिया में शामिल कर लिया.

3 उस समय उज्जियाह की उम्र सोलह साल थी. येरूशलेम में
उसने बावन साल शासन किया. उसकी माता का नाम
यकोलियाह था; वह येरूशलेमवासी थी.

4 उज्जियाह ने अपने पिता अमाज़्याह समान वही किया, जो
याहवेह की दृष्टि में सही है.

5 ज़करयाह के जीवनकाल में परमेश्वर की खोज करता रहा.
याहवेह के दर्शन के कारण ज़करयाह में समझ थी. जब तक
वह याहवेह की खोज करता रहा, याहवेह उसे और बढ़ाते रहे.

6 उज्जियाह ने फिलिस्तीनियों पर हमला किया और गाथ,
याबनेह और अशदोद की शहरपनाह गिरा दीं. अशदोद में
और फिलिस्तीनियों के बीच उसने इस क्षेत्र में नगरों को
बनाया.

7 फिलिस्तीनियों और अरबियों के विरुद्ध जो गुर-बाल और
मिऊनी में रहते थे, परमेश्वर ने उसकी सहायता की.

8 अम्मोनवासी भी उज्जियाह को कर देते थे. उसका यश मिस्र
की सीमा तक पहुंच गया था, क्योंकि वह बलवान हो चुका था.

9 इनके अलावा उज्जियाह ने येरूशलेम में कोने के फाटक
और घाटी के फाटक पर पहरेदारों के लिए खंभों को बनवाया
और किले की दीवारों को मजबूत बनाने के लिए उनमें गुम्मट
बनवाए.

10 बंजर भूमि में उसने पहरेदारों के खंभे खड़े किए और
अनेक तालाबों को भी बनवाया, क्योंकि मैदानों में बड़ी संख्या
में उसके पशु थे. पहाड़ी इलाके में उसके किसान और अंगूर
के बगीचों के रखवाले थे. उसके अनेक उपजाऊ खेत भी थे,
क्योंकि खेती उसे प्यारी थी.

11 इसके अलावा उसकी वीर सेना युद्ध के लिए तैयार रहती
थी. इसको दलों के रूप में बांटा गया था. इनकी भर्ती और
संगठन राजा के अधिकारी हननियाह की आज्ञा में सचिव
येइएल और अधिकारी मआसेइयाह द्वारा की गई थी.

12 हर एक गोत्र से चुने हुए बलवान वीर योद्धा थे, जिनकी कुल
संख्या दो हज़ार छः सौ थी.

13 इनके अधिकार में थी एक बड़ी सेना, जिसकी गिनती थी
तीन लाख साढ़े सात हज़ार. ये राजा के विरुद्ध उठे किसी भी
शत्रु पर बहुत बल से वार कर सकते थे.

14 इसके अलावा उज्जियाह ने पूरी सेना के लिए ढालें, बर्छियों,
टोप झिलम, धनुष और गोफन तैयार कर रखी थी.

15 कुशल शिल्पियों द्वारा आविष्कार किए गए यंत्र और
उपकरण उसने येरूशलेम में रखवा रखे थे. ये यंत्र पहरेदारों
के मीनारों और शहरपनाह के कोनों पर बाण छोड़ने और
बड़े-बड़े पत्थर फेंकने के लिए बनाए गए थे. इनके कारण
उसकी ख्याति दूर-दूर तक पहुंच चुकी थी. जब तक उसमें
शक्ति रही उसे अद्धुत रूप से सहायता मिलती रही.

16 जब वह इस प्रकार मजबूत होता गया, घमण्ड़ ने उसे आ
घेरा. वह याहवेह उसके परमेश्वर के लिए सच्चा भी न रह गया.
वह याहवेह के मंदिर में चला गया कि वह धूप वेदी पर धूप
जलाए.

17 इस पर पुरोहित अज़रियाह उसके पीछे-पीछे गया और
उसके साथ याहवेह के अस्सी बलवान पुरोहित भी थे.

18 उन्होंने राजा उज्जियाह को मना करते हुए कहा,
“उज्जियाह, याहवेह के लिए धूप जलाना आपका काम नहीं है,
यह केवल पुरोहितों के लिए ही ठहराया गया है, जो अहरोन
के वंशज और धूप जलाने के लिए अलग किए हुए हैं. आप
पवित्र स्थान से बाहर चले जाइए, क्योंकि आप याहवेह
परमेश्वर के प्रति सच्चे नहीं रहे हैं, इसलिये आपको उनकी
ओर से कोई आदर न मिलेगा.”

19 उज्जियाह यह सुनकर बहुत गुस्सा हो गया. धूप जलाने के
लिए उसके हाथ में धूपदान था. जब वह पुरोहितों पर गुस्सा हो

ही रहा था, याहवेह के भवन में धूप वेदी के निकट पुरोहितों के देखते-देखते उसके माथे पर कुष्ठ रोग हो गया.

20 प्रमुख पुरोहित अज़रियाह और दूसरे सभी पुरोहित उसकी ओर देख रहे थे. वह माथे पर कोढ़ी हो चुका था. उन्होंने उसे बिना देर किए बाहर निकाला-वास्तव में वह खुद वहां से निकलने के लिए आतुर था, क्योंकि वह जान गया था कि उस पर याहवेह का प्रहार था.

21 मृत्यु तक राजा उज्जियाह कुष्ठरोगी रहा. वह एक अलग घर में रहने लगा, क्योंकि वह कुष्ठरोगी था. याहवेह के भवन में उसका जाना मना हो गया. उसका पुत्र योथाम अब राजमहल पर अधिकारी हो प्रजा का न्याय करने लगा.

22 शुरू से अंत तक, उज्जियाह द्वारा किए गए बाकी कामों का ब्यौरा आमोज़ के पुत्र भविष्यद्वक्ता यशायाह द्वारा किया गया है.

23 तब उज्जियाह हमेशा के लिए अपने पूर्वजों से जा मिला. उन्होंने उसे राजाओं के लिए ठहराई गई की कब्र में गाड़ दिया, क्योंकि उन्होंने कहा वह तो कुष्ठरोगी है. उसका पुत्र योथाम उसके स्थान पर राजा हो गया.

2 Chronicles 27:1

1 जब योथाम शासन करने लगा तब उसकी उम्र पच्चीस साल थी. उसने येरूशलेम में सोलह साल शासन किया. उसकी माता का नाम येरूशा था, वह सादोक की पुत्री थी.

2 उसने वह किया, जो याहवेह की दृष्टि में सही था, जैसा उसके पिता उज्जियाह ने किया था. हां, उसने याहवेह के मंदिर में प्रवेश नहीं किया. मगर प्रजा में भ्रष्टाचार फैला था.

3 उसने याहवेह के भवन के ऊपरी द्वार को बनवाया. उसने शहरपनाह के उस भाग को बनवाया, जिसे ओफेल कहा जाता था.

4 इसके अलावा उसने यहूदिया के पहाड़ी क्षेत्र में नगरों को बनवाया. उसने जंगली पहाड़ियों पर गढ़ और पहरेदारों के मीनारों को बनवाया.

5 उसने अम्मोनी राजा से युद्ध किया और उन पर विजयी हुआ. फलस्वरूप अम्मोनियों ने उसे उस साल साढ़े तीन हज़ार किलो चांदी, 1,800 टन गेहूं और 1,800 टन जौ भेंट और कर के रूप में दिया. यही सब अम्मोनियों ने उसे दूसरे और तीसरे साल में भी दिया.

6 तब योथाम बलवान हो गया क्योंकि उसने अपनी नीतियां याहवेह अपने परमेश्वर की खुशी के अनुसार बनाई थी.

7 योथाम के बाकी काम, उसके युद्ध, उसके दूसरे काम इस्राएल और यहूदिया के राजा नामक पुस्तक में लिखे हैं.

8 शासन शुरू करते समय उसकी उम्र पच्चीस साल थी. उसने येरूशलेम में सोलह साल शासन किया.

9 योथाम हमेशा के लिए अपने पूर्वजों से जा मिला. उन्होंने उसे दावीद के नगर में गाड़ दिया. उसके स्थान पर उसका पुत्र आहाज़ राजा बना.

2 Chronicles 28:1

1 शासन शुरू करते समय आहाज़ की उम्र बीस साल थी. येरूशलेम में उसने सोलह साल शासन किया. उसने वह नहीं किया जो याहवेह की दृष्टि में सही था, जैसा उसके पूर्वज दावीद ने किया था.

2 वह इस्राएल के राजाओं की नीति का पालन करता रहा. उसने बाल देवताओं की मूर्तियां बनाईं.

3 इनके अलावा; वह बेन-हिन्नोम घाटी में धूप जलाता था और उसने अपने पुत्रों की अग्निबलि चढ़ाई. यह उन जनताओं की घृणित प्रथाएं थी, जिन्हें याहवेह ने इस्राएल वंशजों के सामने से दूर भगाया था.

4 वह पूजा स्थलों पर, पहाड़ियों पर और हर एक हरे वृक्ष के नीचे धूप जलाकर बलि चढ़ाता रहा.

5 तब याहवेह उसके परमेश्वर ने उसे अराम के राजा के अधीन कर दिया. उन्होंने उसे हरा दिया और उनमें से बड़ी संख्या में बंदी बनाए और उन्हें दमेशेक ले गए. उसे इस्राएल के राजा के अधीन भी कर दिया गया. उसने उसे बुरी तरह से हराया.

2 Chronicles 28:1

6 इसलिये कि उन्होंने अपने पूर्वजों के परमेश्वर याहवेह को
त्याग दिया था, रेमालियाह के पुत्र पेकाह ने एक ही दिन में
यहूदिया के सभी एक लाख बीस हज़ार योद्धाओं को मार
गिराया.

7 एफ़्राईमी ज़ीकरी ने राजपुत्र मआसेइयाह और गृह प्रशासक
अज़रीकाम का वध कर दिया और राजा के बाद के सर्वोच्च
अधिकारी एलकाना का भी.

8 इस्राएली अपने ही भाइयों के राज्य में से दो लाख पत्नियां,
पुत्र और पुत्रियां बंदी बनाकर अपने साथ ले गए. इनके अलावा
वे वहां से बड़ी लूट इकट्ठा कर शमरिया ले गए.

9 मगर वहां याहवेह का एक भविष्यद्वक्ता था-ओदेद-वह
शमरिया आई हुई सेना से भेंट करने चल पड़ा. उसने उन्हें
कहा, "यह समझ लो: क्योंकि याहवेह, तुम्हारे पूर्वजों के
परमेश्वर यहूदिया से गुस्सा थे, उन्होंने ही इन्हें तुम्हारे अधीन
कर दिया है. तुमने क्रोध में उनका संहार ऐसी क्रूरता में किया
है, कि यह बात परमेश्वर के ध्यान में आ गई है.

10 अब तुम यह विचार कर रहे हो, कि इनका दमन कर
यहूदिया और येरूशलेम वासियों के पुरुष और स्त्री को दास
बनाओ, क्या यह सच नहीं कि तुम भी याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर
के सामने अपराधी हो?

11 इसलिये अब मेरी सुनो और इन बंदियों को, जिन्हें तुम अपने
ही भाइयों में से पकड़कर ले आए हो, लौट जाने दो; क्योंकि
अब याहवेह का तेज क्रोध तुम्हारे विरुद्ध भड़क रहा है."

12 तब एफ़्राईम के वंशजों में के कुछ प्रमुख—येहोहानन का
पुत्र अज़रियाह, मेशिल्लेमोथ का पुत्र बेरेखियाह, शल्लूम का
पुत्र येहिज़कियाह और हादलाई का पुत्र अमासा-उनके
विरुद्ध हो गए, जो युद्ध से लौट रहे थे.

13 इन्होंने उनसे कहा, "सही नहीं कि तुम बंदियों को यहां
लाओ. इसके द्वारा तुम याहवेह के विरुद्ध हमारे पापों को
बढ़ाना चाह रहे हो. हमारा दोष इतना बड़ा है कि इस्राएल के
विरुद्ध याहवेह का क्रोध दहक रहा है."

14 तब योद्धाओं ने लूट की सामग्री और बंदियों को
अधिकारियों और सारी सभा के सामने लाकर छोड़ दिया.

15 तब वे लोग, जिन्हें चुना गया था, उठे, नंगे बंदियों को लूट
सामग्री से निकालकर कपड़े पहनाए उन्हें जूतियां दी, उन्हें
वस्त्र पहनाकर उन्हें भोजन और पानी दिया, तेल से उनका
अभिषेक किया, उनके दुर्बलों को गधों पर चढ़ाया और उन्हें
खजूर नगर यानी येरीख़ो तक उनके भाइयों के पास छोड़
आए फिर वे शमरिया लौट गए.

16 तब राजा आहाज़ ने अश्शूर के राजा से सहायता की विनती
की.

17 एक बार फिर एदोमियों ने यहूदिया पर हमला किया और
बहुतों को बंदी बना लिया.

18 फिलिस्तीनियों ने भी तराई और यहूदिया के नेगेव पर चढ़ाई
करके बेथ-शेमेश, अय्जालोन, गदेरोथ और सोकोह का
उसके आस-पास के गांवों सहित, तिमनाह को उसके गांवों
सहित और गिमज़ो को उसके गांवों सहित कब्जे में कर लिया
और वे वहीं बस भी गए.

19 याहवेह द्वारा यहूदिया को इस दयनीय स्थिति में डाले जाने
के पीछे कारण थे यहूदिया के राजा आहाज़ की याहवेह के
प्रति बड़ी विश्वासहीनता और उसके द्वारा यहूदिया में लाई गई
दुष्टता.

20 तब अश्शूर का राजा तिगलथ-पलेसेर वहां आया ज़रूर,
मगर उसने आहाज़ की सहायता करने की बजाय उसे
सताया.

21 यद्यपि आहाज़ ने याहवेह के भवन से, राजघराने से और
प्रशासकों से धन लेकर अश्शूर के राजा को दे दी थी, इसका
कोई लाभ न हुआ.

22 अपनी इस विपत्ति की स्थिति में यही राजा आहाज़ ने कई
और बुरे पाप किये और याहवेह का और अधिक
अविश्वासयोग्य बन गया.

23 क्योंकि अब वह दमेशेक के देवताओं को बलि चढ़ाने लगा
था, जो वास्तव में उसकी हार के कारण थे. वह यह विचार
करने लगा, "जब ये देवता अराम के राजा की सहायता कर
सकते हैं तो, वे मेरी भी सहायता करेंगे." मगर ये ही इस्राएल
के पतन का कारण ठहरे.

24 इसके अलावा, आहाज़ ने परमेश्वर के भवन के सब बर्तनों
को इकट्ठा करके उन पात्रों के टुकड़े-टुकड़े कर दिये और
याहवेह के भवन का द्वार बंद करवा दिए. उसने येरूशलेम के
कोने-कोने में अपने लिए वेदियां बनवा लीं.

25 उसने यहूदिया के हर एक नगर में वेदियों को बनवाया, कि
इन पर अन्य देवताओं के लिए धूप जलाई जा सके. इसके द्वारा
उसने अपने पूर्वजों के परमेश्वर, याहवेह के क्रोध को भड़का
दिया.

26 आहाज़ के बाकी कामों और उसकी सारी नीतियों का वर्णन
शुरू से अंत तक, यहूदिया और इस्राएल के राजा की पुस्तक
में किया गया है.

27 तब आहाज़ हमेशा के लिए अपने पूर्वजों से जा मिला.
उन्होंने उसे येरूशलेम नगर में ही गाड़ दिया. उन्होंने उसे
इस्राएल के राजाओं के लिए ठहराई गई कब्रों में जगह नहीं
दी. उसके स्थान पर उसका पुत्र हिज़कियाह राजा हुआ.

2 Chronicles 29:1

1 जब हिज़कियाह राजा बना, उसकी उम्र पच्चीस साल थी.
येरूशलेम में उसने उनतीस साल शासन किया. उसकी माता
का नाम अबीयाह था, वह ज़करयाह की पुत्री थी.

2 उसने वही किया, जो याहवेह की दृष्टि में सही था. वैसा ही,
जैसा उसके पूर्वज दावीद ने किया था.

3 अपने शासन के पहले साल, पहले महीने में ही उसने याहवेह
के भवन के फाटक खोल दिए और उनमें ज़रूरी सुधार भी
किए.

4 उसने पुरोहितों और लेवियों को पूर्वी चौक में इकट्ठा किया.

5 राजा हिज़कियाह ने उन्हें कहा: “आप जो लेवी हैं ध्यान से
सुनिए! अब अपने आपको शुद्ध करो, याहवेह, अपने पूर्वजों
के परमेश्वर के भवन को पवित्र करो और पवित्र स्थान से
अशुद्धता को निकाल डालो.

6 हमारे पूर्वज सच्चे नहीं थे. उन्होंने वह सब किया, जो याहवेह,
हमारे परमेश्वर की दृष्टि में बुरा है. उन्होंने उनको त्याग दिया.
वे याहवेह के घर से दूर हो गए, और इसे पीठ ही दिखा दी है.

7 उन्होंने तो ओसारे के द्वार बंद कर दिए हैं, दीप बुझा दिए हैं
और इस्राएल के परमेश्वर के पवित्र स्थान पर धूप जलाना और
होमबलि चढ़ाना छोड़ रखा है.

8 इसलिये यहूदिया और येरूशलेम याहवेह के क्रोध के पात्र
हो गए; फलस्वरूप जैसा आप देख ही रहे हैं, याहवेह ने इन्हें
घृणा और आतंक का विषय बना दिया है.

9 आपने देखा कि हमारे पूर्वज तलवार से घात किए गए हैं और
हमारे पुत्र, पुत्रियों और पत्नियां इसके कारण बंदी बना ली गईं.

10 अब मेरी इच्छा यह है कि मैं याहवेह इस्राएल के परमेश्वर
के साथ एक वाचा बांधूं, कि उनका भड़का हुआ क्रोध हम पर
से हट जाए.

11 मेरे पुत्रों, अब उपेक्षा को त्याग दो, क्योंकि याहवेह ने तुम्हें
चुन लिया है कि तुम उनके सामने खड़े रहो, उनकी सेवा करो
और उनके सेवक होकर उनके सामने धूप जलाओ.”

12 यह सुनकर ये लेवी लोग सेवा के लिए: आगे आ गये कोहाथ
के वंशजों में से: आमासाई का पुत्र माहाथ और अज़रियाह का
पुत्र योएल; मेरारी के वंशजों में से: अबदी का पुत्र कीश और
येहालेलेल का पुत्र अज़रियाह; गेरशोन के वंशजों में से:
ज़िम्माह का पुत्र योआह और योआह का पुत्र एदेन;

13 एलिज़ाफ़ान के वंशजों में से: शिमरी और येइएल; आसफ
के वंशजों में से: ज़करयाह और मत्तनियाह;

14 हेमान के वंशजों में से: येहिएल और शिमेई; यदूथून के
वंशजों में से: शेमायाह और उज्ज़िएल.

15 इन सभी ने अपने भाइयों को इकट्ठा किया, अपने आपको
पवित्र किया और राजा के आदेश पर याहवेह के भवन को
शुद्ध करने के उद्देश्य से उसमें प्रवेश किया, कि याहवेह द्वारा
निर्धारित विधि से यह काम पूरा किया जाए.

2 Chronicles 29:1

16 तब पुरोहितों ने याहवेह के भवन के भीतरी कमरे में प्रवेश
किया, कि इसे शुद्ध करने का काम शुरू किया जाए. वहां
उन्होंने हर एक वस्तु को, जो स्वच्छ नहीं थी, याहवेह के भवन
से बाहर और याहवेह के भवन के आंगन में लाया; फिर लेवी
इन्हें किद्रोन घाटी में ले गए.

17 पहले महीने के पहले दिन उन्होंने पवित्र करने का काम
शुरू कर दिया. महीने के आठवें दिन उन्होंने याहवेह के
ओसारे में प्रवेश किया. इसके बाद याहवेह के भवन को
उन्होंने अगले आठ दिनों में पवित्र किया और पहले महीने के
सोलहवें दिन सारा काम पूरा हो गया.

18 तब वे राजा हिज़किय्याह के सामने गए और उन्होंने बताया,
हमने याहवेह के पूरे भवन को शुद्ध कर दिया है, होमबलि की
वेदी, उससे संबंधित सारे बर्तन, भेंट की रोटी की मेज़ और
उससे संबंधित सारे बर्तन.

19 इसके अलावा, वे सारे बर्तन, जिन्हें राजा आहाज़ ने अपने
विश्वासघात में अपने शासनकाल में फेंक दिए थे, हमने ठीक
कर शुद्ध कर दिए हैं. आप देख लीजिए, ये सभी याहवेह की
वेदी के सामने रखे हुए हैं.

20 अगले दिन राजा हिज़किय्याह सुबह-सुबह उठा, नगर के
शासकों को इकट्ठा किया और वे सभी याहवेह के भवन को
गए.

21 वे अपने साथ सात बछड़े, सात मेढ़े, सात मेमने और सात
बकरे ले गए, कि वे अपने राज्य के लिए, पवित्र स्थान के लिए
और यहूदिया के लिए बलि चढ़ाएं. राजा ने अहरोन के वंशज
पुरोहितों को आदेश दिया कि वे इन्हें याहवेह की वेदी पर
चढ़ाएं.

22 तब बछड़ों का वध किया गया और पुरोहितों ने उनका लहू
वेदी पर छिड़का; उन्होंने मेढ़ों का भी वध किया और उनका
लहू भी वेदी पर छिड़क दिया; उन्होंने मेमनों का भी वध किया
और उनका लहू वेदी पर छिड़क दिया.

23 तब वे पापबलि के लिए राजा और सभा के सामने पापबलि
के लिए ठहराए गए बकरे लेकर आए और उन पर अपने हाथ
रखे.

24 पुरोहितों ने उनका वध किया, उनके लहू को वेदी पर
छिड़का कि सारे इस्राएलियों के लिए प्रायश्चित किया जाए,
क्योंकि राजा का आदेश था कि होमबलि और पापबलि सारे
इस्राएल के लिए चढ़ाई जाए.

25 इसके बाद उसने, याहवेह के भवन में दावीद, और राजा
का दर्शी गाद और भविष्यद्वक्ता नाथान के आदेश के अनुसार
झांझ, सारंगी और वीणाओं के लिए लेवी चुने, क्योंकि यह
भविष्यवक्ताओं द्वारा घोषित याहवेह की आज्ञा थी.

26 दावीद द्वारा बनवाए वाद्य लिए हुए लेवी खड़े थे और
पुरोहित नरसिंगे.

27 इसी समय हिज़किय्याह ने आदेश दिया कि वेदी पर
होमबलि चढ़ाई जाए. जब होमबलि चढ़ाना शुरू हुई, नरसिंगों
की आवाजों के साथ याहवेह के लिए स्तुतिगान भी शुरू हो
गया. इनके अलावा इस्राएल के राजा दावीद द्वारा बनवाए वाद्य
भी बजाए जा रहे थे.

28 सारी सभा आराधना में लीन थी, गायक गा रहे थे और
नरसिंगे बजाए जा रहे थे. यह सब उस समय तक होता रहा
जब तक होमबलि का काम पूरा न हो गया.

29 होमबलि खत्म हो जाने पर राजा और उसके साथ उपस्थित
सभी व्यक्तियों ने झुककर आराधना की.

30 इसके अलावा राजा हिज़किय्याह और उपस्थित
अधिकारियों ने आदेश दिया, कि दावीद और दर्शी आसफ की
गीत रचनाओं द्वारा लेवी याहवेह की स्तुति करें. तब उन्होंने
बड़ी खुशी से स्तुति की और झुक-झुक कर आराधना की.

31 यह होने पर हिज़किय्याह ने उन्हें कहा, “अब इसलिये कि
आप लोगों ने स्वयं को याहवेह के लिए पवित्र कर लिया है,”
निकट आकर याहवेह के भवन में बलि और धन्यवाद की भेंट
चढ़ाइए. तब सारी सभा बलियां और धन्यवाद की भेंटें लेकर
आ गई और जिन्होंने चाहा वे होमबलियां चढ़ाने आ गए.

32 सभा द्वारा चढ़ाई गई होमबलियों की गिनती उस दिन इस
तरह थी: सत्तर बछड़े, सौ बैल, और दो सौ मेमने. ये सभी पशु
याहवेह को होमबलि के लिए थे.

33 शुद्ध किए हुए पशुओं की संख्या इस प्रकार थी: छः सौ बैल
और तीन हज़ार भेड़ें.

34 मगर इनके लिए पुरोहितों की संख्या कम साबित हुई
फलस्वरूप होमबलि के पहले पशुओं की खाल उतारना
संभव न हो सका. इसलिये लेवी आकर इसमें उनकी सहायता
तब तक करते रहे, जब तक यह काम खत्म न हो गया और
जब तक बाकी पुरोहितों ने अपने आपको शुद्ध न कर लिया.
क्योंकि यह देखा गया कि स्वयं को शुद्ध करने के लिए
पुरोहितों की तुलना में लेवी अधिक सीधे मन के थे.

35 बड़ी संख्या में होमबलि के अलावा वहां मेल बलि में से बची
रह गई चर्बी और पेय बलि भी थी. इस प्रकार याहवेह के भवन
में आराधना दोबारा शुरू की गई.

36 हिज़कियाह और सारी प्रजा बहुत ही खुश थी कि परमेश्वर
ने बहुत ही जल्दी उनके लिए यह सब कर दिया था.

2 Chronicles 30:1

1 हिज़कियाह ने सारे इस्राएल, यहूदिया, एफ्राईम और
मनश्शेह के लिए एक संदेश भेजा, कि वे येरूशलेम में याहवेह
के भवन में याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर के सम्मान में फ़सह
उत्सव मनाने आएं.

2 राजा, उसके शासक और सारी सभा ने येरूशलेम में
मिलकर एक मत से यह निर्णय लिया था, कि फ़सह उत्सव
दूसरे महीने में मना लिया जाए.

3 क्योंकि वे इसे इसके नियत समय पर मना नहीं सके थे.
इसका कारण यह था, कि पर्याप्त संख्या में पुरोहित अपने
आपको शुद्ध न कर सके थे. इसके अलावा, प्रजाजन
येरूशलेम में इकट्ठा भी न हो सके थे.

4 तब राजा और समस्त प्रजा के मत में यही एक सही निर्णय
था.

5 तब उन्होंने सबको बताने के उद्देश्य से एक राज आज्ञा तैयार
की, कि सारे इस्राएल में, बेअरशेबा से दान तक सभी इस्राएल
के परमेश्वर याहवेह के सम्मान में फ़सह उत्सव मनाने
येरूशलेम आएं, क्योंकि जैसा कि लिखा था फ़सह उत्सव अब
तक राष्ट्रीय स्तर पर मनाया नहीं गया था.

6 समस्त इस्राएल और यहूदिया में दूत राजा और उसके
प्रशासकों के हाथ से लिखे हुए पत्र लेकर भेजे गए. राजा का
आदेश इस प्रकार था: "इस्राएल की संतान, अब्राहाम,
यित्सहाक और इस्राएल के याहवेह परमेश्वर की ओर लौट
आओ, कि वह भी तुममें से उनकी ओर लौट सकें, जो अराम
के राजाओं के वार से बच निकले थे.

7 अपने पूर्वजों और अपने भाई-बंधुओं के समान न बनो, जो
अपने पूर्वजों के परमेश्वर, याहवेह के प्रति विश्वासहीन हो गए
थे; जिसका परिणाम, जैसा तुम देख ही रहे हो, याहवेह ने तुम्हें
घृणा का, आतंक का पात्र बना दिया है.

8 इसलिये अब अपने पूर्वजों के समान हठी न बनो बल्कि
अपने याहवेह के सामने विनम्र हो जाओ और उनके पवित्र
स्थान में प्रवेश करो, जिसे उन्होंने हमेशा के लिए शुद्ध कर
दिया है. याहवेह अपने परमेश्वर की सेवा करो, कि उनका
भड़का हुआ क्रोध तुम पर से दूर हो जाए.

9 क्योंकि यदि तुम याहवेह की ओर हो जाओ, तो तुम्हारे भाई-
बन्धु और तुम्हारी संतान को उनकी ओर से कृपा मिल जाएगी,
जो उन्हें बंदी बनाकर ले गए हैं. तब वे अपने देश लौट सकेंगे.
क्योंकि याहवेह तुम्हारे परमेश्वर कृपालु और करुणामय हैं.
यदि तुम उनकी ओर लौटेंगे, वह तुमसे अपना मुख फेर न
लेंगे."

10 तब दूत नगर-नगर घूमकर संदेश देते गए. वे एफ्राईम और
मनश्शेह तक गए-यहां तक कि ज़ेबुलून तक भी किंतु लोग
उनका मज़ाक उड़ाकर उन पर हंसते रहे.

11 फिर भी, आशेर, मनश्शेह और ज़ेबुलून के कुछ व्यक्तियों
ने अपने आपको नम्र किया और वे येरूशलेम आए.

12 यहूदिया पर भी परमेश्वर का प्रभाव कुछ इस प्रकार था कि
उन्होंने सच्चाई में राजा और शासकों द्वारा भेजे याहवेह के
आदेश को स्वीकार किया.

13 दूसरे महीने में बड़ी संख्या में लोग येरूशलेम में अखमीरी
रोटी के उत्सव को मनाने के लिए इकट्ठा हुए थे. यह बहुत ही
बड़ा जनसमूह था.

2 Chronicles 31:1

14 वे सभी एकजुट हुए और येरूशलेम में जो वेदियां बनी हुई
थी उन्हें, और सारी धूप वेदियों को उठाकर किद्रोन नाले में
फेंक आए.

15 इसके बाद उन्होंने दूसरे महीने के चौदहवें दिन फ़सह के
मेमनों का वध किया. पुरोहितों और लेवियों के लिए यह लज्जा
का विषय हो गया, तब उन्होंने स्वयं को शुद्ध किया और
याहवेह के भवन में वे होमबलि ले आए.

16 वे अपने ठहराए गए स्थानों पर खड़े हो गए, जैसा परमेश्वर
के जन मोशेह द्वारा बताया गया था. पुरोहित उस लहू का
छिड़काव करते जा रहे थे, जो उन्हें लेवियों द्वारा सौंपा जा रहा
था.

17 यह इसलिये कि सभा में ऐसे अनेक थे, जिन्होंने स्वयं को
शुद्ध नहीं किया था. तब लेवियों के लिए यह ज़रूरी हो गया था
कि हर एक अशुद्ध व्यक्ति के लिए फ़सह मेमना वध किया
जाए और वे याहवेह के लिए शुद्ध हो जाएं.

18 एफ्राईम, मनश्शेह, इस्साखार और ज़ेबुलून प्रदेशों से आए
लोगों में एक बड़ी संख्या उनकी थी, जिन्होंने अपने आपको
शुद्ध नहीं किया था. उन्होंने व्यवस्था तोड़ते हुए फ़सह भोज
को ग्रहण कर लिया था, मगर हिज़किय्याह ने उनके लिए यह
प्रार्थना की, “महान याहवेह ऐसे हर एक व्यक्ति को क्षमा करें,

19 जिसने अपने मन को परमेश्वर, अपने पूर्वजों के याहवेह की
खोज करने के लिए तैयार कर लिया है, यद्यपि उसने अपने
आपको पवित्र स्थान के नियमों के अनुसार शुद्ध नहीं किया
है.”

20 तब याहवेह ने हिज़किय्याह की विनती सुनी और लोगों को
दोबारा स्वस्थ कर दिया.

21 इस्राएल के वंशजों ने, जो इस समय येरूशलेम में थे, सात
दिन तक बड़े आनंद के साथ अखमीरी रोटी का उत्सव
मनाया. लेवी और पुरोहित दिन-प्रतिदिन वाद्यों की आवाजों
की संगत पर याहवेह की स्तुति करते रहते थे.

22 हिज़किय्याह ने उन सभी लेवियों के प्रोत्साहन में प्रशंसा के
शब्द कहे, जिन्होंने याहवेह से संबंधित विषयों में बुद्धिमानी
का परिचय दिया था. तब वे निर्धारित पर्व के सात दिनों तक
फ़सह भोज करते रहे, मेल बलि चढ़ाते रहे और अपने पूर्वजों
के परमेश्वर याहवेह के प्रति धन्यवाद देते रहे.

23 उपस्थित सारी भीड़ ने यह निर्णय लिया कि इस उत्सव को
सात दिन और मनाया जाए. तब बहुत ही खुशी से उन्होंने सात
दिन इस उत्सव को मनाया.

24 इस उत्सव के लिए राजा हिज़किय्याह ने एक हज़ार बछड़े
और सात हज़ार भेड़े दान में दी थी. शासन अधिकारियों ने एक
हज़ार बछड़े और दस हज़ार भेड़े दान में दीं. बड़ी संख्या थी
उन पुरोहितों की, जिन्होंने अपने आपको शुद्ध किया था.

25 यहूदिया की सारी सभा पुरोहितों और लेवियों के साथ
आनंद मनाने में मगन थी. इनके अलावा इनमें वे भी थे, जो
इस्राएल से यहां आए थे, और इस्राएल से और यहूदिया से आए
हुए विदेशी भी.

26 सारा येरूशलेम इन दिनों में खुशी में डूबा था, क्योंकि
येरूशलेम में ऐसा समारोह इस्राएल के राजा दावीद के पुत्र
शलोमोन के शासनकाल से अब तक देखा न गया था.

27 तब लेवी और पुरोहित उठ खड़े हुए और उन्होंने सारी सभा
के लोगों के लिए आशीर्वाद दिए. उनकी विनती सुनी गई.
उनकी विनती याहवेह के घर, स्वर्ग पहुंच गई.

2 Chronicles 31:1

1 यह सब होने के बाद वहां उपस्थित इस्राएल के सारे वंशज
यहूदिया के नगरों में जा पहुंचे और वहां उन्होंने पूजा की जगह
हटा दीं, पूजा के खंभे तोड़ दिए और अशेराह के खंभे भी ध्वस्त
कर दिए, जो यहूदिया, बिन्यामिन, एफ्राईम और मनश्शेह
प्रदेश में बनाई गई थी. उन्होंने हर एक वेदी ढाह दी, एक भी
बाकी न रही. यह करके सभी इस्राएल वंशज अपने-अपने
नगर, अपनी स्वयं की भूमि पर लौट गए.

2 राजा हिज़किय्याह ने पुरोहितों और लेवियों के संगठन को
व्यवस्थित किया. इनके अंतर्गत हर एक के लिए ज़िम्मेदारियां
तय कर दी गईं. इन ज़िम्मेदारियों में शामिल था होमबलि
चढ़ाना, मेल बलि चढ़ाना, सेवा करना, याहवेह के प्रति
धन्यवाद करना, याहवेह की छावनी के द्वार में उनकी स्तुति
करना.

2 Chronicles 31:1

3 राजा ने यह भी तय किया कि उसकी संपत्ति में से होमबलि
के लिए कितना भाग दिया जाएगा यानी सुबह और शाम की
होमबलि और शब्बाथ के लिए, नए चांद के लिए और निश्चित
उत्सवों के लिए, जैसा याहवेह की व्यवस्था में लिखा है.

4 उसने येरूशलेम वासियों को आदेश दिया कि वे पुरोहितों
और लेवियों के लिए निर्धारित अंश दिया करें कि पुरोहित और
लेवी याहवेह की व्यवस्था पर अपना ध्यान लगा सकें.

5 जैसे ही यह आदेश दिया गया, इस्राएल के वंशज भारी मात्रा
में अन्न की पहली उपज, नया अंगूर का रस, तेल, शहद और
खेतों की उपज लेकर आने लगे. इसके अलावा वे बड़ी मात्रा
में इन सबका दसवां अंश भी लाने लगे.

6 इस्राएल और यहूदाह के वे वंशज, जो यहूदिया के नगरों में
रह रहे थे, उन्होंने तो बछड़ों और भेड़ों में से भी दसवां अंश
भेंट किया और याहवेह उनके परमेश्वर के लिए अलग की गई
भेंटे लेकर आए इन्हें एक ढेर के रूप में वहां इकट्ठा कर दिया.

7 तीसरे महीने में इनका ढेर लगाना शुरू हुआ और इसका
अंत सातवें महीने में ही हो सका.

8 जब हिज़कियाह और शासकों ने आकर इन ढेरों को देखा,
उन्होंने याहवेह की स्तुति की और उनकी प्रजा इस्राएल की
प्रशंसा की.

9 तब हिज़कियाह ने पुरोहितों और लेवियों से इन ढेरों का
कारण जानना चाहा;

10 सादोक परिवार से प्रमुख पुरोहित अज़रियाह ने राजा को
उत्तर दिया, "जब से याहवेह के भवन में भेंटें लाने लगे हैं, हमारे
लिए भोजन की सामग्री बहुत हो गई है. यह सब बचा हुआ है
क्योंकि याहवेह ने अपनी प्रजा को आशीष दी है; इतनी, कि
बचे हुए भाग की यह बड़ी मात्रा रह गई है."

11 तब हिज़कियाह ने आदेश दिया कि इसके लिए याहवेह के
भवन परिसर में कुछ कमरे तैयार किए जाएं. तब कक्ष तैयार
किए गए.

12 प्रजा बड़ी विश्वासयोग्यता से दान, दसवां अंश और पवित्र
वस्तुएं लेकर आती थी. इनका अधिकारी था लेवी केनानियाह
और उसका सहायक था उसका भाई शिमेई.

13 केनानियाह और उसके भाई को राजा ने चुना था. इनके
अधिकार में ये अधिकारी थे येहिएल, अज़रियाह, नाहाथ,
आसाहेल, येरीमोथ, योज़ाबाद, एलिएल, इसमाखियाह,
माहाथ और बेनाइयाह. अज़रियाह परमेश्वर के भवन का
प्रधान अधिकारी था.

14 पूर्वी द्वार का द्वारपाल इमनाह का पुत्र लेवी कोरे परमेश्वर
को चढ़ाई गई स्वेच्छा भेंटों का अधिकारी था, कि वह पवित्र
वस्तुओं और याहवेह को दी गई भेंटों को बांटें.

15 उसके सहायक थे एदेन, मिनियामिन, येशुआ, शेमायाह,
अमरियाह और शेकानियाह. इन्हें काम करना होता था.
पुरोहितों के नगरों में और इनका काम था अपने भाई-बंधुओं
में पूरी विश्वासयोग्यता में सामान्य या विशेष में उनके दल के
अनुसार उनके लिए ठहराया गया भाग बांट देना.

16 इसके अलावा, वे उन पुरुषों को, जिनकी उम्र तीन साल या
इससे अधिक थी, जिनके नाम वंशावली में लिखे थे, वे सभी,
जो अपने विभिन्न दैनिक कार्य करने के लिए अपने दल के
अंतर्गत अपनी-अपनी ज़िम्मेदारियों के अनुसार याहवेह के
भवन में प्रवेश किया करते थे, उनका भाग बांट देते थे.

17 पुरोहितों का नामांकन उनके कुलों के आधार पर और
लेवियों का उनकी ज़िम्मेदारियों के आधार पर और उनके
दलों के आधार पर उनका, जो बीस साल से अधिक उम्र के
थे.

18 वंशावली में सभी शामिल किए गए थे. सभी संतान, पत्नी,
पुत्र एवं पुत्रियां. सारी सभा का नामांकन किया गया था क्योंकि
हर एक ने अपने को पूरी सच्चाई से शुद्ध किया था.

19 अहरोन के वंशज उन पुरोहितों के लिए भी, जो अपने-अपने
नगरों में निवास कर रहे थे अथवा जो किसी भी नगर में निवास
कर रहे थे, वे व्यक्ति नामित कर दिए गए थे, जो इन पुरोहितों
को और वंशावली में शामिल लेवियों को उनके लिए निर्धारित
अंश बांटा करेंगे.

20 हिज़कियाह ने संपूर्ण यहूदिया में यही प्रणाली लागू कर दी.
उसने वही सब किया, जो याहवेह, उसके परमेश्वर की दृष्टि में
भला, ठीक और सच्चा था.

21 हर एक काम, जो उसने व्यवस्था और आदेशों के अनुसार
परमेश्वर के भवन के हित में किया, जिसमें उसने परमेश्वर की
इच्छा मालूम की, उसने सभी कुछ अपने पूरे मन से ही किया
और हमेशा ही समृद्ध होता गया.

2 Chronicles 32:1

1 पूरी विश्वासयोग्यता में हुए इन कामों के पूरा होने पर अश्शूर
के राजा सेनहेरीब ने यहूदिया पर हमला कर दिया और उसने
गढ़ नगरों को घेर लिया. उसकी योजना इन्हें अपने अधिकार
ले लेने की थी.

2 जब हिज़कियाह ने यह देखा कि सेनहेरीब निकट आ गया
है और उसका लक्ष्य येरूशलेम पर हमला करने का है,

3 अपने अधिकारियों और योद्धाओं के साथ उसने योजना की
कि नगर के बाहर के झरनों से जल की आपूर्ति काट दी जाए.
इसमें उन्होंने उसकी सहायता की.

4 इसके लिए बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा हो गए. उन्होंने वे सारे
झरने और जल के सोते बंद कर दिए, जो उस क्षेत्र से बह रहे
थे. उनका विचार था, “भला क्यों अश्शूर के राजा यहां आकर
भारी जल प्राप्त करें?”

5 तब हिज़कियाह ने बड़े साहस के साथ सारी टूटी पड़ी
शहरपनाह को दोबारा बनवाया, इन पर पहरेदारों की मचानों
को बनवाया. इसके अलावा उसने एक और बाहरी
शहरपनाह को बनवाया, दावीद के नगर में उसने छतों को
मजबूत किया. तब उसने बड़ी मात्रा में हथियारों और ढालों को
बनवाया.

6 उसने लोगों के ऊपर सैन्य अधिकारी रख दिए और उन्हें
नगर द्वार के चौक पर इकट्ठा कर उन्हें प्रोत्साहित करते हुए
कहा:

7 “मजबूत और साहसी बनो. अश्शूर के राजा के कारण न तो
भयभीत हो, और न ही कमजोर बनो और न ही उनका विचार
करो, जो बड़ी सेना उसके साथ आई हुई है; क्योंकि वह जो
हमारे साथ है, उससे महान है, जो उसके साथ है.

8 उसके साथ तो सिर्फ मानवीय हाड़-मांस का हाथ है, किंतु
हमारे साथ हैं हमारी सहायता के लिए याहवेह हमारे परमेश्वर
कि वह हमारे युद्ध लड़े.” प्रजा ने यहूदिया के राजा
हिज़कियाह की बातों का विश्वास किया.

9 कुछ समय बाद अश्शूर के राजा सेनहेरीब ने येरूशलेम को
अपने दूत भेजे. इस समय वह अपनी सारी सेनाओं के साथ
लाकीश नगर पर घेरा डाले हुए था. उसका संदेश यहूदिया के
राजा हिज़कियाह और येरूशलेम में पड़ाव डाली हुई
यहूदिया की सेना के लिए यह था:

10 “अश्शूर के राजा सेनहेरीब का संदेश यह है: ऐसा क्या है
जिस पर तुम भरोसा किए हुए येरूशलेम के घिरे हुए होने पर
भी बैठे हो?

11 क्या यह सच नहीं है कि, हिज़कियाह तुम सभी को यह
कहते छलावे में रखे हुए है, ‘याहवेह हमारे परमेश्वर ही हमें
अश्शूर के राजा से छुटकारा दिलाएंगे,’ कि वह तुम्हें भूख और
प्यास की मृत्यु को सौंप दे?

12 क्या यह वही हिज़कियाह नहीं है, जिसने ऊंचे स्थानों की
वेदियों को गिराते हुए यहूदिया और येरूशलेम को कहा था,
‘वेदी एक ही है, तुम्हें जिसके सामने आराधना करना और धूप
जलाना है’?

13 “क्या तुम जानते नहीं कि मैंने और मेरे पूर्वजों ने दूसरे देशों
के लोगों के साथ क्या-क्या किया है? क्या किसी भी देश के
देवताओं में यह क्षमता थी कि उन्हें मेरी शक्ति से सुरक्षित रख
सके?

14 मेरे पूर्वजों द्वारा नाश किए गए राष्ट्रों के उन सभी देवताओं
में ऐसा कौन था जो उन्हें मुझसे सुरक्षा प्रदान करेगा?

15 अब हिज़कियाह न तो तुमसे छल कर सके और न तुम्हें
इस तरह भटकाए. तुम उसका विश्वास ही मत करो. क्योंकि
किसी भी राष्ट्र का कोई भी देवता अपनी प्रजा को न तो मुझसे
और न मेरे पूर्वजों से बचा सका है, तो फिर कैसे हो सकता है
कि तुम्हारा परमेश्वर मेरे हाथों से तुम्हारी रक्षा कर सके!”

2 Chronicles 32:1

16 उसके दूत याहवेह परमेश्वर और उनके सेवक हिज़कियाह
के विरुद्ध बातें करते रहें.

17 सेनहेरीब ने याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर के प्रति
अपमानजनक पत्र भी भेजे. इनमें उसने यह लिखा था, "जैसा
विभिन्न देशों के देवता उन्हें मुझसे सुरक्षा प्रदान करने में
असफल रहे हैं, वैसे ही हिज़कियाह का परमेश्वर भी उसके
लोगों को मुझसे सुरक्षा देने में असफल रहेगा."

18 उन्होंने यह संदेश ऊंची आवाज में येरूशलेम के उन लोगों
को, जो इस समय शहरपनाह पर यह सब सुन रहे थे,
यहूदियावासियों ही की भाषा में पढ़ सुनाया, कि वे इसके द्वारा
उन्हें भयभीत और निराश कर दें और वे नगर पर अधिकार
कर लें.

19 उन्होंने यह कहते हुए येरूशलेम के परमेश्वर को पृथ्वी के
दूसरे राष्ट्रों के देवताओं के बराबर रख दिया था, जो देवता स्वयं
उन्हीं के हाथों की रचना थे.

20 राजा हिज़कियाह और आमोज़ के पुत्र भविष्यद्वक्ता
यशायाह ने इस विषय पर प्रार्थना की और स्वर्ग की दोहाई दी.

21 तब याहवेह ने एक ऐसा स्वर्गदूत भेजा, जिसने अश्शूर राजा
की छावनी में जाकर हर एक वीर योद्धा, प्रधान और
अधिकारी को मार दिया. तब सेनहेरीब घोर लज्जा में अपने
देश को लौट गया. वहां पहुंचकर जब अपने देवता के मंदिर
में गया, उसी के कुछ पुत्रों ने उसे तलवार से घात कर दिया.

22 इस प्रकार याहवेह ने हिज़कियाह और येरूशलेम
निवासियों को अश्शूर के राजा सेनहेरीब और अन्यों के वार से
सुरक्षा प्रदान की और उन्हें चारों ओर से सुरक्षा दी.

23 अनेक-अनेक याहवेह के लिए भेंटें लेकर येरूशलेम आने
लगे. वे यहूदिया के राजा हिज़कियाह के लिए उत्तम भेंटें ला
रहे थे. इससे इसके बाद सभी राष्ट्रों की दृष्टि में हिज़कियाह
की प्रतिष्ठा बहुत ही बढ़ती चली गई.

24 कुछ समय बाद हिज़कियाह घातक रोग से बीमार हो गया.
उसने याहवेह से विनती की और याहवेह ने उससे बातें करते
हुए उसे चिन्ह दिया.

25 मगर घमण्ड़ में हिज़कियाह ने इस उपकार का कोई
बदला न दिया. उसका मन फूल चुका था. इसलिये उस पर
और यहूदिया और येरूशलेम पर याहवेह का क्रोध टूट पड़ा.

26 तब हिज़कियाह ने अपने हृदय को नम्र किया, उसने और
येरूशलेम वासियों ने; फलस्वरूप याहवेह का प्रकोप
हिज़कियाह के जीवनकाल में हावी न हुआ.

27 हिज़कियाह अब बहुत धनी और प्रतिष्ठित हो चुका था.
उसने अपने लिए चांदी, सोने, रत्नों, मसालों, ढालों और सभी
प्रकार की कीमती सामग्री के रखने के लिए भंडार बनवाए.

28 उसने अनाज, अंगूर के रस और तेल रखने के लिए भंडार-
घर बनाए और पशुओं और भेड़ों के लिए पशु-शालाएं और
भेड़-शालाएं बनवाई.

29 उसने अपने लिए नगर बनवाए और पशु और भेड़ें बड़ी
संख्या में इकट्ठा कर ली, क्योंकि परमेश्वर ही ने उसे यह बड़ी
सम्पन्नता दी थी.

30 यह हिज़कियाह ही का काम था, जो उसने गीहोन नदी के
ऊपर के सोते को बंद कर बहाव को दावीद के नगर के
पश्चिमी ओर मोड़ दिया था. हिज़कियाह जिस किसी काम को
शुरू करता था, उसमें वह सफल होता था.

31 बाबेल के शासकों के राजदूत उससे उसके अद्‌धुत कामों
के बारे में जानने के लिए भेजे गए थे. परमेश्वर ने उसे अकेला
इसलिये छोड़ दिया था कि वह उसको परखें, कि वह पहचान
जाएं कि हिज़कियाह के हृदय में हकीकत में है क्या.

32 हिज़कियाह द्वारा किए गए बाकी कामों का और उसके
श्रद्धा के कामों का वर्णन आमोज़ के पुत्र यशायाह
भविष्यद्वक्ता के दर्शन और राजा नामक पुस्तक में किया गया
है.

33 हिज़कियाह हमेशा के लिए अपने पूर्वजों से जा मिला.
उन्होंने उसके शव को दावीद के पुत्रों की कब्रों के ऊंचे भाग
में रख दिया. उसकी मृत्यु के अवसर पर सारे यहूदिया और
येरूशलेम वासियों ने उसे सम्मानित किया. उसके स्थान पर
उसका पुत्र मनश्शेह राजा हो गया.

2 Chronicles 33:1

2 Chronicles 33:1

1 शासन शुरू करते समय मनश्शेह की उम्र बारह साल थी.
येरूशलेम में उसने पचपन साल शासन किया.

2 उसने वही किया, जो याहवेह की दृष्टि में गलत था, वही सभी
जो उन जनताओं के समान घृणित था, जिन्हें याहवेह ने
इस्राएल के सामने से निकाल दिया था.

3 उसने उन सभी ऊंचे स्थानों को दोबारा बनवा दिया, जो
उसके पिता हिज़कियाह द्वारा गिराए गए थे. उसने बाल के
लिए वेदियां और अशेराहें बनाईं. उसने आकाश के सभी तारों
और नक्षत्रों की पूजा करनी भी शुरू कर दी.

4 उसने याहवेह के उसी भवन में अनेकों वेदियां बनवा दीं,
जिस भवन के बारे में याहवेह कह चुके थे, "येरूशलेम में मेरा
नाम हमेशा के लिए रहेगा."

5 उसने याहवेह के ही भवन के दो आंगनों में आकाशमंडल
के सारे नक्षत्रों के लिए वेदियां बनवाई.

6 बेन-हिन्नोम की घाटी में उसने अपने पुत्रों को आग में से
होकर निकलने की प्रथा पूरी कराई थी. वह मोहिनी, शकुन
विचारने वालों, प्रेत-सिद्धियों से व्यवहार रखता था. उसने
याहवेह की दृष्टि में बड़ी बुराई करते हुए उनके क्रोध को
भड़का दिया.

7 उसने मूर्ति की प्रतिष्ठा उस भवन में कर दी, जिसके विषय में
परमेश्वर ने दावीद और उनके पुत्र शलोमोन से यह कहा था,
"मैं इस भवन में और येरूशलेम नगर में, जिसे मैंने इस्राएल
के सारे गोत्रों में से चुन लिया है, हमेशा के लिए अपना नाम
स्थापित करूंगा,

8 यदि केवल वे उन सभी आदेशों का पालन करें, जो मोशेह
द्वारा दी हुई विधियों, आज्ञाओं और नियमों के अनुसार हैं, मैं
उस भूमि से इस्राएल के पग अलग न होने दूंगा, जो भूमि मैंने
तुम्हारे पूर्वजों के लिए ठहराई है."

9 इस प्रकार मनश्शेह ने यहूदिया और येरूशलेम वासियों को
भटका दिया कि वे उन राष्ट्रों से भी भयंकर पापों में लग जाएं,
जिनको याहवेह ने इस्राएल वंशजों के सामने से खत्म कर
दिया था.

10 याहवेह ने मनश्शेह और उसकी प्रजा से बातें की, मगर
किसी ने भी उनकी ओर ध्यान न दिया.

11 तब याहवेह ने अश्शूर के राजा की सेना के सेनापति उस
पर हमला करने के लिए भेजे. उन्होंने मनश्शेह को नकेल
डालकर पकड़ा, कांसे की बेड़ियों से बांधकर उसे बाबेल ले
गए.

12 जब वह इस दुःख में पड़ा था उसने याहवेह अपने परमेश्वर
से प्रार्थना की, उसने अपने आपको अपने पूर्वजों के परमेश्वर
के सामने बहुत ही नम्र बना लिया.

13 जब उसने याहवेह से प्रार्थना की, याहवेह उसकी प्रार्थना से
पिघल गए और उन्होंने उसकी विनती को स्वीकार किया और
वह उसे उसके राज्य में ही येरूशलेम लौटा ले आए. इससे
मनश्शेह को मालूम हो गया कि याहवेह ही परमेश्वर है.

14 यह होने पर उसने घाटी गीहोन के पश्चिमी ओर दावीद के
नगर की बाहरी शहरपनाह को बनवाया, जो मछली फाटक
तक बनाई गई थी. उसने इससे ओफेल को घेरकर बहुत ऊंचा
बना दिया. इसके बाद उसने यहूदिया के सभी गढ़ नगरों में
सेनापति ठहरा दिए.

15 याहवेह के भवन से उसने वह मूर्ति और पराए देवता हटा
दिए. साथ ही वे सारी वेदियां भी, जो उसने याहवेह के भवन के
पर्वत पर और येरूशलेम में बनाई गई थी. इन्हें उसने नगर के
बाहर फेंक दिया.

16 उसने याहवेह की वेदी दोबारा से बनवाई और उस पर मेल
बलि और धन्यवाद बलि चढ़ाईं. उसने सारे यहूदिया में यह
आदेश दे दिया कि सेवा-आराधना सिर्फ इस्राएल के परमेश्वर
याहवेह की ही की जाए.

17 फिर भी लोग ऊंची जगहों पर ही बलि चढ़ाते रहे हालांकि
यह वे याहवेह अपने परमेश्वर ही को चढ़ा रहे होते थे.

18 मनश्शेह के बाकी कामों का वर्णन, यहां तक कि परमेश्वर
से की गई उसकी प्रार्थना, इस्राएल के परमेश्वर याहवेह द्वारा
भेजे दर्शियों के वचन, जिन्होंने उससे बातें की, यह सब
इस्राएल के राजाओं की पुस्तक में किया गया है.

19 उसके द्वारा की गई प्रार्थना, किस प्रकार उसकी प्रार्थना से
परमेश्वर पिघल गए, उसके द्वारा किए गए पाप, उसका
विश्वासघात, उसके द्वारा ऊंचे स्थानों पर बनाई वेदियां,
अशेराह देवियां, खोदकर गढ़ी हुई मूर्तियां, सब कुछ जो उसने
नम्र होने के पहले किया था, इन सभी का वर्णन होत्साई के
प्रलेख में मिलता है.

20 मनश्शेह हमेशा के लिए अपने पूर्वजों में जा मिला. उन्होंने
उसे उसी के घर में गाड़ दिया. उसके स्थान पर उसका पुत्र
अमोन राजा हो गया.

21 राजा बनने के अवसर पर अमोन की उम्र बाईस साल थी.
येरूशलेम में उसने दो साल शासन किया.

22 उसने वह किया, जो याहवेह की दृष्टि में बुरा है, जैसा उसके
पिता ने भी किया था. अमोन अपने पिता द्वारा बनाई गई और
सभी खोदी गई मूर्तियों के लिए बलि चढ़ाता रहा और वह
उनकी सेवा भी करता रहा.

23 जैसा उसके पिता ने याहवेह के सामने अपने आपको नम्र
किया था, उसने ऐसा नहीं किया, बल्कि अमोन अपने ऊपर
दोष इकट्ठा करता चला गया.

24 उसके सेवकों ने उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचा और उसी के
घर में उसका वध कर दिया.

25 मगर प्रजाजनों ने उन सभी की हत्या कर दी, जिन्होंने राजा
अमोन के विरुद्ध षड्यंत्र रचा था. उन्होंने उसके स्थान पर
उसके पुत्र योशियाह को राजा बनाया.

2 Chronicles 34:1

1 योशियाह के राजा बनने के समय उसकी उम्र आठ साल की
थी और उसने येरूशलेम में एकतीस साल शासन किया.

2 उसने वह किया, जो याहवेह की दृष्टि में सही था. अपने पूर्वज
दावीद के नीतियों के पथ का आचरण करता रहा. वह इनसे
न तो दाएं मुड़ा और न बाएं.

3 कारण यह था कि अपने शासनकाल के आठवें साल में ही
उसने अपने पूर्वज दावीद के परमेश्वर की खोज करना शुरू
कर दिया. अपने शासनकाल के बारहवें साल में उसने
यहूदिया और येरूशलेम को ऊंचे स्थानों पर बनाई वेदियों,
अशेरा देवी की खोदी हुई और ढाली हुई मूर्तियों को हटाकर
शुद्ध करना शुरू कर दिया.

4 उन्होंने राजा की उपस्थिति ही में बाल देवताओं की वेदियों,
धूप वेदियों को, जो उनसे ऊंचे पर थी, काट डालीं. उसने
अशेरा की खोदी हुई और ढाली गई मूर्तियों को चूर-चूर कर
पीस डाला और उस बुकनी को उन लोगों की कब्र पर छिड़क
दिया, जो इनके लिए बलि चढ़ाते रहे थे.

5 इसके बाद उसने बाल-अशेराह के पुरोहितों की अस्थियां
इन्हीं वेदियों पर जलाकर यहूदिया और येरूशलेम को शुद्ध
कर दिया.

6 मनश्शेह, एफ्राईम शिमओन में भी, यहां कि नफताली और
उसके पास के क्षेत्रों में, उसने वेदियां गिरा दीं,

7 अशेरा की खोदी हुई मूर्तियों को कूटकर उनका चूरा बना
दिया. उसने सारे इस्राएल देश की सभी धूप वेदियों को
काटकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया. यह करके वह येरूशलेम
लौट गया.

8 उसके शासनकाल के अट्ठारहवें साल में जब उसने सारे देश
और भवन को शुद्ध कर लिया, उसने अज़लियाह के पुत्र
शापान और नगर अध्यक्ष मआसेइयाह और अभिलेखक
यहोआहाज़ के पुत्र योआह को याहवेह अपने परमेश्वर के
भवन की मरम्मत की जवाबदारी सौंपी.

9 उन्होंने महापुरोहित हिलकियाह से भेंट की और परमेश्वर के
भवन में लाई गई धनराशि उन्हें सौप दी, जो मनश्शेह, एफ्राईम
और इस्राएल के भाग से और सारे यहूदिया बिन्यामिन और
येरूशलेम वासियों से लेवियों और द्वारपालों द्वारा इकट्ठा की
गई थी.

10 इसके बाद उन्होंने यह धन उन्हें सौंप दिया, जिनके ऊपर
याहवेह के भवन के बनाने की जवाबदारी थी. उन्होंने यह धन
उन्हें दे दिया, जो याहवेह के भवन को दोबारा बनाने और
मरम्मत का काम करते थे.

2 Chronicles 34:1

11 इन्होंने यह धन बढ़ई और राजमिस्त्रियों को दे दिया कि वे
इससे संवारे हुए पत्थर और भवन की उन बल्लियों के लिए नई
लकड़ी ले आएं, जो रख रखाव के बिना टूट-फूट चुकी थी,
क्योंकि यहूदिया के राजाओं ने इनको नष्ट ही कर दिया था.

12 अधिकारियों की देखरेख में इन शिल्पियों ने विश्वासयोग्यता
से अपनी जवाबदारी पूरी की, मेरारी के पुत्र लेवी याहाथ और
ओबदयाह, कोहाथ के परिवार से ज़करयाह और मेशुल्लाम
अधिकारी भी थे और वे सभी श्रेणी के कामों को देखते थे कुछ
लेवी लेखक कुछ अधिकारी और कुछ द्वारपाल थे.

14 जब वे याहवेह के भवन में लाया गया धन बाहर ला रहे थे,
पुरोहित हिलकियाह को मोशेह द्वारा सौंपी गई याहवेह की
व्यवस्था की पुस्तक मिली.

15 यह देख हिलकियाह ने लेखक शापान से कहा, "याहवेह के
भवन में मुझे व्यवस्था की पुस्तक मिली है." हिलकियाह ने
पुस्तक शापान को सौंप दी.

16 शापान ने पुस्तक को राजा के सामने लाते हुए उसे कहा:
"जो काम आपके सेवकों को सौंपा गया था, उसे वे कर रहे हैं.

17 याहवेह के भवन में मिला सारा धन उन्होंने अधिकारियों
और कर्मचारियों को दे दिया है."

18 इसके अलावा लेखक शापान ने राजा को सूचित किया,
"पुरोहित हिलकियाह ने मुझे एक पुस्तक दी है." तब शापान
ने राजा के सामने उस पुस्तक में से पढ़ा.

19 जब राजा ने व्यवस्था के शब्द सुने, उसने अपने वस्त्र फाड़
दिए.

20 राजा ने हिलकियाह, शापान के पुत्र अहीकाम, मीकाह के
पुत्र अबदोन, लेखक शापान और राजा के सेवक असाइयाह
को आदेश दिया:

21 "जाओ, मेरे लिए, इस्राएल और यहूदिया की बाकी प्रजा की
ओर से याहवेह से यह मालूम करो कि वह पुस्तक जो मिली
है, उसका मतलब क्या है, क्योंकि भयंकर है हमारे लिए
ठहराया गया याहवेह का क्रोध, इसलिये है कि हमारे पूर्वजों ने
इसमें लिखी याहवेह की सारी शिक्षाओं का पालन नहीं किया
है."

22 तब हिलकियाह और वे, जिन्हें राजा द्वारा आदेश दिया गया
था, नबिया हुलदाह से भेंट करने गए. वह वस्त्रालय के रखवाले
शल्लूम की पत्नी थी. शल्लूम तोखात का पुत्र, हस्राह का पोता
था. हुलदाह का घर येरूशलेम के नए बने हुए भाग में था.
उन्होंने उसके सामने यह बात रखी.

23 हुलदा ने उन्हें उत्तर दिया, "याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर
का संदेश यह है: 'जिस व्यक्ति ने तुम्हें मुझसे मिलने के लिए
भेजा है, उससे यह कहना:

24 याहवेह का वचन यह है, "यह देखना, मैं इस स्थान पर और
इसके निवासियों पर विपत्ति भेज रहा हूं. हां, वे सारे शाप,
जिनका वर्णन यहूदिया प्रदेश के राजा के सम्मुख में पढ़ी गई
इस पुस्तक में किया गया है.

25 इसलिये कि उन्होंने मुझे भुला दिया है और विदेशी देवताओं
के सामने धूप जलाया है, कि वे मेरे क्रोध को अपनी सभी हाथों
से बनाई हुई मूर्तियों के द्वारा भड़का दें. तब इस स्थान पर मेरा
क्रोध उंडेला जाएगा और याद रखना, यह शांत नहीं होगा." '

26 मगर यहूदिया के राजा, जिसने, तुम्हें मेरे पास भेजा है, कि
मैं याहवेह से उनकी इच्छा पता करूं, उससे तुम यह कहना:
'उन बातों के बारे में, जो तुमने सुनी है, इस्राएल के राजा को
याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का संदेश यह है:

27 इसलिये कि तुम्हारा हृदय दीन था और तुमने जब इस स्थान
के विरुद्ध और इसके निवासियों के विरुद्ध परमेश्वर के संदेश
को सुनकर अपने आपको विनीत बना लिया और तुम मेरे
सामने नम्र हो गए, तुमने अपने कपड़े फाड़ दिए और मेरे
सामने रोते रहे, मैंने वास्तव में तुम्हारी सुन ली है. यह याहवेह
ने कहा है.

28 इसलिये सुनो, मैं तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों में मिला दूंगा.
शान्तिपूर्ण स्थिति में तुम्हारा अंतिम संस्कार होगा. इस स्थान
पर जो बुराई मेरे द्वारा भेजी जाएगी, उसे तुम्हारी आंखें न
देखेंगी.' " यह संदेश उन्होंने राजा को जा सुनाया.

29 इसके बाद राजा ने यहूदिया और येरूशलेम के पुरनियों
को बुलाकर उन्हें इकट्ठा किया.

30 राजा याहवेह के भवन को गया, उसके साथ यहूदिया और
येरूशलेम के सभी पुरुष, पुरोहित और लेवी और साधारण से
लेकर विशेष लोग भी थे. उनके सामने उसने वाचा की पुस्तक
जो याहवेह के भवन में पाई गई थी, की सारी बातें पढ़ीं, जिसे
सभी ने सुना.

31 तब राजा अपने स्थान पर खड़ा हुआ और याहवेह के सामने
यह वाचा बांधी कि वह याहवेह का ही अनुसरण करेगा, उनके
आदेशों, उनकी चेतावनियों और उनकी विधियों का पालन
अपने पूरे हृदय और पूरे प्राणों से करेगा, कि वह इस पुस्तक
में लिखित वाचा का पालन कर सके.

32 इसके अलावा उसने वहां उपस्थित येरूशलेम और
बिन्यामिन वासियों से भी शपथ ली कि वे भी उसके साथ इसमें
शामिल होंगे. तब येरूशलेम वासियों ने परमेश्वर की वाचा के
अनुसार ही पालन किया-अपने पूर्वजों के परमेश्वर की वाचा
के अनुसार.

33 योशियाह ने इस्राएल के वंशजों के क्षेत्रों से सभी घृणित
वस्तुएं हटा दी और इस्राएल में उपस्थित सभी को याहवेह
उनके परमेश्वर की ही वंदना करने के लिए प्रेरित किया.
योशियाह के पूरे जीवनकाल में वे अपने पूर्वजों के परमेश्वर
याहवेह का अनुसरण करते रहने से भटके नहीं.

2 Chronicles 35:1

1 तब योशियाह ने येरूशलेम में याहवेह के लिए फ़सह उत्सव
मनाया. पहले महीने के चौदहवें दिन उन्होंने फ़सह पशुओं का
वध किया.

2 उसने पुरोहितों को उनके पदों पर ठहराया और उन्हें
याहवेह के भवन संबंधी सेवा के लिए प्रोत्साहित भी किया.

3 सारे इस्राएल में शिक्षा देने के लिए ठहराए गए लेवियों को,
जो याहवेह के लिए अलग किए हुए थे, राजा ने आदेश दिया:
“उस पवित्र संदूक को इस्राएल के राजा दावीद के पुत्र
शलोमोन द्वारा बनवाए याहवेह के घर में प्रतिष्ठित कर दो. अब
यह तुम्हारे कांधों के लिए बोझ नहीं रहेगा. अब आप लोग
याहवेह अपने परमेश्वर और उनकी प्रजा इस्राएल की सेवा की
ओर ध्यान लगाइए.

4 स्वयं को अपने-अपने विभागों में कुलों के अनुसार इस्राएल
के राजा दावीद और उनके पुत्र शलोमोन के लिखित निर्देशों
के अनुसार इकट्ठा कर लीजिए.

5 “इसके अलावा पवित्र स्थान जनसाधारण के कुलों के भागों
के अनुसार खड़े हो जाइए, लेवी भी कुलों के भागों के अनुसार
खड़े हो जाइए.

6 अब फ़सह के लिए ठहराए गए पशु वध किए जाएं. स्वयं को
शुद्ध कीजिए और अपने भाई-बंधुओं को मोशेह द्वारा सौंपे गए
याहवेह के आदेश को पूरा करने के लिए तैयार कीजिए.”

7 खुद योशियाह ने लोगों के लिए, जितने वहां उपस्थित थे,
मेमनों का समूह और बकरी के बच्चे दान में दिए कि वे फ़सह
के लिए इस्तेमाल हो. इनकी कुल संख्या हो गई थी तीस हज़ार
और तीन हज़ार बछड़े. ये सभी राजा की संपत्ति में से दिए गए
थे.

8 राजा के अधिकारियों ने भी लोगों, पुरोहितों और लेवियों के
लिए अपनी इच्छा से दान दिया. परमेश्वर के भवन के
अधिकारी हिलकियाह, ज़करयाह और यहीएल ने पुरोहितों
को फ़सह का बलिदान के लिए भेड़ों और बकरियों के दो
हजार छः सौ और तीन सौ बछड़े दान में दिए.

9 इनके अलावा लेवियों के अधिकारी केनानियाह, नेथानेल,
उसके भाई, हशाबियाह, येइएल और योज़ाबाद ने फ़सह बलि
के लिए लेवियों को पांच हज़ार मेमने और पांच सौ बछड़े दान
में दिए.

10 तब राजा के आदेश के अनुसार फ़सह की तैयारी पूरी हो
गई. पुरोहित अपने निर्धारित स्थान पर खड़े थे और लेवी अपने
विभागों के अनुसार.

11 उन्होंने फ़सह के लिए ठहराए गए पशुओं का वध करना
शुरू किया. पुरोहित उनके द्वारा इकट्ठा हुआ लहू लेकर
छिड़काव कर रहे थे और लेवी पशु-शवों की खाल उतार रहे
थे.

12 तब उन्होंने होमबलियों को अलग रख दिया, कि इन्हें लोगों
में कुलों के अनुसार बांट दिया जाए, कि वे इसे याहवेह को पेश
कर सकें, जैसा मोशेह की पुस्तक में लिखा है.

13 तब उन्होंने फ़सह पशुओं को आग पर नियम के अनुसार
भुना और पवित्र भेंटों को विभिन्न बर्तनों में उबाल लिया और
जल्दी ही सभी लोगों को परोस दिया.

14 इसके बाद उन्होंने अपने लिए और पुरोहितों के लिए भी
तैयारी की, क्योंकि अहरोन के वंशज पुरोहित रात होने तक
होमबलि और चर्बी चढ़ा रहे थे. इसलिये लेवियों को खुद अपने
लिए और पुरोहितों के लिए जो अहरोन के वंशज थे, तैयारी
करनी पड़ी.

15 दावीद, आसफ, हेमान और राजा के दर्शी यदूथून द्वारा दिए
गए निर्देश के अनुसार, आसफ के वंशज गायक भी अपने-
अपने ठहराए गए स्थानों पर खड़े हुए थे. द्वारपालों को द्वार
छोड़कर जाना ज़रूरी नहीं था, क्योंकि आवश्यक तैयारी
उनके भाई-बन्धु लेवियों ने उनके लिए पहले ही कर ली थी.

16 तब उस दिन राजा योशियाह के आदेश के अनुसार याहवेह
की आराधना के लिए, फ़सह उत्सव मनाने और याहवेह की
वेदी पर होमबलि चढ़ाने के लिए सभी कुछ तैयार पाया गया.

17 इस प्रकार इस अवसर पर वहां उपस्थित इस्राएल वंशजों
ने फ़सह उत्सव और खमीर रहित रोटी का उत्सव मनाया.

18 भविष्यद्वक्ता शमुएल के समय से अब तक इस्राएल में
फ़सह उत्सव का ऐसा समारोह नहीं मनाया गया था और न ही
इस्राएल के किसी भी राजा ने पुरोहितों, लेवियों, सारे यहूदिया,
उपस्थित इस्राएल और येरूशलेम वासियों के साथ इस तरह
का समारोह कभी नहीं मनाया था, जैसे योशियाह ने मनाया
था.

19 यह फ़सह का उत्सव योशियाह के शासनकाल के
अठारहवें साल में मनाया गया था.

20 फिर, यह सब होने के बाद, जब योशियाह मंदिर में सब
कुछ तैयार कर चुका, युद्ध की इच्छा से मिस्र का राजा नेको
फरात नदी के तट पर कर्कमीश नामक स्थान तक आ गया.
योशियाह भी उसका सामना करने वहां पहुंचा.

21 मगर नेको ने उसके लिए इस संदेश के साथ दूत भेजे,
“यहूदिया के राजा, आपसे मेरी कोई शत्रुता नहीं है. इस समय
मैं आपसे युद्ध करने यहां नहीं आया हूं, बल्कि मैं उस परिवार
के विरुद्ध आया हूं, जिससे मेरा विवाद है और परमेश्वर ने ही
मुझे पूर्ति का आदेश दिया है. अपने ही हित में आप परमेश्वर
के इस काम से अलग रहिए, कहीं ऐसा न हो कि वह आपको
नाश करे, क्योंकि परमेश्वर यहां मेरी ओर हैं.”

22 फिर भी योशियाह ने उसकी एक न सुनी. बल्कि उससे युद्ध
करने के उद्देश्य से उसने भेष बदल लिया कि वह उससे युद्ध
कर सके. वह नेको के द्वारा दिए परमेश्वर के संदेश को ठुकरा
कर उससे युद्ध करने के उद्देश्य से मगिद्दो के मैदान में आ
गया.

23 राजा योशियाह मिस्री धनुर्धारियों के बाणों का निशाना हो
गया. राजा ने अपने सेवक को आदेश दिया, “मुझे यहां से ले
चलो; मुझे गहरी चोट लगी है.”

24 तब उसके सेवकों ने उसे उस रथ से निकालकर उसके ही
एक दूसरे रथ में बैठा दिया और उसे येरूशलेम ले गये, जहां
उसकी मृत्यु हो गई. उसे उसके पूर्वजों की कब्र में रखा गया.
योशियाह के लिए सारे यहूदिया और येरूशलेम ने विलाप
किया.

25 योशियाह के शोक में येरेमियाह ने एक विलापगीत प्रस्तुत
किया. आज भी पुरुष और स्त्री गायक अपने शोक गीत में
योशियाह का उल्लेख करते हैं. इस्राएल में इसे गाने की रीति
हो गई है. इसे विलापगीत की पुस्तक में शामिल किया गया है.

26 योशियाह के बाकी कामों का वर्णन और याहवेह की
व्यवस्था के प्रति उसके पहले के समर्पण द्वारा किए गए सुधारों
का वर्णन,

27 शुरू से अंत तक उसके सभी कामों का वर्णन इस्राएल और
यहूदिया के राजा नामक पुस्तक में किया गया है.

2 Chronicles 36:1

1 यहोआहाज़, येहोआकिम और येहोआकिन का शासन: तब
देश की प्रजा ने येरूशलेम में योशियाह के पुत्र यहोआहाज़
को उसके पिता योशियाह की जगह पर राजा होने के लिए
चुना.

2 शासन शुरू करते समय यहोआहाज़ की उम्र तेईस साल थी.
येरूशलेम में उसने तीन महीने शासन किया.

2 Chronicles 36:1

3 तब मिस्र के राजा ने उसे येरूशलेम में गद्दी से हटा दिया
और देश पर साढ़े तीन हज़ार किलो चांदी और पैंतीस किलो
सोने का कर लगा दिया.

4 तब मिस्र के राजा ने उसके भाई एलियाकिम को यहूदिया
और येरूशलेम का राजा बना दिया और उसका नाम
बदलकर यहोइयाकिम रख दिया. मगर उसके भाई
यहोआहाज़ को वह अपने साथ मिस्र ले गया.

5 यहोइयाकिम की उम्र पच्चीस साल की थी, जब वह राजा
बनाया गया. उसने येरूशलेम में ग्यारह साल शासन किया.
उसने याहवेह अपने परमेश्वर की दृष्टि में बुरा किया.

6 बाबेल के राजा नबूकदनेज़्ज़र ने हमला कर दिया और उसे
कांसे की बेड़ियों से बांधकर बाबेल ले गया.

7 इसके अलावा नबूकदनेज़्ज़र ने याहवेह के भवन की कुछ
वस्तुएं लेकर बाबेल में अपने मंदिर में रख दीं.

8 यहोइयाकिम द्वारा किए गए बाकी काम, उसके द्वारा किए
गए घृणित काम और उसके सारे दोषों का वर्णन इस्राएल और
यहूदिया के राजा नामक पुस्तक में किया गया है. उसके स्थान
पर उसका पुत्र यहोइयाखिन राजा बन गया.

9 राजा बनने के समय यहोइयाखिन की उम्र आठ साल की
थी. येरूशलेम में उसने तीन महीने और दस दिन शासन
किया. उसने वही किया, जो याहवेह की दृष्टि में बुरा है.

10 साल खत्म होते-होते वसन्त ऋतु में राजा नबूकदनेज़्ज़र ने
उसे याहवेह के भवन की कीमती वस्तुओं के साथ बाबेल
बुलवा लिया और उसके संबंधी सीदकियाहू को यहूदिया और
येरूशलेम पर राजा ठहरा दिया.

11 जब सीदकियाहू ने शासन शुरू किया उसकी उम्र इक्कीस
साल थी. येरूशलेम में उसने ग्यारह साल शासन किया.

12 उसने वह किया, जो याहवेह उसके परमेश्वर की दृष्टि में बुरा
है. उसने याहवेह के अभिवक्ता भविष्यद्वक्ता येरेमियाह के
सामने अपने आपको नम्र नहीं किया.

13 उसने राजा नबूकदनेज़्ज़र के विरुद्ध विद्रोह कर दिया,
जिसने उसे सच्चा रहने के लिए परमेश्वर की शपथ दिलाई थी.
वह हठी हो गया और उसका हृदय कठोर हो गया
फलस्वरूप वह याहवेह इस्राएल के परमेश्वर की ओर न हुआ.

14 इसके अलावा पुरोहितों के अधिकारी और प्रजा और दूसरे
जनताओं की घृणित प्रथाओं का पालन करते हुए याहवेह से
विश्वासघात किया. येरूशलेम में पवित्र याहवेह के भवन को
उन्होंने अशुद्ध कर दिया था.

15 अपनी प्रजा के प्रति और अपने घर के प्रति अपनी दया के
कारण याहवेह उनके पूर्वजों के परमेश्वर ने कई बार अपने
दूतों के द्वारा उनके लिए अपना संदेश भेजा;

16 मगर वे हमेशा अपने ही परमेश्वर के संदेशवाहकों का
मज़ाक उड़ाते रहे, उनके संदेश का तिरस्कार करते रहे और
परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं को मज़ाक का पात्र बना दिया.
यह तब तक होता रहा जब तक याहवेह का क्रोध उनकी प्रजा
पर टूट न पड़ा, जब तक परिस्थिति काबू से बाहर न हो गई.

17 तब परमेश्वर उनके विरुद्ध कलदियों के राजा को ले आए.
उसने उनके युवाओं का उन्हीं के पवित्र स्थान में वध कर दिया.
उसने न तो युवाओं पर कृपा दिखाई और न कुंवारी कन्याओं
पर, न बूढ़ों पर न कमज़ोरों पर. परमेश्वर ने सभी को
नबूकदनेज़्ज़र के अधीन कर दिया.

18 वह परमेश्वर के भवन की छोटी-बड़ी सभी वस्तुएं, याहवेह
के भवन के खजाने और राजा और उसके साथी शासकों के
भी खजाने, सभी कुछ अपने साथ बाबेल ले गया.

19 तब उन्होंने परमेश्वर के भवन को भस्म कर दिया. उन्होंने
येरूशलेम की शहरपनाह तोड़ डाली, उसके सारे मजबूत
भवनों को आग लगाकर नाश कर दिया, सभी कीमती वस्तुओं
को ध्वस्त कर दिया.

20 उन सभी को, जो तलवार के वार से बच निकले थे, उन्हें वह
अपने साथ बाबेल ले गया. ये सभी उस समय तक उसके और
उसकी संतान के सेवक तब तक बने रहे जब तक फारस का
शासन चलता रहा.

2 Chronicles 36:1

21 यह भविष्यद्वक्ता येरेमियाह द्वारा की गई याहवेह की
भविष्यवाणी पूरी हुई थी, कि भूमि उन सत्तर सालों का शब्बाथ
प्राप्त कर सके, जिनसे इसे दूर रखा गया था.

22 फारस के राजा कोरेश के शासन के पहले साल में
येरेमियाह द्वारा कही गई याहवेह की भविष्यवाणी पूरी करने
के उद्देश्य से याहवेह ने फारस के राजा की आत्मा को उभारा.
फलस्वरूप उसने सभी राज्य में यह लिखित घोषणा करवा
दी:

23 फारस के राजा कोरेश की ओर से यह घोषणा की जा रही
है: " 'स्वर्ग के परमेश्वर याहवेह ने मुझे पृथ्वी के सारे राज्यों का
अधिकार सौंपा है. उन्हीं ने मुझे उनके लिए यहूदिया के
येरूशलेम में एक भवन बनाने के लिए चुना है. तुम सब में से
जो कोई उनकी प्रजा में से है, याहवेह उसका परमेश्वर उसके
साथ रहे, उसे वहां जाने दिया जाए.' "